



नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
बैद्यजीवन	काव्यस्थ धर्म निरु	गीतगोविन्द	शिष्टबोध
श्रीमद्भिसंग्रहकल्प	तथा छोटा	कथासत्यनारायण	पत्र हितोचिरीति
बली	मथुरा सभा	परमार्थ सार	पत्र दीपिका
अमृतसागर बहा	ज्योतिष	शाङ्गभरसंहिता	विद्या चक्र
अमृतसागर छोटा	सूरसे गंगापति	पाराशरी सटीक	विद्याकुर
इलासुल मुर्बा	सुहृत् दीपिका	श्रीमद्बोधसटीक	पदार्थ विद्यासार
वैष्णवोत्सव	सुहृत् चिन्तामणिस	लघुजातक	पदार्थज्ञान विदुष
हिल्लगन	सुहृत् दीपक	सद्व्यपदेशिका	भोजन व्यवहार
ज्योतिष भाषा	सहज्जातक सटीक	साधुद्विक	राजनीति
जातक चन्द्रिका	जातका लंकार	गरुड पुराण	भाषाकथुव्याकरणा
जातका संकार	जातका भरणा	रामविवाहोत्सव	१ भाग व २ भाग
देवशा भरणा	होरा भकरन्द	सरिष्टे तात्वी	भाषा तत्त्व दीपिका
ज्ञान खरोदय	सुहृत् मार्गगड सयिक	नकी पुस्तकें	भाषा चन्द्रोदय
रमलखार	संस्कृत डई दीका	संस्कार	भूगोल तत्त्व
रमलखोरत	मनुस्मृति	अनुपाद १ भाग	भूगोल रथरा
मनुजाल	विशुद्धीत	तथा २ भाग	इतिहासतिमिरना-
संस्कृत की पुस्तकें	अहिम्न स्तोत्र	तथा ३ भाग	तक १ भाग व २ भाग
लघुकीकुरी	ब्रतार्क	आत्तराव	तथा ३ भाग
सिद्धान्त चन्द्रिका	याज्ञवल्क्यस्मृति	नागरी केथी	अवध देशीय भूगोल
भाषा तत्त्व प्रकाश	संस्कृत भाषा	मराठा भाषा केथी	इंग्लिस्तान का इति-
पञ्च महायज्ञ	रीका	१ भाग व २ भाग	हास
निर्णय सिन्धु	अमरकोष तीनों	तथा केथी फार-	हितो पत्रिका
कर्म विपाक	काराड	सी नागरी	बाला भूखरा
संग्रह शिरोमणि	याज्ञवल्क्यस्मृति	हरफ सुफर्दत	पद्य संग्रह
भगवद्गीता पञ्चम	सन्ध्या पढ़ति	अक्षरारम्भ	भाषा काव्य संग्रह
दुर्गापाठ मूल	ब्रतार्क	पराशर भाषिका १	यचित्तरत्नाकर १ भाग
दुर्गापाठ सटीक	भगवद्गीता टीका	भाग व २ भाग	तथा २ भाग
विष्णु भागवत	हरिश्चन्द्र लाल	सूरजपुर की कहानी	संगल बोध
कथा भक्त द्वितीय	भगवद्गीता टीका	धर्मसिंह का इतिहास	शंक प्रकाश
अपराध भजन स्तोत्र	आनन्दगिरि	शिक्षावली	

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
वाराह पुराण	कथा धिया	ब्रह्मसार	गोकार्मीमाहात्म्य
भविष्योत्तरपुराण	विजयमुक्तावली	शिवसिंहसरोज	श्रीगोपालसहस्रनाम
स्कन्धपुराण	उपदेशचन्द्रिका	भक्तमाल	कथासुत्तनारायण
वाल्मीकीयरामायण	मंगलविनोद	रत्नसभा	सरीक
अद्भुतरामायण	विजयचन्द्रिका	विक्रमविलास	हनुमानबाहुक
सुन्दरविलास	सिद्धान्तसङ्ग्रह	बैतालपच्चीसी	जनकपच्चीसी
शुकनीति	रामविनयशतक	सिंहासनबत्तीसी	हरिहरमगुरागिर्नु-
रसवृष्टिवरसचन्द्रोदय	अनेकार्थ	पद्मावतीखण्ड	रापरावली
सुरामाचरित्र	छन्दोर्गावपिङ्गल	शुकवहन्तरी	बनयाचा
कथागीतावली	रसरज	बकावलीसुमन	कायस्थवर्गनिर्माय
श्रीअनुरागरस	सत्सईमूल	बहारदरवेष्टा	विहारकल्याण
सौदागरलीला	सत्सईसदीक	क्रिस्तायातनताई	समरविहारकल्याण
गसवीला	सभाविलास	अपूर्वकथा	कायभाष्य
नारक	युगलविलास	क्रिस्तायातनताई	लक्ष्मीसुखचरीराम
प्रबोधचन्द्रोदय	तुलसीदासार्थप्रकाश	सहस्ररत्ननिचरित्र	हरली
रामाभिषेक	भजनावली	रविचन्द्रकाश्मिहा	अक्षरवली
आनन्दरघुनन्दन	ध्रुमारण	सीताहरण	स्वयम्बोध
धर्मजातकनारक	चित्रचन्द्रिका	हलीखिलास	ज्ञानचालीरी
हनुमानक	बारहमासावतरेवच	क्रिस्ताभईऔरत	दोहावली
वैदान्त	मनोहरलहरी	रागीतप्रह्लाद	बालाबोध
योगवाशिष्ठ	गंगासहरी	सुतफुक्राति	विद्याधीकीप्रथम
आनन्दाऽमृतवर्षिणी	यमुनालहरी	शमिश्चरकीकथा	पुस्तक
सौख्यतन्त्रकोमुदी	जगद्विनोद	ज्ञानमाला	किताबजन्वी
काव्य	अंगारबत्तीसी	गोपीचन्दभरतरी	रागितकामधेनु
सूरसागर	नवीनसंग्रह	कथाश्रीगंगाजी	लीलावती
कथासागर	रागी	अवधयाचा	परवारिणीकीपुस्तक
विश्रामसागर	रागप्रकाश	भरतरीगीत	कधभाग
प्रेमसागर	लावनी	दानलीलाबलागली	वेष्टाकाभाष्य
जनविलासबड़ा	क्रिस्तावगौरह	दोहावलीरत्नावली	तिथराह
जनविलासछोटा	तानार्थनौसप्रह्लादली	रसायनप्रकाश	अमरविनोद

कृत्वा मनसि केशवं ॥ १६१ ॥

श्री. तौ करोड़ कल्याण के पाप सम-  
स्म हो जावैं । हे अर्जुन पीपल के  
वृक्ष के पास मन में निश्चय करके ॥

मू. पठेन्नाम सहस्रं तु गवां  
कीटिफलं लभेत् । शिवा-  
लये पठेन्नित्यं तु लसीव-  
न संस्थितः ॥ १६२ ॥

श्री. यह सहस्र नाम पढ़ै तो करोड़  
गोदान का फल प्राप्त हो । और जो  
शिवालय में नित्य पढ़ै और तुल-  
सी के वन में स्थित होकर ॥ १६२ ॥

मू. नरो मुक्तिमवाप्नोति  
चक्रपाणिर्वचो यथा । ब्रह्म-  
हत्यादिकं पापं सर्वं पापं  
विनश्यति ॥ १६३ ॥

श्री. तो वह मनुष्य मुक्तिको प्राप्त  
हो चक्रपाणि भगवान् का वचन है  
ब्रह्महत्या आदि जो पाप हैं वह स-  
ब उसके नाश हो जावैं ॥ १६३ ॥

इति श्री विष्णु सहस्र-  
नाम स्तोत्रं समाप्तं ।

करो तौ अस्स केशवंग -

१५१  
तु तो करोड़ कल्याण के पाप सम-  
स्म हो जावैं । हे अर्जुन पीपल के  
वृक्ष के पास मन में निश्चय करके ॥

१५२  
पठेन्नाम सहस्रं तु गवां  
कीटिफलं लभेत् । शिवा-  
लये पठेन्नित्यं तु लसीव-  
न संस्थितः ॥ १६२ ॥

१५३  
यह सहस्र नाम पढ़ै तो करोड़  
गोदान का फल प्राप्त हो । और जो  
शिवालय में नित्य पढ़ै और तुल-  
सी के वन में स्थित होकर ॥ १६२ ॥

१५४  
नरो मुक्तिमवाप्नोति  
चक्रपाणिर्वचो यथा । ब्रह्म-  
हत्यादिकं पापं सर्वं पापं  
विनश्यति ॥ १६३ ॥

१५५  
तो वह मनुष्य मुक्तिको प्राप्त  
हो चक्रपाणि भगवान् का वचन है  
ब्रह्महत्या आदि जो पाप हैं वह स-  
ब उसके नाश हो जावैं ॥ १६३ ॥

इति श्री विष्णु सहस्र-  
नाम स्तोत्रं समाप्तं ।



मू. येन ध्यातं श्रुतं येन ये  
नायं पठितः स्तवः । दत्ता-  
नि सर्व दानानि सुराः स-  
र्वैः समर्चिताः ॥ १५६ ॥

टी. जो कोई इसको ध्यान क-  
रता है और जो सुनता है और  
जो पढ़ता है । वह मानौ सब दान  
न दे चुका और सब देवताओं  
की पूजा कर चुका ॥ १५६ ॥

मू. इह लोके परे वापि न  
भयं विद्यते कचित् । ना-  
म्नां सहस्रं यो धीते द्वाद-  
श्यां मम सन्निधौ ॥ १६० ॥

टी. इस लोक में और परलोक  
में उसको कभी भय नहीं है ।  
भगवान् कहते हैं कि जो इस  
सहस्र नाम को द्वादशी के दि-  
न हमारे पास पढ़े तो ॥ १६० ॥

मू. स निर्दहति पापानि  
कल्पकोटि शतानि च ।  
अश्वत्थसन्निधौ पार्थ

اشلوک ۱۵۹  
یہ نہ دھیاننگ شرننگ میں  
یہ ناینگ پڑھتہ استوہ - دتتان  
دانان سمر اہ سمر بے سمر چناہ -

ٹیکا ۱۵۹  
جو کوئی اس شروت کا دھیان کرتا ہی اور جو  
ستنا ہی اور جو پڑھتا ہی - وہ گویا سب دان  
دے چکا اور سب دیوتوں کی پوجا کر چکا -

اشلوک ۱۶۰  
اہ لوکے پرے باپ نہ بھینک  
پریتے کوٹ - نامنگ سنگ  
یو دھیتے دو او شیاگ تم سندھو -

ٹیکا ۱۶۰  
اس لوک اور پرلوک میں اسکو کبھی ڈرنیکا  
بھگوان کہتے ہیں کہ اگر اس ستر نام کو ہمارے  
پاس دوا دشی کے دن پڑھے تو -

اشلوک ۱۶۱  
سنر ویت یا پان کلپ کوٹ  
شیاخ - استوتم سندھو پارتھ

सोई फल इस स्तोत्र के पाठक-  
ले वाले को प्राप्त होगा ॥१५६॥

मू० योनरः पठेत नित्यं वि-  
कालं केशवालये । विका-  
लमेक कालं वा कूरं सर्वं  
ज्यपोहति ॥१५७॥ ॥ ॥

टी० भगवान् के मन्दिर में जा-  
कर जो मनुष्य इसको प्रातः म-  
ध्यान्ह सन्ध्या तीनों काल पढ़े-  
अथवा दोही काल अथवा ए-  
कही काल पाठ करे तो जो दुःख सं-  
सार के हैं वह सब दूर हो जाय ॥१५७॥

मू० दहन्ते रिपवस्तस्य सौ-  
म्याः सर्वे सदा ग्रहाः । वि-  
लीयन्ते च पापानि सत्त्वे-  
ह्यस्मिन् कीर्तिते ॥१५८॥

टी० इसके सब शत्रु मर स्म हो जा-  
ते हैं और सब ग्रह उस पर स-  
दा प्रसन्न रहते हैं । और उस  
के पापों का नाश हो जाता है इ-  
स स्तोत्र में यह बात कही है ॥१५८॥

वही बल प्राप्त होता है इस شخص को  
जो इस स्तोत्र को पढ़ता है -

१५६ अश्लोक

युवने पृथिवीं शिङ्गं त्रिकालं

किंशुवायै - दुःखालं शिङ्गं

कालं बागुं रङ्गं त्रिकालं शिङ्गं

१५६ शिङ्गा

जो آدمी जल्दो न के मन्दिर में जाकर शिङ्ग  
दोहरा और शाम को तिनो नोंदत हो  
वक्त या एक ही वक्त इसको पढ़े तो जो  
दुःख संसार के हैं वह सब दूर हो जाय -

१५७ अश्लोक

द्विजन्ते रपुस्तस्यै सुमियाहं

सं अग्रहा - बली शिङ्गं च पापानि

स्तुतिं शिङ्गं प्रकीर्तये -

१५७ शिङ्गा

और इसके सब शत्रु नाश हो जाय और

ग्रेह अपरिशीत न हो जाय - और इसके सब

पाप नाश हो जाय यह बात इस स्तोत्र में

सर्वदेवनमस्कारः केश  
वंप्रतिगच्छति ॥ १५४ ॥

गी. जैसे आकाश से जल गिर  
कर समुद्र को जाता है। वैसे  
ही जिस देवता को कोई नम-  
स्कार करे वह भगवान् को प-  
हुँचता है ॥ १५४ ॥ १५४ ॥

मू. एष निष्कारकः पंथा  
यत्र संपूज्यते हरिः। युषं  
यंतं विजानीयाद्भोविन्द।  
रहितागमं ॥ १५५ ॥

गी. जो भगवान् की पूजा है व-  
ही राह निःकारक है। भग-  
वान् करके रहित जो पूजा है  
वह राह कुराह है ॥ १५५ ॥

मू. सर्ववेदेषु यत्पुण्यं  
सर्वतीर्थेषु यत्फलं। त-  
त्फलं समवाप्नोति सु-  
त्वादेवं जनार्दन ॥ १५६ ॥

गी. सब वेदों का जो फल है व-  
व तीर्थों का जो फल है।

سَرَب دَنُو نَمَسْكَارِ كَيْ شَوْنَك  
پَرَت پَجْهَت -

۱۵۲  
ٹیکا

جیسے آکاش سے جل گر کر سمندر کو جاتا ہے  
ویسے ہی کوئی چاہے کسی دیوتا کو نسکا  
کرتے وہ جگوان کو پہنچتا ہے۔

اشلوک ۱۵۲  
ایکیش کنگہ غنٹھا سیر سیمو جیتے  
سیرہ - گنتھنگ تگ سیرجانی  
یاد گو بندر پتہ گنگ -

۱۵۲  
ٹیکا

جگوان کی جو پوجا ہے وہی راہ ہے کائنات  
کی ہے۔ اور جو پوجا جگوان سے الگ  
ہو وہی راہ خراب ہے۔

اشلوک ۱۵۲  
سَرَب پَرَت پَجْهَت پَجْهَت  
سیر سیمو جیتے سیرجانی  
سیرہ - گنتھنگ تگ سیرجانی  
یاد گو بندر پتہ گنگ -

۱۵۲  
ٹیکا

سب پوجا جو پھیلے ہو سب پھر تھوٹا ہو جاتی ہے

वासितं भुवनत्रयं । सर्व  
भूतनिवासीनां वासुदेव  
नमोस्तुते ॥ १५२ ॥

टी. इस संसार کی جو वाسنا ہے  
اسکو ناش کرنے والے اور  
جو بادیو سب جیون میں رہتے ہیں انکو  
نمکارتے۔

सू. नमो ब्रह्मण्यदेवाय  
गोब्रह्माणहिताय च । ज  
गहिताय रुक्माय गोविं  
दाय नमोनमः ॥ १५३ ॥

टी. جو براہمن کے ماننے والے ہیں  
انکی اور جو گوروں اور براہمن  
ان کے ہیتکاری ہیں انکو نام  
سکارتے۔ جو جگت کے ہیتکاری  
ہیں اور کل سب ہیں اور ان کے  
سوامی ہیں انکو نام سکارتے ॥ ۱۵۳ ॥

सू. आकाशात्यतितंतो  
यं यथा गच्छतिसागरे ।

بھون تریگ - سرت بھوت  
نواسی نانت باسایو نموستتے

۱۵۲  
اس ہنسار کی جو باسنا ہیں انکو ناش کرنے  
والے ہیں اور تینوں بھون میں رہتے ہیں  
جو بادیو سب جیون میں رہتے ہیں انکو  
نمکارتے۔

۱۵۲  
اشلوک  
نمور مہنیہ دیو اسے گو براہمن  
بتایج - جگت و ہٹا کر  
گو بڈائے نمونہ۔

۱۵۳  
جو براہمن کے ماننے والے اور گوروں اور  
براہمن کے ہتکاری ہیں انکو نمکارتے  
جو جگت کے ہتکاری ہیں اور گوروں کے  
سوامی ہیں انکو نمکارتے۔

۱۵۴  
اشلوک  
اکاشات پتنگ تریگ  
یتھا پچھت ساگرے۔



नयनपद्म के पत्र से भी हैं विशा-  
ल नेत्र तुम्हारे । जो भक्त हैं और  
जो स्तुति करें उनकी रक्षा क-  
री हे जनार्दन भगवान् ॥ १४८ ॥

मू. श्री भगवानुवाच ॥  
यो मां नाम सहस्रेण स्तो-  
तुमिच्छति पाण्डव । सो  
हमेकेन श्लोकेन स्तुत-  
एव न संशयः ॥ १४९ ॥

टी. श्री भगवान् बोले ॥ कि  
जो पुरुष मेरी सहस्र नाम करके  
स्तुति करने की इच्छा करते हैं  
। सो एक ही श्लोक के पढ़ने में  
वही स्तुति हो जाती है ॥ १४९ ॥

मू. नमोऽस्त्वनंताय सह-  
स्रमूर्तये सहस्रपाशक्षि-  
शिरोरुवाहवे । सहस्रना-  
म्ने पुरुषाय शास्वते स-  
हस्रकोटी युगधारिणे  
नमः ॥ १५० ॥ १५० ॥

टी. जो भगवान् अनन्त हैं और

कल के पत्र से भी आरुह्य सन्दर्भित  
तहार - जो तजारी बकत या अस्त  
करिन अली मन्त्र जहारो बहान  
अश्लोक

श्री भगवानुवाच - यो मां नाम सहस्र-  
स्तुत मज्जित पाण्डव - सोहस्र-  
स्तुत करिन अस्तुत अतः संशय -

सिका

श्री भगवान् ने कहा जो प्रिय भक्त  
सहस्र नाम की करने की इच्छा करते हैं तो एक  
ही श्लोक के पढ़ने में वही स्तुति  
हो जाती है -

अश्लोक

नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु  
सहस्रपाशक्षि शिरोरुवाहवे -  
सहस्रनाम्ने पुरुषाय शास्वते  
सहस्रकोटी युगधारिणे नमः

सिका

जो भगवान् अनन्त हैं और

र्तितं । पदेद्य इच्छेत्पु-  
 रुषः श्रेयः प्राप्तं सुखा-  
 निच ॥ १४६ ॥ १४६ ॥  
 टी. यह स्तुति भगवान् वि-  
 ष्णु की व्यास जी ने कही है । व-  
 ह पुरुष पद है जिसकी इच्छा क-  
 ल्या ॥ और सुख की हो ॥ १४६ ॥  
 मू. विश्वेश्वरमजं देवं ज-  
 गतः प्रभवाप्ययं । मजं  
 तियेषुष्करासनतेया-  
 न्ति पराभवं ॥ १४७ ॥  
 टी. विश्व के ईश्वर जन्म रहित  
 देव रूप जगत की उत्पत्ति और  
 नाश करने वाले हैं । जो भज-  
 ते हैं कमल नेत्र की वेतिरस-  
 कार को प्राप्त नहीं होते ॥ १४७ ॥  
 मू. अर्जुन उवाच ॥ पद्मपत्र  
 विशालाक्षपद्मनाभसुरो-  
 न्म । भक्तानामनुरक्तानां ज्ञा-  
 ता भवजनादन ॥ १४८ ॥  
 टी. अर्जुन बोले ॥ हे कमल

بسمحمد یہ اچھیت پرشہ شریعہ  
 پر اپنی سنگ سکھاچ -

سिका

۱۳۴

یہ آشتیشن بھگوان کی بیاس جی کو  
 اسکو وہ پرکھ پرکھ جو سکھ اور کلپان کی اتھا

اشلوک

۱۳۵

بشنویشو رنجناک دیوناک بکته  
 پر بھو اپنی سنگ - بھجنت یے  
 بکتر انگنگ شتہ یانت پر بھو ناگ

سिका

۱۳۶

بشنو کے ایشو رنجم رنج دیوناک بکته کی  
 آشتیشن اور ناگ کر نیوالے ہیں - جو بھجنت ہیں  
 کل نیتر بھگوان کو وہ بیخون ستر ہیں -

اشلوک

۱۳۷

ارجن اناج - پرکھ پرکھ شالاکش پرکھ  
 ناگ پرکھ پرکھ - بکته ناگ پرکھ ناگ  
 شتہ یانت پرکھ پرکھ -

سिका

۱۳۸

ارجن کہنے لگے - کہ ہے کل نیتر

मू. योगी ज्ञानं तथा सां-  
ख्यं विद्याः शिल्पादिक-  
र्मच । वेदाः शास्त्राणि  
विज्ञानमेतत्सर्वजना-  
र्हनात् ॥ १४४ ॥ १४४ ॥

टी. योग और ज्ञान और सां-  
ख्य और चौदही विद्या और  
कारीगरी । और वेद और शा-  
स्त्र और विज्ञान यह सब भग-  
वान् से पैदा हुवे ॥ १४४ ॥

मू. एको विष्णुर्महद्  
तं पृथग्भूतान्यनेकशः ।  
त्रिलोकान्व्याप्य भूता-  
त्मा भुङ्क्ते विश्वभुगव्य-  
यः ॥ १४५ ॥ १४५ ॥

टी. एक विष्णु हैं जो पञ्चभूत  
और सम्पूर्ण प्राणी । तीनों लो-  
क को व्याप्त करके भोगें हैं वि-  
श्व के भोक्ता हैं ॥ १४५ ॥

मू. इमं स्तवं भगव-  
तो विष्णोर्वासेनकी

१३५  
श्लोक  
جو گو گيا تنگ تھاسا نکھينک  
بدياه شليا و کرمج - بدياه شليا  
بگيان مے تھ سرتنگ جباروت -

۱۳۴  
شیکا  
جوگ اور گيان اور سا نکھين شياستر اور جو ديو  
اور کاریگری - اور بدياه اور شياستر اور بگيان  
یہ سب بھگوان سے پیدا ہوئے -

۱۳۵  
श्लोक  
ایکویں شتر مہر بھوتنگ پر تھک  
بھوتانیہ نیکشہ - تر لوکان بیہ  
بھوتانیہ بھکتیہ بھوتنگ بیہ -

۱۳۶  
شیکا  
ایک بیٹن ہیں جو تینوں لوک میں بیانیہ  
ہو کر پنج بھوت اور سارے پرانیوں کو بھوک  
کرتے ہیں یعنی بھوت کے بھوتنگ ہیں -

۱۳۷  
श्लोक  
अमंग अस्तुनंग बहलु  
बशुनूरियासिन सिरतनंग -



सर्वतेजोबलंधतिः। वा-  
सुदेवात्मकान्याहुः शैवं  
क्षेत्रज्ञमेव च ॥ १४१ ॥

टी. दशौ इन्द्री मनबुद्धि पराक्र-  
मतेजबलधीर्य । सबभगवा-  
न कास्व है देह और जीवा ॥ १४१ ॥

सू. सर्वागमानामाचारः  
प्रथमं परिकल्पते । आ-  
चारप्रभ बोधर्मो धर्म-  
स्य प्रभुः च्युतः ॥ १४२ ॥

टी. सब वेदों के आचार हैं । आ-  
चार से धर्म पैदा हुवे और ध-  
र्म के पति भगवान् हैं ॥ १४२ ॥

सू. ऋषयः पितरो देवाः  
महामूला निधातवः ।  
जङ्गमा जङ्गमञ्जेद ज-  
गन्नारायणोद्भव ॥ १४३ ॥

टी. ऋषि और देवता पञ्चमूत  
सातौ धातु । और स्थावर और  
जंगम यह सब जगत् नाराय-  
ण से पैदा हुवे ॥ १४३ ॥ १४३ ॥

تیمو بلنگ دهرت - با سید تو تم  
کایا مہ چھترنگ چھتر گہ میوچ

۱۳۱  
دشو اندری بن بدیم پر اگر مہیج بل میوچ  
دیہ اور میوچ سب بھگوان کا روپ ہیں -

۱۳۲  
اشلوک  
سر बागना मा चारे प्र च्छनंग प्र किते  
आ चार प्र च्छो दधर मु दधर न्छि  
प्र च्छो र च्छि -

۱۳۲  
سب سیدوں سے آچار پیدا ہوا آچار سو دھرم  
پیدا ہوا دھرم کے مالک بھگوان ہوئے -

۱۳۳  
اشلوک  
رکھیہ پیرو دیوا مہا بھوتان  
دھاتوہ - جنگل جگنگل چیدنگ  
جنگل رانیو د بھونگ -

۱۳۳  
کچھ پیرو دیوتا پنج بھوت سما تو دھات - اور  
استھا اور حکم جگت ناراین سے پیدا ہوئے -

न खोरी बुद्धि हो कियं है  
जिन्हो ने पुण्य जो भगवान्  
के भक्त हैं ॥ १३८ ॥ १३८ ॥

सू. द्यौः सचन्द्रार्कन-  
सचारु दिशि भूर्महो  
रधिः । वासुदेवस्य वी-  
र्येण विधृतानि महा-  
त्मनः ॥ १३९ ॥ १३९ ॥

टी. स्वर्गलोक चन्द्रमा सूर्य न-  
क्षत्र आकाश दिशा पृथ्वी  
समुद्र । नारायण के पराक्रम क-  
रके धारण कर सकते हैं ॥ १३९ ॥

सू. ससुरासुरगन्धर्वस-  
यक्षीरगराक्षसं । जग-  
द्वशे वर्तते दं कस्मस्य  
सचराचरं ॥ १४० ॥

टी. देवता असुरगन्धर्वस्य  
सर्प राक्षस । सम्पूर्ण जगत्  
चराचर श्री कृष्ण भगवान्  
के नश्य है ॥ १४० ॥ १४० ॥

सू. शत्रुघातिमनो बुद्धि

ब्रह्म ब्रह्मणो नृणां भवति  
ब्रह्मणो नृणां भवति  
ब्रह्मणो नृणां भवति

अश्लोक

१३९  
द्विषेत् सचन्द्रार्कन-  
क्षत्राणि दिशि भूर्महो  
रधिः । वासुदेवस्य वी-  
र्येण विधृतानि महा-  
त्मनः ॥ १३९ ॥ १३९ ॥

श्लोक

१४०  
ससुरासुरगन्धर्वस-  
यक्षीरगराक्षसं । जग-  
द्वशे वर्तते दं कस्मस्य  
सचराचरं ॥ १४० ॥

अश्लोक

१४०  
द्विषेत् सचन्द्रार्कन-  
क्षत्राणि दिशि भूर्महो  
रधिः । वासुदेवस्य वी-  
र्येण विधृतानि महा-  
त्मनः ॥ १४० ॥ १४० ॥

श्लोक

१४०  
ससुरासुरगन्धर्वस-  
यक्षीरगराक्षसं । जग-  
द्वशे वर्तते दं कस्मस्य  
सचराचरं ॥ १४० ॥

अश्लोक

१४०  
द्विषेत् सचन्द्रार्कन-  
क्षत्राणि दिशि भूर्महो  
रधिः । वासुदेवस्य वी-  
र्येण विधृतानि महा-  
त्मनः ॥ १४० ॥ १४० ॥

अशुभ को नहीं प्राप्त होंगे ।  
जन्म और मरण और बुढ़ा  
पा और व्याधि और भय उन  
को नहीं होता है ॥ १२६ ॥

मू. इमंस्तवमधीयानः  
श्रद्धाभक्ति समन्वितः  
युज्येतात्मसुखदांति  
श्रीधृति स्मृति कीर्ति  
भिः ॥ १२७ ॥ १२७ ॥

टी. इस सहस्रनाम को पढ़ता  
हुआ श्रद्धा और भक्ति करके  
युक्त हो । जीवात्मा सुखी र-  
है और क्षमा और लक्ष्मी औ-  
र नीर्य और स्मृति और की-  
र्ति को युक्त होगा ॥ १२७ ॥

मू. नक्रोधो न च मात  
संयं न लोभो नाशुभा  
मतिः । भवन्ति कृत  
पुण्यानां भक्तानां पुरु-  
षोत्तमे ॥ १२८ ॥ १२८ ॥

टी. न क्रोधी हो न ईर्ष्या हो न लोभ हो

अशुभ को नैन प्रीति भोगें - اور جنم  
اور مرگ اور بڑھا پا اور خوف و بیماری  
انکو نैन پریति ہوتی ہے -

اشلوک ۱۲۶

ایمانگ استودہی یانہ شردھا  
بھکت سموتہ - پیچھے نام  
سکھنگ کشانت شری دھرت  
اشمیت کیرت بھہ -

ٹیکا

اس سہسرنام کو پڑھتا ہوا شردھا اور بھکت  
کے ساتھ جو کوئی بھکت ہو - وہ جیوا تمانگھی  
رہی گا اور چھا اور پیچھے اور بھرت اور اشمیت  
اور کیرت کو بھکت ہو گا -

اشلوک ۱۲۷

نکرو دھوتجات سیرنگ نہ کو بھوتا  
شہنامتہ - بھوت کرت پنی  
ناتک بھکتاناک پرکھوتے -

ٹیکا

نہ کرو دھوت نہ حرس ہو نہ لالچ ہو نہ کھوتی

स्तुवन्नामसहस्रेणित्यं

भक्तिमन्वितः ॥ १३४ ॥

टी. कठिन कामों को तर जाय

गा पुरुष पुरुषोत्तम की स्तु-

ति हजार नाम की करके नि-

त्य जो भक्ति करे ॥ १३४ ॥

मू. वासुदेवाश्रयो मर्त्यो

वासुदेवपरायणः । सर्व

पापविशुद्धात्मायाति

ब्रह्मसनातनम् ॥ १३५ ॥

टी. जो वासुदेव के आश्रय है

और वासुदेव के आधीन है ।

उसके सब पाप छूट जायेंगे और

सनातन ब्रह्म को प्राप्त होगा ॥ १३५ ॥

मू. न वासुदेव भक्ताना

म शुभं विद्यते क्वचित्

जन्म मृत्यु जरा व्याधि

भयं नैवोपजायते ॥

॥ १३६ ॥ १३६ ॥ १३६ ॥

टी. वासुदेव के जो भक्त हैं वह

استون نام سترین نیکن

بکثرت ستموت

شیکا

کھن کا نیو کو بھی طر جبار پش پش تو تم کی

استت ہزار نام کے بنت جو بکثرت ہو کر رہے

اشلوک

باسد یو آشر تو مرتیو باسد یو

پر اینہ - سرب پاپ بشد ہوتا

یات بر تم سنا تم

شیکا

جو نکمہ باسد یو کے آشر ہے ہو اور باسد یو

اودھن ہو - آکے سب پاپ چھوٹ جائیگے اور

سنا تم پر تم کو پاویگا -

اشلوک

نہ باسد یو بھگتا نام شیشم بدیتے

کو چٹ - جتم مرتیہ جرابیا دم

بھینک نیو پ جائیے -

شیکا

باسد یو بھگوان کے جو بکثرت ہیں وہ

मू. नभयंकचिदप्रोति  
वीर्यं तेजश्च विंदति । भ-  
वत्यरोगो युतिमान्बल-  
रूपगुणान्वितः ॥ १३२ ॥

टी. कभी भय को नहीं प्राप्त हो-  
गा पराक्रम और तेज बाला हो-  
गा । आरोग्य होगा शोभा बा-  
ला होगा बल और रूप और गु-  
ण करके युक्त होगा ॥ १३२ ॥

मू. रोगार्त्तमुच्यते रोगा-  
द्वदोऽनुचेतवन्धनात् ।  
भयान्मुचेतभीतस्तु  
मुचेदायन्न आपदः  
॥ १३३ ॥ १३३ ॥ १३३ ॥

टी. रोगी रोग से छूट जायगा  
और कैदी कैद से । डरा हुआ  
डर से छूट जायगा और  
बिपत्ति वाला पीड़ा से छूट  
जायगा ॥ १३३ ॥ १३३ ॥

मू. दुर्गाण्यतितरत्यामु  
पुरुषः पुरुषोत्तमं ।

اشکوک  
بہ چھینک کو چھینک سے چھینک  
بہ چھینک سے چھینک سے چھینک  
مان بن روپ گنا تو تہ -

ٹیکا

اور کبھی اسکو کسی سے خوف نہ لگا اور  
قدرت و جبارت ہوگا - اور تندرستی اور  
شوہر اور بی اور روپ اور گن والا ہوگا -

اشکوک

روگا تو چھینک سے روگا تو چھینک  
بہ چھینک سے چھینک سے چھینک  
است محی و اپن آیدہ -

ٹیکا

بہ چھینک سے چھینک سے چھینک  
قیدی قید سے چھینک سے چھینک  
ڈر سے ڈر سے چھینک سے چھینک  
بہ چھینک سے چھینک سے چھینک

اشکوک

روگا تو چھینک سے روگا تو چھینک  
بہ چھینک سے چھینک سے چھینک  
است محی و اپن آیدہ -

अर्थ को प्राप्त होगा । काम-  
ना वाला कामना को प्राप्त हो-  
गा संतान की इच्छा वाला सं-  
तान को प्राप्त होगा ॥ १२६ ॥

मू. भक्तिमान्यः सद्योत्था-  
यशुचिस्तद्गतमानसः ।  
सहस्रवासुदेवस्य नाम्ना  
मेतत्प्रकीर्तयेत् ॥ १२७ ॥

टी. भक्ति वाला पुरुष सदा उ-  
ठ कर पवित्र हो कर भगवान में  
मन लगा कर । जो हजार नामना  
रायण के नित्य कीर्तन करे ॥ १२७ ॥

मू. यशः प्राप्नोति विपुलं  
ज्ञाति प्राधान्यमेव च ।  
अचलां श्रियमाप्नोति त्रि-  
यः प्राप्नोत्यनुत्तमं ॥ १२८ ॥

टी. उसको यश प्राप्त होगा अ-  
पनी ज्ञाति में प्रधान होगा ।  
अचल लक्ष्मी को प्राप्त हो-  
गा और कल्याण को प्राप्त हो-  
गा उत्तम होगा ॥ १२८ ॥

میراد کو پاویگا - اور آرزو مند کی آرزو  
پوری ہوگی اور اولاد کی تمنا رکھنے والا  
اولاد پاویگا -

اشلوک  
جگت نامہ سدوتھای پش  
جگت نامہ سدوتھای پش  
نامنا میت پر کی ریت

اشلوک  
جو جگت والا پش سد اٹھ کر پش ہو کر  
جگتوں میں بن لگا کر - یہ ہزار نام نامی  
سے ریت پا کر لگا کر -

اشلوک  
نیشہ برائوت پرینگ گیات  
پراوہا نیشہ میوچ - اہلاک شری  
پاپوت شری یہ پراپنوتیہ شری

اشلوک  
اسکو جس پہلے اور اپنی ذات میں پڑھا  
ہوگا - اور اچل کچھی پاویگا اور بھلا ہوگا  
اور سب سے اتم ہوگا -



रक्षा करता है सर्वप्रहर-  
णायुधः सम्पूर्ण शास्त्र प्र-  
हार करने वाले पास हैं जि-  
सके ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

ॐ सर्वप्रहरणायुधः

अथमाहात्म्य ॥

मू. इतीदं कीर्तनीय-  
स्य केशवस्य महात्म-  
नः । नाम्नां सहस्रं दि-  
व्यानामशेषेण प्रकी-  
र्तितं ॥ १२६ ॥ १२६ ॥

टी. यह नाम कीर्तन करते हुवे  
केशव महात्मा के । हजारना-  
म दिव्य सारे कीर्तन करै ॥ १२६ ॥

मू. यद्दं शृणुयान्नि-  
त्यं यश्चापि परिकीर्त्त-  
येत् । नाशुभं प्राप्नुया-  
त्किञ्चित्सो मुने ह च-  
मानवः ॥ १२७ ॥ १२७ ॥

टी. जो कोई इन नामों की नि-  
त्य सुनै और जो कोई कीर्तन करे

रक्षणा करता है सर्वप्रहर-  
णायुधः सम्पूर्ण शास्त्र प्र-  
हार करने वाले पास हैं जि-  
सके ॥ १२५ ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

मातात्म  
अङ्क सूर्य  
परमेश्वर  
श्लोक

१२५  
अति दुर्लभ किर्तनीय किशो-  
रमात्मने - नामाङ्क सूर्य  
द्विनाम शिखिनि प्रकीर्त-  
निका

१२५  
यह नाम कीर्तन करते हुवे किशो-  
रमात्मने - नामाङ्क सूर्य  
द्विनाम शिखिनि प्रकीर्त-  
निका

१२६  
यह नाम कीर्तन करते हुवे किशो-  
रमात्मने - नामाङ्क सूर्य  
द्विनाम शिखिनि प्रकीर्त-  
निका

१२६  
जो कोई इन नामों की नि-  
त्य सुनै और जो कोई कीर्तन करे



वैरवानः बाराह रूपधारण  
करके हिरण्यक्ष को मारने वा-  
ला है साम गायनः साम वेद  
का गाने वाला है देवकी नंद-  
नः देवकी का पुत्र है स्वष्टा  
जगत का रचने वाला है क्षि-  
तीशः पृथ्वी का मालिक  
है पापनाशनः पापों का  
दूर करने वाला है ॥ १२४ ॥

मू. शङ्ख भृन्नन्द की च-  
क्री शार्ङ्ग धन्वा गदा-  
धरः । रथाङ्ग पाणि र-  
क्षोभ्यः सर्व प्रहरण-  
युधः ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

मू. शङ्ख भृत् शङ्ख का धार-  
ण करने वाला है नन्द की  
विद्यारूप तलवार है जिसके  
चक्री उदर्शन चक्र वाला है  
शार्ङ्ग धन्वा शार्ङ्ग धनुष का  
धारण करने वाला है गदा ध-  
रः गदा का धारण करने वाला  
है रथाङ्ग पाणि रथ का पहि-  
या है हाथ में जिसके रक्षोभ्यः

बिम्बिका बारह रूप धारण करने  
वाले हैं दैत्य कुमार न्योला है साम  
गायन साम गाने वाला है देवकी  
नंदन देवकी का पुत्र है स्वष्टा  
जगत का रचने वाला है क्षितीश  
पृथ्वी का मालिक है पापनाशन  
पापों का दूर करने वाला है -

अश्लोक

१२५  
शङ्ख भृत् नन्द की चक्री शार्ङ्ग  
धन्वा गदाधरः - रथाङ्ग

पाणि रक्षोभ्यः सर्व प्रहरण-  
युधः ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

श्लोक

१२५  
शङ्ख भृत् नन्द की चक्री शार्ङ्ग  
धन्वा गदाधरः - रथाङ्ग  
पाणि रक्षोभ्यः सर्व प्रहरण-  
युधः ॥ १२५ ॥ १२५ ॥

सू. यज्ञभृद्यज्ञकचजीय  
यज्ञभृद्यज्ञसाधनः। य.  
ज्ञानकचयज्ञगुह्यमन्न  
मन्नादएवच ॥ १२३ ॥

री. यज्ञभृद यज्ञका धारणा  
करने वाला है यज्ञकच य.  
ज्ञ करने वाला है यज्ञी यज्ञ  
वाला है यज्ञभृग यज्ञको भो-  
क्ता है यज्ञसाधनः यज्ञका  
साधने वाला है यज्ञांत काल  
यज्ञ का फल देने वाला है यज्ञ  
गुह्यं ज्ञान यज्ञरूप है अन्नं  
अन्नरूप है अन्नाद एवच  
अन्न का खाने वाला है ॥ १२३ ॥

सू. आत्मयोनिः स्वयं-  
जातो वैखानः सामगाय-  
नः। देवकी नन्दनः सष्टा  
क्षितीशः पापनाशनः ॥ १२४ ॥

री. आत्मयोनिः आत्मा का  
उत्पन्न करने वाला है स्वयंजा-  
त्यो किसी से पैदा नहीं हुआ है

اشلوک ۱۲۳  
گنہیہ بھر دو گنہیہ کرو گنہیہ گنہیہ  
بھگت گنہیہ ساوہتہ - گنہیہ گنہیہ  
کرو گنہیہ گنہیہ گنہیہ گنہیہ گنہیہ  
۱۲۳

گنہیہ بھر دو گنہیہ کا دھارن کرنے والا ہے  
گنہیہ کرو دو گنہیہ کر نیوالا ہے گنہیہ گنہیہ  
والا ہے گنہیہ بھگت گنہیہ بھگت کا بھگت کرنے  
والا ہے گنہیہ ساوہتہ گنہیہ گنہیہ کا ساوہتہ  
والا ہے گنہیہ گنہیہ گنہیہ گنہیہ گنہیہ  
والا ہے گنہیہ گنہیہ گنہیہ گنہیہ گنہیہ  
سر ان ان روپ ہی انما والوچ  
ان کا کھانے والا ہے -

اشلوک ۱۲۴  
آتم جو نہ سوئیگ جا تو نیکی نہ  
سام گائیہ - دیو کی نند نہ  
پہ چھٹی پاپ ناستہ -

۱۲۴  
آتم جو نہ آتما کا پیدا کر نیوالا ہے سوئیگ  
جا تو کسی سے پیدا نہیں ہوا ہے

एकात्मा एक आत्मा है अर्थात् एक है जन्म मृत्यु जरातिगः जन्म मरण आदि से रहित है ॥ १२१ ॥

मू० भूर्भुवः स्वस्त रुस्तारः सपिता प्रपिता महः । यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञा यज्ञाङ्गे यज्ञबाहनः ॥ १२२ ॥ १२२ ॥

मू० भूर्भुवः स्वस्त रुस्तारः सपिता प्रपिता महः । यज्ञो यज्ञपतिर्यज्ञा यज्ञाङ्गे यज्ञबाहनः मुक्ति चाहने वाली को मुक्ति देने वाला है ॥ १२२ ॥ १२२ ॥

ایک آتما ایک ہوتا جسکی مین ذات واحد و محیط کل موجودات ہے جنم مرتبہ جرات کہہ جنم اور مرث سے رہت ہے مینی پیدائش اور فنا سے برتری و علو ہے۔

اشلوک

بھو بھوہ سوستر شتارہ ستیا پریتامہ۔ گیو گیہ پتر یجوا گییا گو گیہ باہنہ۔

شیکا

بھو بھوہ سوستر شتارہ ستیا پریتامہ۔ گیو گیہ پتر یجوا گییا گو گیہ باہنہ۔

अर्थात् सकल सृष्टि से उत्तम है सत्पथाचारः श्रेष्ठ मार्गों का आचारी है अर्थात् मनुष्यों को अच्छी राह पर चलाता है प्राणदः प्राण देने वाला अर्थात् जीवों की उत्पत्ति करने वाला है प्राणवः अंकार रूप है प्राणः व्यवहार करने में सच्चा है ॥ १२० ॥ १२० ॥

मू. प्रमाणं प्राणनिलयः  
प्राणभूत्प्राणजीवनः। तत्  
त्वन्तत्त्वविदेकात्मा जन्म  
मृत्युर्जरातिगः ॥ १२१ ॥

श्री. प्रमाणां सिद्ध प्रकाश ब्रह्म का कहने वाला है प्राणनिलयः ज्ञान इन्द्रियों का आसरा है प्राणभूत प्राणों का प्रसन्न करने वाला है और शक्ति देने वाला प्राणजीवनः प्राणों का निजाने वाला है तत्त्वं तत्त्व है, जिसका नाश नहीं तत्त्वविद तत्त्वार्थों ज्ञान का जानने वाला है

یعنی تمام عالم سے فائق تر ہے سب سے  
پیشتر حارہ اچھے بارگن کا آچار ہے  
یعنی آدمیوں کو طریقہ نیکو کاری پر چلائی والا  
ہے پر ان وہ پران دینے والا ہے یعنی  
جانوں کو پیدا کرنے والا ہے پر تو وہ اورنگ کار  
رُوپ ہے یہ ہمہ بیومار کرنے میں سچا ہے  
یعنی بطریقہ راستی بیومار رکھتا ہے۔

اشلوک

پر مانگ پران زلیہ پران بھر  
پران حیو نہ۔ توتوگ توتو  
بدیکا کا جہم تیر خرات کہہ۔

شیکا

پر مانگ سید پر کش گیان رُوپ برہم کا  
کشمے والا ہے پران زلیو گیان اندریوں کا  
آسرا ہے پران بھرت پرانوں کا پر سن  
کرنی والا ہے یعنی قوت دہندہ نفس آمیزہ و  
روندہ پران حیو نہ پرانوں کا چلانے والا  
ہے توتوگ توتو ہے اور جگناش نہیں ہے  
توتو بد آقا کا جاننے والا ہے یعنی  
دانستہ خلاصہ غامض کا ہے

उत्पत्ति का आदिकारण है  
जनजन्मादि: उत्पन्न हो-  
ने वालों का जन्म देने वाला है  
भीमो डरे हुवे हैं सब जिससे  
भीम पराक्रम: डरने वा-  
ले हैं पराक्रम जिसके राक्षसों  
को अर्थात् उसकी शक्ति सा-  
मर्थ्य से सब डरते हैं ॥ ११६ ॥

मू. आधारनिलयो  
धाता पुष्पहासः प्र-  
जागरः । ऊर्ध्वगस्त-  
त्पथाचारः प्राणदः प्र-  
णवः पणः ॥ १२० ॥

मि. आधारनिलयो पं-  
महाभूतो का आसरा है अर्थात्  
तु सब संसार उत्पत्ति से बहरा है  
धाता जिसका कोई उद्धार  
करने वाला नहीं है पुष्प-  
हासः फूलों की तरह है ह-  
री जिसकी अर्थात् फूल की  
तरह हँसता है प्रजागरः  
अज्ञान दूर हो गया है जिसका  
ऊर्ध्वगः संसार के रहने-  
वालों से ऊँचा है स्थान जिसका

जन्मजादो پیدا ہونے والا کو پیدا کرتے  
والا ہی جھمکو ڈرتے ہیں سب جس سے  
یعنی سبب و ہمت دارین کا ہی جھم  
پر اگر مہ ڈرانے والے ہیں پر اگر م  
جسکے راجسوں کو یعنی اسکی قوت قوی  
سب خوف کھاتے ہیں -

اشلوک

آو حار نلیو دھا تا پشپ ہا سہ  
پر جاگرہ - او ردھ گہ ست  
پتھا چارہ پران وہ پر توہ پتہ

میکا

آو حار نلیو خ نہا بھو تون کا آسرا  
یعنی قائم دار و ذہ قائم پر دھا تا جکا  
دوسرا آو حار کر نیوالا نہیں ہی پشپ  
ہا سہ بھو تون کی طرح ہی پشپ یعنی خدہ  
پتھا چارہ پر جاگرہ اکیان دور  
ہو گیا ہے جسکا یعنی بصورت عقل پس  
کے ہے او ردھ گہ سنسار کے  
رہنے والوں سے اوپر ہی استھان جسکا

जिसका अर्थात् कोई उसको  
 पा नहीं सकता **विदिशो** हा-  
 एक को यथायोग्य फल देता  
 है **व्यादिशो** अनेक आत्मा  
 को देने वाला है अर्थात् इन्द्र  
 ब्रह्मा आदि सब उसके आ-  
 ज्ञाकारी हैं **दिशुः** कर्मफ-  
 ल का देने वाला है ॥११८॥

**मू. जनादिभूभुवो ल-**  
**क्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः**  
**जननो जनजन्मादिर्भो**  
**मो भीमपराक्रमः ॥११९॥**

**टी. जनादिः** जिसका आदि  
 कारण कोई नहीं है अर्थात् आ-  
 दि नहीं खबता है **भूभुवो** प-  
 र्वी का आसरा अर्थात् सब  
 की उत्पत्ति का आदि कारण  
 है **लक्ष्मीः** धनवान है **सु-**  
**वीरो** सुन्दर है **गति** जिसकी  
**रुचिराङ्गदः** सुहावन है  
**विजायठ** जिसका और यह  
 कि कुशलान्द भूषण उसका  
 है **जननो** जीवों का पैदा क-  
 रने वाला है अर्थात् सृष्टिकी

जिसकी आत्मा को कोई जानने में असमर्थ है  
 ब्रह्मा को सौ फल देता है अर्थात् इन्द्र  
 ब्रह्मा आदि सब उसके आ-  
 ज्ञाकारी हैं **दिशुः** कर्मफ-  
 ल का देने वाला है ॥११८॥

अश्लोक

**आदौ जगत्सृष्टौ लक्ष्मीर्भूभुवो ल-**  
**क्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः**  
**जननो जनजन्मादिर्भो**  
**मो भीमपराक्रमः ॥११९॥**

श्लोक

**आदौ** जगत्सृष्टौ लक्ष्मीर्भूभुवो ल-  
 क्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः  
 जननो जनजन्मादिर्भो  
 मो भीमपराक्रमः ॥११९॥

नाम के स्मरण से मनुष्यों के पाप दूर करता है दुःस्वप्न नाशनः खोटे स्वप्न को नाश करने वाला है **वीरहा** संसार बन्धन से छुड़ा कर मुक्ति देता है **रक्षाणः** रक्षा करने वाला है **शान्तो** अन्धे मार्ग में होने वाला भगवान् रूप **जीवनः** सम्पूर्ण प्रजा को जिलाने वाला है **पर्यवस्थितः** बाहर भीतर सब जगह स्थित और व्यापक है ॥ ११७ ॥

मू. अनन्तरूपो नंत श्री  
जितमन्युर्भयापहः। च  
तुरस्रोगम्भीरात्माविदि  
शोव्यादिशोदिशः ॥ ११८ ॥

टी. अनन्तरूपो अनन्त रूप है जिसके अनन्त श्री अवन्त है शोभा जिसकी जितमन्यु जीता है क्रोध जिसने भयापहः भय का दूर करने वाला है चेतुरस्रोग जैसे कर्म है वैसे ही फल देने वाला है गम्भीरात्मा अधाह है मन

नाम لینے والوں کے سب پاپ دور کرتا ہے وہ سوپن ناشنہ بُرے خواب کی تباہی کا دور کرنے والا ہے میرا سنسار کے بند سے چھڑا کر مکت دیتا ہے ترکششہ رنجھا کرنے والا ہے یعنی محافظتی وہی ہے شانتو اچھے مارگ میں ہونی والا ہے مگھوان روپیہ چوہہ سبکا جلانی والا ہے بری کوستہ حصہ اندر بار تمام عالم میں محیط ہو کر قائم ہے۔

اشلوک

اَنْتَ رُوؤوْتَتْ شَرْجَتْ  
مَشِيْرَ بَحِيَابٍ مَهْ جَسْمَرْ وَكَبِيْرَ اَمَّا  
بَدِشُو بَادِشُو دِشُو -

طیکا

اَنْتَ رُوؤوْتْ بے انتہا ہیں روپ جسکے اَنْتَ شَرْجَتْ بہت ہی شو بجا جسکے یعنی قوت و قدرت بے انتہا رکھتا ہے جَتْ طَبِیْعَ جِنَا ہی کرو دھجے یعنی قوت غصہ پر غالب ہے جیسا کہ ہم بھی کا دور کرنے والا ہے حقہ مَرْوِ جیسے کرم ہیں ویسے پھل دینے والا ہے جیسے اَمَّا اکتاہ ہے من

टी. अक्रूरः क्रूरतासे रहित  
है पेशलो अच्छा है मन बा-  
ली गरीर कर्म जिसका द-  
क्षो जल्दी करने वाला है द-  
क्षिणः भक्तों को जल्दी फल  
 देने वाला है क्षमाणांभरः  
 क्षमा वालों में अक्ष है विद-  
 तमो ज्ञानियों में अक्ष उत्तम  
 जानने वाला है वीतभयः  
 जाता रहा है भय जिसका अ-  
 र्थात् जन्म मरण के भय से रहि-  
 त है पुण्यश्रवणकीर्त-  
 नः पवित्र करने वाला है श्रव-  
 ण और कीर्तन जिसका ॥११६॥

मू. उत्तारणोदुष्कृतिहा  
 पुण्योदुःस्वप्ननाशनः।वी  
 रहारक्षणः शान्तो जीवनः  
 पर्यवस्थितः ॥ ११७ ॥

टी. उत्तारणो संसार सागर  
 से भक्तों को पार उतारने वा-  
 ला है दुष्कृतिहा पापों का  
 दूर करने वाला है पुण्यो  
 पुण्य रूप है अर्थात् अपने

शिका  
 ॥५॥  
 अक्रूरह बुराई से रहित  
 अक्षमय मन बानी कर्म शरीर जका दुःकृतो  
 जल्दी करने वाला है दुःकृतिहा बहलतों को  
 जल्दी पल देने वाला है क्षमाणांभर  
 जहा वालों में अक्ष है विद-  
 तमो ज्ञानियों में अक्ष उत्तम  
 जानने वाला है वीतभयः  
 जाता रहा है भय जिसका अ-  
 र्थात् जन्म मरण के भय से रहि-  
 त है पुण्यश्रवणकीर्त-  
 नः पवित्र करने वाला है श्रव-  
 ण और कीर्तन जिसका ॥११६॥

अश्लोक  
 ॥५॥  
 अमारुदुःस्वप्ननाशनः  
 नाशने - बिरुदुःस्वप्ननाशनः  
 बिरुदुःस्वप्ननाशनः -

शिका  
 ॥५॥  
 अमारुदुःस्वप्ननाशनः  
 नाशने - बिरुदुःस्वप्ननाशनः  
 बिरुदुःस्वप्ननाशनः -



और यह कि शत्रुता मित्रता से  
रहित हो उसको अरौद्र कहत है  
**काण्डली** शेषरूप है चक्री  
सुदर्शन चक्र है जिसके हाथ में  
अर्थात् जीव का तत्व उसके हा-  
थ में है **विक्रमी** पराक्रम वा-  
ला है **ऊर्जित** शासन चला-  
वान है आत्मा जिसकी अर्थात्  
वेद वचन उसी का कहा हुआ है  
**शब्दातिगः** सम्पूर्ण शब्दों  
को उल्लङ्घन करने वाला है अ-  
र्थात् वचन से पहिचान देने में नहीं  
आता है **शब्दसहः** निर्गुण श-  
ब्द कहने वाला है और शब्द  
को संभारने वाला है अर्थात् सब  
वेदों का तत्व वही है **शिशि-  
रः** तीनों ताप का दूर करने वा-  
ला है **शर्वरीकरः** माया र-  
चने वाला है ॥ ११५ ॥ ११५ ॥

सू. अक्रूरः पेशलोदक्षो

दक्षिणः क्षमिणाम्बरः ।

विदत्तमो वीतमयः पुण्यः

श्रवणकीर्तनः ॥ ११६ ॥

और जो कि जसको अन्धश्रुति दोषमयि कान्हो  
असुकोषी अरुद्र कते हैं कन्दली शिशिर  
रूप निचिकरी सन्दर्शन चक्र वाला भूमी  
खलसह दलुका असके माते में हरिकर्म  
प्राक्रम वाला भूमी चालाक वतित्र है  
और चित्त शासक भवान हरि कया  
भूमी حکم حکا भूमी احکام بنید کے ہوئے  
اسی کے ہیں سید اکبر سیدوں کو  
ناتجیج والا ہی یعنی وہ ذات ایسی ہے  
کہ بعض سے شناخت نہیں ہوتی ہے  
سند سہمہ رنگین شبد کہنے والا اور  
شبد کو غیبی کئے والا ہی یعنی سب بید  
اسکو سب کا خلاصہ کہتے ہیں ششدر تین  
تا پیکار اور کر نیو الا ہی ششدری کر  
مایا رہنے والا ہی یعنی آفرینندہ ہر دو نمبر  
اولیٰ خالقان دوم عالمان کا ہے۔

اسلوب  
کر گزیرہ پشیمو و کشو و کشندہ  
چند امیرہ۔ بد پویش بیکہ  
ششدری کر تہ۔

श्री सनातन काल रूपी नागय-  
ण है सनातन तमः ब्रह्मा-  
दिको का कारण अर्थात् उत्प-  
न्न करने वाला है कपिलः क-  
पिलबदन अर्थात् जगन्नि रूप है  
वह जगन्नि जो जल में ऊँचे रङ्ग-  
की होती है इसवासी उसको क-  
पिल कहते हैं कपिः सूर्यरूप  
है अर्थात् ध्रुव जल अपने में रसों  
चलेता है अन्वयः सब जगत्  
जिसमें लीन हो जाय स्वस्ति-  
दः भक्तों को मङ्गल देने वाला  
है स्वस्ति कृत गङ्गा ल करने  
वाला है स्वस्ति जानन्द स्व  
है स्वस्ति भुक् जानन्द का भो-  
गने वाला है स्वस्ति दक्षि-  
णाः जानन्द करके बढ़ने वा-  
ला है ॥११४॥ ॥११५॥ ॥११६॥

श्री गरीडः कुण्डली चकी  
विक्रम्यूर्जितशासनः श-  
ब्दातिगमचंद्रहः शिशि  
रशर्वरीकरः ॥११५॥

श्री गरीडः तब है जो वज्रवदे

सनात काल रूपी नागय-  
ण है सनातन तमः ब्रह्मा-  
दिको का कारण अर्थात् उत्प-  
न्न करने वाला है कपिलः क-  
पिलबदन अर्थात् जगन्नि रूप है  
वह जगन्नि जो जल में ऊँचे रङ्ग-  
की होती है इसवासी उसको क-  
पिल कहते हैं कपिः सूर्यरूप  
है अर्थात् ध्रुव जल अपने में रसों  
चलेता है अन्वयः सब जगत्  
जिसमें लीन हो जाय स्वस्ति-  
दः भक्तों को मङ्गल देने वाला  
है स्वस्ति कृत गङ्गा ल करने  
वाला है स्वस्ति जानन्द स्व  
है स्वस्ति भुक् जानन्द का भो-  
गने वाला है स्वस्ति दक्षि-  
णाः जानन्द करके बढ़ने वा-  
ला है ॥११४॥ ॥११५॥ ॥११६॥

श्लोक

अरुंदरे कन्दली चकी  
विक्रम्यूर्जितशासनः श-  
ब्दातिगमचंद्रहः शिशि  
रशर्वरीकरः ॥११५॥

श्लोक

अरुंदरे कन्दली चकी

टी. अनन्तो नहीं हैं अनन्त जिसका  
 हुतभृग भक्तों के पुण्य का भा-  
 गी है भोक्ता योगों का भोगने  
 वाला है सुख दो सुख देने वाला  
 है नैक दो अनेक बार उत्पन्न  
 होने वाला है अर्थात् धर्म की र-  
 क्षा के लिये बारम्बार अवतार ले-  
 ता है अराजः सब से आगे पैदा  
 होने वाला है अर्थात् सब से पहिले  
 है अनिर्विमः दोष रहित है  
 अर्थात् सब तरह का सुख रखता  
 है और घमाण्ड नहीं रखता है स-  
 दा मर्षी सदा संभारने वाला अ-  
 र्थात् भक्तों का सुख देता है लोक-  
 धिष्ठान लोकों का आश्रय अर्था-  
 त तानों लोक की रक्षा अपने साम-  
 य्य से करता है अद्भुतम् अद्भुत  
 आश्चर्य रूप है अर्थात् तरह तरह  
 के गुणों से युक्त है ॥ ११३ ॥

मृ. सनात्सनातनत-  
 मः कपिलकपिरव्ययः  
 सस्तिदः स्वस्ति कृतस्व-  
 स्ति स्वस्ति भुक् स्वस्तिद-  
 दिक्षणाः ॥ ११४ ॥ ११४ ॥

सिका  
 ॥३५  
 अन्तोनियंत्रित जगत् भक्त  
 भक्तों के पुण्य का भोगी है भोक्ता  
 योगों का भोगने वाला है सुख दो  
 सुख देने वाला है नैक दो अनेक बार  
 उत्पन्न होने वाला है अर्थात् धर्म की र-  
 क्षा के लिये बारम्बार अवतार ले-  
 ता है अराजः सब से आगे पैदा  
 होने वाला है अर्थात् सब से पहिले  
 है अनिर्विमः दोष रहित है अर्थात्  
 सब तरह का सुख रखता है और  
 घमाण्ड नहीं रखता है सदा मर्षी  
 सदा संभारने वाला अर्थात् भक्तों का  
 सुख देता है लोक धिष्ठान लोकों का  
 आश्रय अर्थात् तानों लोक की रक्षा  
 अपने सामय्य से करता है अद्भुतम्  
 अद्भुत आश्चर्य रूप है अर्थात् तरह  
 तरह के गुणों से युक्त है ॥ ११३ ॥

श्लोक  
 ॥३५  
 सनात्सनातनतमः कपिलकपिरव्ययः  
 सस्तिदः स्वस्ति कृतस्वस्ति स्वस्ति  
 भुक् स्वस्तिद दिक्षणाः ॥ ११४ ॥ ११४ ॥

मू. विहायसगतिर्योतिः  
सुरुचिर्हुतभुग्विभुः । र-  
विर्विरोचनः सूर्यः सवि-  
तारविलोचनः ॥ ११२ ॥

मू. विहायसगतिः आका-  
श है गति जिसकी ज्योतिः स्व-  
यं प्रकाश रूप है सुरुचिः सुंदर  
है शोभा जिसकी हुतभुग हो-  
म का भोजन करने वाला है वि-  
भुः सब जगह व्यापक है रविः  
सूर्य रूप होकर जल को पीता है  
विरोचनः विशेषता कारक शो-  
भावान है सूर्यः आकाश पर च-  
लता है अर्थात् बड़ा बीर है स-  
विता मनुष्यों को अपने कर्मों  
में लगाता है और सब को उत्पन्न  
करता है रविलोचनः सूर्य  
है नेत्र जिसके अर्थात् सूर्य चन्द्र-  
मा उसके नेत्र के प्रकाश हैं ॥ ११२ ॥

मू. अनन्तो हुतभुगभोक्ता  
सुखदोनैकदोग्रजः । अनि-  
र्विण्णः सदा मर्षी लोका-  
धिष्ठानमद्भुतं ॥ ११३ ॥

اشلوك

بہائے سنگت جوتہ سُر جوتہ  
بھگ بھجہ - بربر و چنہ سورج  
سبتار ب لوجنہ -

شیکا

بہائے سنگت آکاش برکت جسکی  
یعنی فانی تر آسمان سے ہی حیوتہ ازخ  
روشن ہی مثل شعلہ سُر جوتہ سُر جوتہ  
جسکی یعنی ظہور اسکا نہایت زیبا جوتہ  
بھگ ہو کہ بھجہ جن کر نوالا ہی بھجہ  
سب جگہ بیابک ہی نہیں سب جگہ شرف ہی  
اور جہاں پرستہ عالم ہی رہے جل کو سورج پڑ  
ہو کر پیتا ہی ہو و چنہ بہت ہی شوبھا  
والا ہی سورج آکاش پر چلتا ہی یعنی عیشت  
کامل رکھتا ہی شبتا سب کو اپنے اپنے کروٹ  
میں لگاتا ہی اور سب کو پیدا کرتا ہی ر-  
لوجنہ سورج ہیں پتھر جسکی یعنی سورج  
اور خدایان اسکی آنکھیں ہیں -

اشلوك - انتھوت بہت بھگ بھجہ  
سکھ و نیکی و گرجہ - انہر لہجہ شدا  
مرکھی کو کا و ہشتیمان مد بھجہ

मू. सत्ववान्सात्विकः स  
त्यः सत्यधर्मपरायणः।  
अभिप्रायः प्रियाहोहः प्रि  
यकृत्प्रीतिबर्धनः ॥१११॥

मी. सत्ववान् शरवीर है सा-  
त्विकः सत्यवती गुणस्वता  
है सत्यः ब्रह्म के जाननेवालों  
से उत्तम है अर्थात् अच्छों से  
अच्छा है सत्यधर्मपराय-  
णः सत्य और धर्म का आश्र-  
य है अभिप्रायः परस्वार्थकी  
कांक्षा है जिसके प्रियाहोहः  
पूजनेयोग्य है और प्यारी वस्तु  
देनेवाला है अर्थात् सबकीका-  
मना पूरी करनेवाला है और अ-  
विनाशी है प्रियकृत् भक्तों  
की प्यार करनेवाला है अर्थात्  
जो कोई उसकी पूजा करता है  
उसको वह प्रिय रखता है प्री-  
तिबर्धनः प्रीति का बढ़ा-  
नेवाला है अर्थात् अपने  
भक्तों से प्रीति बढ़ाता  
है ॥ १११ ॥

اشکوک  
سَتَوُا اِنْ سَا تُوکَ سَتِيَه سَتِيَه  
وَهْمَ پَرَا يَه - اَجْهِي پَرَا يَه  
پَرَا يَه پَرَا يَه کَرْت پَرِي ت بِر وَهْتَه  
طیبا  
سَتَوُا اِنْ سَتَوُ مِنی شَجَاع کَالِ ی  
سَا تُوکَ سَتُو گنی ه مِنی نہایت  
نیک ہر سَتِيَه بَرَح کے جاننے والوں  
مِن اَتَم ه مِنی نیکوں سے بھی نیک ہر  
سَتِيَه وَهْمَ پَرَا يَه سَت اور مِ  
کَا اَشْرِي مِنی پناہ ہر اَجْهِي پَرَا يَه  
سوار حق کرنیکی کا منا ہر جکو پَرَا يَه پَرَا يَه  
پوچھنے کے لائق ہر اور پیاری چیز نوکا دینے  
والا ہر مِنی سبکی کا منا پوری کرتا ہر اور  
لا زوال ہر پَرَا يَه کَرْت جھکتن کو  
پیار کر نیوالا ہر مِنی جو کوئی اسکی پرستش  
کرتا ہر اسکو دوست رکھتا ہر پَرِي ت  
بِر وَهْتَه پَرِي ت کا بڑھانے والا ہر مِنی  
جو کوئی اسکی جھکت پاؤں کرتا ہر تو وہ لکے  
دل مین محبت واقفاد زیادہ کرتا ہر -

और यह कि पवन उसकी आ-  
ज्ञा में चलता है ॥ १०६ ॥ १०६ ॥

मू. धनुर्द्धरो धनुर्वेदो द-  
ण्डो दमयिता दमः। अप-  
राजितः सर्वसहो नियंता  
नियमो यमः ॥ ११० ॥

री. धनुर्द्धरो धनुषधारी रा-  
नचन्द्र धनुर्वेदो बाणविद्या  
जानने वाला है दण्डो खोटे मा-  
र्ग से हराने वाला और अच्छे  
मार्ग में लगाने वाला है दम-  
यिता धर्मराज होकर जीवों  
को दण्ड देता है दमः कुमार्गि-  
यों को अच्छे मार्ग में लगाने वा-  
ला है अपराजितः सब कि-  
सी को जीते हुवे है अर्थात् शत्रु  
उसपर प्रबल नहीं हो सकता है  
सर्व सहो सब कुछ स-  
हने वाला है नियंता ब्रह्मा-  
दिकों को सृष्टि रचने में लगाने वा-  
ला है नियमो यमः जिसका  
कोई सिखा देने वाला नहीं है  
और जिसके मृत्यु नहीं है ॥ १११ ॥

اور نیز یہ کہ ہوا اس کے خوف سے روان ہے۔

اشلوک

وہنر وہرو وہنر بید ووندو  
دوم تیا دتمہ۔ اپرا جتہ سرب  
سہونیتا نیومیمہ۔

ٹیکا

وہنر وہرو دھنر دھاری ہی یعنی شری  
رام چندر وہنر بید و علم تیر اندازی کا  
عالم ہی وندو ٹھولی راہ سے بٹا نیوالا  
اور اچھی راہ پر لگانوالا ہی دوم تیا  
دھرم راج روپ ہی یعنی بصورت  
ملک الموت سو کر خلافت کو مرنے والے اعمال  
دیتا ہی دتمہ کمارگیوں کو سمارگ میں  
لگانے والا ہی اپرا جتہ سرب کو جیتے ہوئے  
ہی کوئی اسپر غالب نہیں مہرب سہو  
سب کچھ سہنے والا ہے نیتا برہما  
وغیرہ کو سرشت کسر چنے میں لگانے  
والا ہے نیومیمہ جگا کوئی سکھانیوالا  
نہیں اور جسکے موت نہیں ہے۔

वह्नः जगत का बढ़ानेवा-  
ला है ॥ १०८ ॥ १०८ ॥ १०८ ॥

मू. भारभृत्कथितो योगी  
योगीशः सर्वकामदः। आ-  
श्रमः श्रमणः क्षामः सुप-  
र्णो वायुवाहनः ॥ १०९ ॥

मी. भारभृत् पृथ्वी का भार धार-  
ण करने वाला है कथितो श्री-  
ष्ट है योगी जीव को ब्रह्म प्राप्त  
हो जिस करके ऐसा योगवाला है  
योगीशः योगियों का मालि-  
क है सर्वकामदः सब काम-  
ना देने वाला है आश्रमः श्र-  
म देने वाला है श्रमणः ज-  
न्म मरण करके जीवों को भस्म  
माता है अर्थात् बुद्धिमानों  
को भोग्य देता है क्षामः सब  
कामना को अन्त काल में ह-  
र कर देता है और अति पवि-  
त्र है सुपर्णो अच्छे वेद रूपी  
पत्नी अर्थात् संसार रक्ष रूप श्री-  
रवेर पत्नी रूप है वायुवाहनः  
आणों का धारण करने वाला है

بر و هغه بگت کابر هانیو الای -

اشلوک

۱۰۹  
بھار بھرت کتھو جوگی جوگیشہ  
سرب کام دہ - آشرہ شرمہ  
چھامہ سپرنو بالیو بامہ -

ٹیکا

۱۰۹  
بھار بھرت پریتیوی کا بوجھ دھان  
کرنیو الای کتھو سریشٹھ مینی اچھا ہے  
جوگی جس جوگ سے جو کہ برتھ پر اپت ہو  
ایسے جوگ والای جوگیشہ جوگیوں کا  
مالک ہی سرب کام دہ سب کامنا  
کا دینے والای آشرہ شرمہ سکھ کا دینی والای  
شرمہ خیر من کر کے جیو دیکھو بھرمائے  
یعنی تقدیر دیندہ عاقلان ہی چھامہ سب  
کامنا آنت کال میں دور کر دیتا ہی اور اپت  
اللیف و سبک ہی سپرنو اچھے بیدروپی  
ہی پتی جسکی مینی عالم بصورت درخت ہر  
اور بہ بصورت برگ ہے بالیو بامہ  
پرانوں کا دھارن کرنے والا ہے

سنا پڑھان کے نہیں پاسکتا ہے  
 بڑھت چننا کرنے योग्य نہیں ہے  
 अर्थात् अत्यन्त बेष्ट है रुशः  
 सूक्ष्म रूप अर्थात् बहुत महीन  
 है स्थूलो विगत रूप अर्थात् बहु  
 त भारी है गुणाभूत गुणों का  
 धारण करने वाला है अर्थात् उ-  
 तानि जिसकी नाश के तुल्य है  
 निर्गुणो कोई गुण नहीं रख-  
 ता है महान पक्ष के कार्य  
 वाला है अर्थात् जिन्हासे कोई  
 उसका पता नहीं देखता है हाथ  
 से कोई पकड़ नहीं सकता और स्व से  
 कोई देख नहीं सकता है स्वधृतः  
 नहीं है किसी से धारण करने योग्य  
 अर्थात् कोई उसका बोझ उठा  
 नहीं सकता स्वधृतः अपने को  
 आप आधार है अर्थात् आप  
 प अपनी सामर्थ्य से स्थित है  
 किसीके बल के आधीन नहीं  
 स्वास्यः अच्छा है सुख जि-  
 सका और यह कि वेद उस  
 का मुख है प्राग्वंशो प-  
 हिले ही पहिले हुआ है वं-  
 श जिसका ब्रह्म रूप वंश

جان نہیں سکتا برہمت چنا کر سکے جوگ  
 نہیں یعنی بزرگ ونگان تر ہی کرشمہ شوشم  
 روپ یعنی نہایت باریک و نسیک ہے  
 آتشجو کو برات روپ یعنی نہایت بھاری  
 اور بہت بڑا ہی گن بھرت گنوں کا دھنا  
 کر نیا لایا ہے یعنی پیدائش جسکی فنا کے ساتھ  
 موصوف سے برکت کوئی صفت نہیں  
 رکھتا ہی عہد ان سکل ایشورج والا  
 ہی یعنی زبان سے اسکا نشان نہیں یا  
 جاسکتا یا ستر سے پکڑا نہیں جاسکتا اگر  
 سے دکھائی نہیں دیتا ہے اودھرم  
 کسی سے دھارن کرنے کے جوگ نہیں  
 ہے یعنی کوئی اسکا بوجھا اٹھا نہیں  
 شکتا ہے سوو دھرم اپنے کو  
 آپ ہی اودھار رہے یعنی بذات خود  
 قائم ہے دوسرے کی قوت سے کچھ  
 سروکار نہیں رکھتا ہے سوو ایشور  
 اچھا ہے کچھ جسکا اور یہ کہ بید نفس  
 ذات پاک اسکی کا ہے پیراگ  
 پنشنو پہلے ہی پہلے ہوا ہے پنشن  
 جس کا برہم روپ پنشن



हैं अर्थात् सूर्य चन्द्रमा आदि सात नक्षत्र सप्तवाहनः सात हैं घोड़े जिसके अर्थात् सात दिन जो हैं वही उसके सात घोड़े हैं और सूर्य के रथ में जो घोड़ा है उसके सात मुख हैं अमर्त्यः चराचर भोजन करके रहित है अर्थात् कुछ भोजन नहीं करता वह ऐसा है कि इन्द्रियों से परे और निरूप है अनद्यो पाप दोष से रहित है चिन्त्यो चिन्ता कले योग्य नहीं है अर्थात् ध्यान में नही आता है भयकृत् कुकर्मियों को नरक का भय देने वाला है भयनाशनः भक्तों का भय दूर करने वाला है ॥ १०७ ॥

मू. आणुर्वहत्कशः  
स्थूलो गुणमृन्निगुणो  
महान् । अधतः स्वध-  
तः स्वास्यः प्राग्वंशो ब-  
श बर्हन् ॥ १०८ ॥

मि. आणुः पाप दोष से रहित है  
अर्थात् ऐसा है कि उसका कोई

मिनी सात सितार सैद्धि बामने  
सात हैं गह्वर जैसे मिनी सात दिन  
जो हैं वही उसके सात मुख की  
सोारी में जो गह्वर ही उसके सात मुख  
हैं अमर्त्य चराचर भोजन से रहित  
ही मिनी कुछ भोजन नहीं करता ही वह दात  
कि मुखों में ही और मुखों में रक्ता  
आंखों पाप दोष से रहित ही मिनी ब-  
सिब बने छत ही अचिन्त्यो चिन्ता कले  
जगत में मिनी चिन्ता कले में नहीं आता  
बिच कर्त बर्हन् कर्त कर्त कर्त कर्त  
वाला ही बिच नाशने दह माता कर्त कर्त  
दूर करने वाला ही -

अश्लोक  
अमर्त्यः स्वध-  
तः स्वास्यः प्राग्वंशो ब-  
श बर्हन् ॥ १०८ ॥

किं बर्हन् अश्लोक  
अमर्त्यः स्वध-  
तः स्वास्यः प्राग्वंशो ब-  
श बर्हन् ॥ १०८ ॥

सुन्दर है संकल्प जिसका सिद्धः  
 सिद्ध पुरुष है शत्रुजित शत्रु-  
 ओं को जीतने वाला अर्थात् मार-  
 ने वाला है शत्रुतापनः शत्रु-  
 वों को दण्ड देने वाला है न्यग्रो-  
 धो सब के ऊपर प्रीतिकरनेवा-  
 ला और मुलाने वाला भी है दु-  
 स्वरों आकाश से अधिक निर्म-  
 ल और संसार की उत्पत्ति का  
 कारण है अश्वत्थः जगत रू-  
 प है अर्थात् वह ऐसा है कि जड़  
 ऊपर और पालव नीचे चाणू-  
 रान्ध्रिनि पदनः चाणू और  
 अन्ध्रिजात रथसा को नाश क-  
 रने वाला है ॥ १०६ ॥ १०६ ॥  
 मू. सहस्रार्चिः सप्त जि-  
 वहः सप्तैधा सप्तबाहनः ।  
 अमूर्तिरनघोचिन्त्योभ-  
 यरुद्रय नाशनः ॥ १०७ ॥

श्री. सहस्रार्चिः अनन्त हैं कि र-  
 ग जिसके सप्तजिह्वः सात हैं  
 जिह्वा जिसके अर्थात् सातों दीप  
 की अलग स्वाणी हैं सप्तैधा  
 सात तरह के प्रकाश अग्निरूप

सुन्दर हैं संकल्प जैसे सद्गुरु प्र-  
 षिन्नी दात काल प्रशस्त दन्तुकोम-  
 वाला प्रशस्त दन्तुकोम दन्तुकोम  
 निकरु दहोसके प्रीति करेवाला प्रीति  
 न्यग्रो धो दहोसके प्रीति करेवाला प्रीति  
 भी अचानक प्रीति करेवाला प्रीति  
 अश्वत्थ जगत् रूप प्रीति करेवाला प्रीति  
 दन्तुकोम प्रीति करेवाला प्रीति  
 चानूर अन्ध्रिजात रथसा को नाश  
 अन्ध्रिजात रथसा को नाश

अश्लोक

सप्तैधः सप्तैधः सप्तैधः  
 सप्तैधः सप्तैधः सप्तैधः  
 सप्तैधः सप्तैधः सप्तैधः

मिका

सप्तैधः सप्तैधः सप्तैधः  
 सप्तैधः सप्तैधः सप्तैधः  
 सप्तैधः सप्तैधः सप्तैधः

प्राप्त होने वाला अर्थात् पृथ्वी का  
देने वाला है जैसे परशुरामजी ने  
अश्वमेध यज्ञ करके ऋषभ-  
जीश्वर को सम्पूर्ण पृथ्वी दक्षि-  
णा में दे दी नन्दः कदली के  
रुक्ष की तरह अच्छे फल का दे-  
ने वाला है कान्दः पृथ्वी का देने  
वाला है जैसे परशुरामजी ने पृ-  
थ्वी को दक्षिणा में दे दी फल-  
वन्तः मेघ की तरह अपने भक्तों  
को सुख देने वाला है पावनो  
सारा माव करके पवित्र कर देता  
है जलः प्रेने वाला नदी है ज-  
मृतानी जमृत का पीने वाला है  
जमृतवपुः सत है शरीर जि-  
स का सर्वत्रः सब का जानने  
वाला है सर्वतो मुखः सब  
तरफ है मुख जिसका ॥ १०५ ॥

मूः सुलभः सुव्रतः सिद्धः  
शत्रुनिच्छत्रुतापनः । न्य  
शोधो दुम्बरो श्वत्थद्याणू  
रान्ध्रिनिपूदनः ॥ १०६ ॥

टी. सुलभः सहज पूजा क-  
रने से मिल जाता है सुव्रतः

प्राप्त होने वाला अर्थात् पृथ्वी का  
देने वाला है जैसे परशुरामजी ने  
अश्वमेध यज्ञ करके ऋषभ-  
जीश्वर को सम्पूर्ण पृथ्वी दक्षि-  
णा में दे दी नन्दः कदली के  
रुक्ष की तरह अच्छे फल का दे-  
ने वाला है कान्दः पृथ्वी का देने  
वाला है जैसे परशुरामजी ने पृ-  
थ्वी को दक्षिणा में दे दी फल-  
वन्तः मेघ की तरह अपने भक्तों  
को सुख देने वाला है पावनो  
सारा माव करके पवित्र कर देता  
है जलः प्रेने वाला नदी है ज-  
मृतानी जमृत का पीने वाला है  
जमृतवपुः सत है शरीर जि-  
स का सर्वत्रः सब का जानने  
वाला है सर्वतो मुखः सब  
तरफ है मुख जिसका ॥ १०५ ॥

श्लोक  
सर्वत्रोत्पत्तिः सर्वत्रोत्पत्तिः  
शत्रुनिच्छत्रुतापनः । न्य  
शोधो दुम्बरो श्वत्थद्याणू  
रान्ध्रिनिपूदनः ॥ १०६ ॥

टी. सुलभः सहज पूजा क-  
रने से मिल जाता है सुव्रतः

मू. सुवर्णविन्दुरक्षोभ्यः  
सर्वबागीश्वरेश्वरः। म  
हाहूदोमहागर्तोमहा-  
भूतोमहानिधिः॥१०४॥

यै सुवर्णा बिन्दु ओंकारस्व  
है और यजुर्वेद में लिखा है कि स  
ब अक्षर सुवर्ण रंग के हैं रक्षो-  
भ्यः राग और द्वेष वालों से वि-  
कार को प्राप्त नहीं होता अर्था-  
त शत्रु मित्र किसी से उसको भ-  
य नहीं है अपनी जगह पर स्थि-  
त है सर्व बागीश्वरेश्वरः  
सब ब्रह्मादिकों का ईश्वर है  
महा हृदो बेजन्त है महा  
गत्तो ज्ञान बिना नहीं प्राप्त  
होता है महाभूतो बेजगेश-  
्वर बाला है महानिधिः बड़ा  
खजाना ज्ञानानन्द का है ॥१५॥

मू. कुमुदः कुन्दरः कुन्दः  
पर्जन्यः पावनो निलः । अ  
मृताशो मृतवपुः सर्वज्ञः  
सर्वतो मुखः ॥ १०५ ॥

श्री. कमलः पथी में जानकर को

اشلوک  
سین پند کر کشی حصہ سرب یا گیشو  
اقتورہ - مہا ہر دو مہا گرو مہا  
پنجو تو مہا بندھ -

۱۲۲  
 علیکا - شیرین بنڈ اڈنگ کار روپ ہر  
 اور بھر میرین لکھا ہی کہ تمام بدن مانند طلا،  
 کے ہی ترستو بھیمہ راگ اور دیش والوں  
 سے کچھ اسکو نقصان نہیں پہنچتا یعنی دوستی  
 و دشمنی داندیشہ و وسواس شیطانی سے بچ جگہ  
 نہیں جاتا ہمیشہ برقرار رہتا ہے شریک  
 باگیشور نشور، سب جیہ کلامان برتھا  
 وغیرہ کا الگ ہی مہاسر دو بہ انت ہی  
 مہا گرتو بغیر گیان کے نہیں پراپت ہوتا ہے  
 مہا جھو تو بہ ایشورج والا ہی مہا ندر  
 راخنا نہ ہی گیان اور آند کا۔

اشلوک  
گنده گنده گنده پرخینه باو  
ناله امرتا شومرت بپ  
سریکریه سربو کوه  
۱۰۵

گنگدہ پر تجوی یعنی زمین میں کاندکو

रत्ननाभः सुलोचनः । अ-  
र्को वाजसनः शृङ्गी जय-  
न्तः सर्वविज्जयी ॥ १०३ ॥  
श्री उद्भवः जन्म रहित और ज-  
गत का जन्म करने वाला है सुन्द-  
रः मङ्गल का मङ्गल और भा-  
ग्यवान है सुन्दो दया करने  
वाला और गुणवान है रत्नना-  
भः अच्छी है नाभि जिसकी अ-  
र्थात् लाल के सदृश प्रकाशित  
है सुलोचनः सुन्दर है नेत्र  
जिसके अर्को ब्रह्मारिकों से  
पूजित है सब देवता उसको  
पूजते हैं वाजसनः अन्न का  
देने वाला है अर्थात् सब प्रकार  
के अच्छे अच्छे भोजन देता है  
शृङ्गी मत्स्य रूप भगवान है  
अर्थात् प्रलय काल में मत्स्य  
रूप होकर जल में वास कर-  
ता है जयन्तः वे अन्त वीरों  
को जीता है जिसने अर्थात् को  
ईश्वर उस पर बल नहीं कर  
सकता है सर्वविज्जयी सब  
को जीतने वाला और जानने वाला है ॥ १०३ ॥

ریش زبا بجه سلو حنه - ارکو  
باجسته شیر کی حیثه سرب بچی -

لیکا

۱۰۳

او بجهوہ آپ جنم بہت ہر اور جگت کا  
جنم کر گیا والا ہر سندرہ نگلون کا گل  
اور صاحب اقبال ہر سندرہ و دیا کر گیا والا  
اور مع فضائل ہر ریش زبا بجه اچھی ہر  
جسکی یعنی مانند لعل کے روشن و درخشا  
ہر سلو حنه سندرہ بن نیر جیکے جینی شہ  
زیار کھتا ہر ارکو بر بھاد کوں سے پوجت  
ہر یعنی سب دیوتا اسکو پوجتے ہیں باجسته  
ان کا دینے والا ہر یعنی سب کو رزق بخشا  
شیر کی شہزادہ و پ بھگوان یعنی قیامت  
میں بصورت نہنگ بالا ہے آب قرار  
پاتا ہر حیثه بے انتہا دلاور و نکو صیتا  
ہر جسے یعنی سب دشمن اس سے مغلوب  
سرب بچی سب کا جیتنے والا  
اور سب کا جاننے والا ہے -

दुर्गो दुःख करके प्राप्त होता है अर्थात् योगी जनों के हृदय में कठिनता से जाता है दुःख रावासी दुःख करके योगी जन उसको हृदय में लाते हैं दुरारिहा दुष्टों और दानवों का मारने वाला है ॥ १०१ ॥

मू. शुभाङ्गो लोक सारङ्गः सुतंतुस्तंतुवर्द्धनः । इन्द्र कर्म्मामहाकर्म्मकृतकर्म्मकृतागमः ॥ १०२ ॥

श्री. शुभाङ्गो सुन्दर है अङ्ग जिसका लोक सारङ्ग भँवर होकर भक्त जनों की सुगन्धिलेने वाला है सुतंतुः अच्छा है विलार करने वाला जगत् का तंतुवर्द्धनः जगत् का बढ़ाने वाला है इन्द्र कर्म्मप्रतापवाला है महाकर्म्म बड़े हैं कर्म्म जिसके कृतकर्म्म किया है धर्म रूप कर्म्म जिसने कृतागमः रखा है वेद जिसने ॥ १०३ ॥

मू. उद्भवः सुन्दरः सुन्दो

दुर्गो दुःख करके प्राप्त होता है अर्थात् योगी जनों के हृदय में कठिनता से जाता है दुःख रावासी दुःख करके योगी जन उसको हृदय में लाते हैं दुरारिहा दुष्टों और दानवों का मारने वाला है ॥ १०१ ॥

श्लोक १०५  
शुभाङ्गो लोक सारङ्गः सुतंतुस्तंतुवर्द्धनः । इन्द्र कर्म्मामहाकर्म्मकृतकर्म्मकृतागमः ॥ १०२ ॥

श्री. शुभाङ्गो सुन्दर है अङ्ग जिसका लोक सारङ्ग भँवर होकर भक्त जनों की सुगन्धिलेने वाला है सुतंतुः अच्छा है विलार करने वाला जगत् का तंतुवर्द्धनः जगत् का बढ़ाने वाला है इन्द्र कर्म्मप्रतापवाला है महाकर्म्म बड़े हैं कर्म्म जिसके कृतकर्म्म किया है धर्म रूप कर्म्म जिसने कृतागमः रखा है वेद जिसने ॥ १०३ ॥

श्लोक १०५  
शुभाङ्गो लोक सारङ्गः सुतंतुस्तंतुवर्द्धनः । इन्द्र कर्म्मामहाकर्म्मकृतकर्म्मकृतागमः ॥ १०२ ॥

चतुर्भुवः धर्म अर्थकाम मो-  
क्षको उत्पन्न करने वाला है चतु-  
र्वेद विद् चारों वेद का ज्ञानेवा-  
ला है एक पात सब प्राणी एक  
हिस्सा है और बुद्ध है तीन हिस्सा  
अर्थात् एक चरण रखता है ॥१००॥

सू. सत्मावर्त्तो निवृत्ता-  
त्मा दुर्जयो दुरति क्रमः  
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरा-  
वासो दुरारिहा ॥१०१॥

श्री. सत्मावर्त्तो अज्ञानियों को  
जन्म मरण देने वाला है निवृ-  
त्तात्मा विषयभोग से हाठ डु-  
आ है मन जिसका दुर्जयो  
दुःख का के जीता जाय भक्तों  
को अर्थात् कोई उस पर प्रबल  
नहीं हो सकता है दुरतिक्रमः  
दुःख करके आलिङ्गन नहीं हो  
सकता अर्थात् बुद्धिका भी पहुँच  
ना कठिन है दुर्लभो दुःख कर  
के भक्तों को मिलता है अर्थात्  
घोर तपस्या करके उस तक मनु-  
ष्य पहुँचता है दुर्गमो दु-  
ख करके जानने में आता है

चित्र किया वह देहम अर्थात् काम भोगों का  
पिदा क्रिया लाइ मनी निको कारी वरुलत  
मरुद वरुलतारी अस से हल हुती है  
चित्र चित्र चारु वरुलतारी नाला है  
अक पाल सब प्रानी अक हल हल  
सुदह तीन हल मनी अक कल कल है

अश्लोक

समावर्त्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दुरति क्रमः  
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा

समा

समावर्त्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दुरति क्रमः  
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा  
यह बात है कि जिसका दुर्जयो  
दुःख का के जीता जाय भक्तों  
को अर्थात् कोई उस पर प्रबल  
नहीं हो सकता है दुरतिक्रमः  
दुःख करके आलिङ्गन नहीं हो  
सकता अर्थात् बुद्धिका भी पहुँच  
ना कठिन है दुर्लभो दुःख कर  
के भक्तों को मिलता है अर्थात्  
घोर तपस्या करके उस तक मनु-  
ष्य पहुँचता है दुर्गमो दु-  
ख करके जानने में आता है

को कहते हैं ॥ ६६ ॥ ६६ ॥

मू. चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहु-  
श्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।  
चतुरात्माचतुर्भावश्चतु-  
र्वैदविदेकपात ॥ १०० ॥

श्री. चतुर्मूर्तिः चार हैं मूर्ति  
जिसकी विराट रूप हिरण्यग-  
र्भ रूप माया युक्त रूप माया र-  
हित रूप चतुर्बाहुः चार हैं भु-  
जा जिसके शङ्ख चक्र गदा पद्म  
चतुर्व्यूहः चार हैं व्यूह अ-  
र्थात् पुरुष यथा श्रीकृष्ण बलदे-  
व प्रद्युम्न अनिरुद्ध और भी प्रथ-  
म शरीर पुरुष दूसरे चंद पुरुष अ-  
र्थात् शास्त्र तीसरे वेद पुरुष चौथे  
महापुरुष अर्थात् ब्रह्मा चतुर्ग-  
तिः चारों आश्रमों को फल देने वा-  
ला है चतुरात्मा अच्छा है आत्मा  
जिसका और ऐसा है कि शत्रुता भिन्न-  
ता लोभ अचेतन से रहित है और  
चित्त चेतन ज्ञान ज्ञानन्द से युक्त है

اشلوک

چتر مورتش چتر باہش چتر  
بیوش چتر گتہ چتر آتما چتر  
بھاوش چتر بید بیدیک پات

ٹیکا

چتر مورتی چار ہیں موت جسکے معنی  
برکت ہر شے گرجہ مایا سہت مایا ریت  
اول موت کل عالم دوم صوت بید سوم  
صوت دنیا میں کچھ عمل رکھتا ہی چارم  
لاہوت چتر باہش چار ہیں بجا جسکے  
سنگھ جگر گدا یدم چتر بیوش چار ہیں  
بیوش معنی پریش شری کرشن بلکہ نو پریش  
اندر دھ اول مثر پریش دوم چند پریش  
یعنی شاستر سوم بید پریش چارم مہا پریش  
یعنی بر بھا چتر گتہ چاروں آشرم کو مل  
دینے والا ہی چتر آتما اچھا ہی آتما جسکا  
یعنی یہ وہ ذات ہے کہ چاروں صفوں میں  
دوستی و دشمنی و طبع و غفلت سے پاک ہے  
اور چار مورت رکھتا ہی دل و عقل و خودی و اندیشہ



बाला है ॥ ६६ ॥ + ॥ + ॥  
 सृ. तेजोवृधो नेव का वंशाने  
 सर्वश स्रभृताम्बरः ।  
 प्रग्रहीनिग्रहीन्यग्रो नैक  
 मृङ्गो गदाग्रजः ॥ ६६ ॥  
 श्री. तेजोवृधो नेव का वंशाने  
 बाला है अर्थात् सूर्य स्वर्ग होक  
 र पल्लवकाल का जल बरसाता  
 है अर्थात् धरा शोभा का धारण  
 करने वाला है सर्वश स्रभृ  
 तांम्बरः सब प्राण धारण क  
 रने वालो में प्रग्रही है प्रग्रही म  
 ती नीच स्थिति में है मार्गो  
 से रखा करने वाला है निग्रही  
 ऊपरी शक्ति करके सब प्राणि  
 यों को प्रहरण करने वाला है व्य  
 ग्रो नाश से रहित है नैक मृ  
 ङ्गो चारो वेद मस्तक में जिसके  
 अर्थात् चारो वेद के उच्चस्थान  
 रखता है गदाग्रजः बलदेव  
 रूप अर्थात् गदानाम वसुदे  
 वजी का है और वसुदेवजी  
 से हलधरजी उत्पन्न हुवे  
 इस से गदाग्रज बलदेवजी

करने वाला अर्थात् मत्तल बांर में का ही -  
 अश्लोक  
 ११  
 तेजोवृधो नेव का वंशाने  
 सर्वश स्रभृताम्बरः ।  
 प्रग्रहीनिग्रहीन्यग्रो नैक  
 मृङ्गो गदाग्रजः ॥ ६६ ॥  
 श्री. तेजोवृधो नेव का वंशाने  
 बाला है अर्थात् सूर्य स्वर्ग होक  
 र पल्लवकाल का जल बरसाता  
 है अर्थात् धरा शोभा का धारण  
 करने वाला है सर्वश स्रभृ  
 तांम्बरः सब प्राण धारण क  
 रने वालो में प्रग्रही है प्रग्रही म  
 ती नीच स्थिति में है मार्गो  
 से रखा करने वाला है निग्रही  
 ऊपरी शक्ति करके सब प्राणि  
 यों को प्रहरण करने वाला है व्य  
 ग्रो नाश से रहित है नैक मृ  
 ङ्गो चारो वेद मस्तक में जिसके  
 अर्थात् चारो वेद के उच्चस्थान  
 रखता है गदाग्रजः बलदेव  
 रूप अर्थात् गदानाम वसुदे  
 वजी का है और वसुदेवजी  
 से हलधरजी उत्पन्न हुवे  
 इस से गदाग्रज बलदेवजी

तेजोवृधो नेव का वंशाने  
 बाला है अर्थात् सूर्य स्वर्ग होक  
 र पल्लवकाल का जल बरसाता  
 है अर्थात् धरा शोभा का धारण  
 करने वाला है सर्वश स्रभृ  
 तांम्बरः सब प्राण धारण क  
 रने वालो में प्रग्रही है प्रग्रही म  
 ती नीच स्थिति में है मार्गो  
 से रखा करने वाला है निग्रही  
 ऊपरी शक्ति करके सब प्राणि  
 यों को प्रहरण करने वाला है व्य  
 ग्रो नाश से रहित है नैक मृ  
 ङ्गो चारो वेद मस्तक में जिसके  
 अर्थात् चारो वेद के उच्चस्थान  
 रखता है गदाग्रजः बलदेव  
 रूप अर्थात् गदानाम वसुदे  
 वजी का है और वसुदेवजी  
 से हलधरजी उत्पन्न हुवे  
 इस से गदाग्रज बलदेवजी

मू. ज्ञानानीमानदोमा  
न्योलोकस्वामीत्रिलोक  
धन । सुमेधा मेधयोधनः  
सत्यमेधा धराधारः ॥ ६८ ॥

३. ज्ञानी नहीं है मान जि-  
सके अर्थात् किसी बात पर उस  
को धमका नहीं है मान दी न  
जानियों को मान देने वाला अ-  
र्थात् दुर्जनों को दण्ड देने वाला  
और सज्जनों को आदर करने वाला  
है मान्यो मानन योग्य है अर्थात्  
उसको बड़ा समझकर सब पूजते  
हैं लोक स्वामी सब लोको  
का स्वामी है त्रिलोक धृक्  
तीनों लोक का धारण करने वाला  
है और जिसके तेज को कोटि नहीं सं-  
भाल सकता सुमेधा सुन्दर है बुद्धि  
जिसकी अर्थात् जगन्मन्त्र मानी है  
मेधयो जगन्मेध यज्ञ से उत्प-  
न्न होने वाला है जैसे रामचन्द्र ज-  
वतार धन्यः सब कार्य पूरा  
हैं जिससे सत्य मेधा सत्य  
है बुद्धि जिसकी धराधारः  
सब पृथ्वी का धारण करने

اشکوک  
4a  
اَنَامَنِي مَان دَو مَانُو ک سَوَامِي  
سَر کُوک و هَر سَمِي حَامِي  
بُو وَ حَقِي سَمِي مَد هَار هَر و هَر

۹۰  
لیکھا  
آہائی نہیں ہوا کہ جسکو یعنی اسباب دولت  
ختم ہے کہ فنا پذیر ہے اور نہیں کہ تا  
ماں کو بیکار و کوکھ دولت و غوری چو  
والا ہی اور نیک مرد کو کوکھت - مانیو  
پوچھنے کے لائق ہے اور اسکو بزرگ سمجھ کر  
پرستش کرتے ہیں لوگ سوامی  
لوگ کا مالک ہے تر کوک و دھرم  
یونیون لوگ کا دھارن کر نیوالا یعنی قائم  
ہو ارنڈہ ہر سہ عالم ہی اور جسکے بیج کو کوئی  
ستہ نہیں سکتا سمجھدھا سندھ رہا  
بقدر جسکی یعنی عقل بقدر کمال رکھتا ہے  
سمجھدھا جو آسمندہ جگت سے پیدا  
ہو نیوالا ہی جسے شری رام چند کاوتا  
وہاں سے کام توڑے ہوں جسکے شری  
شری ہی جسکی دھرم دھرم پڑھ کر دھار

کرنے والا ہے ॥ ۶۶ ॥

मू. सुवर्णवर्णो हे माङ्गोव-  
राङ्गश्चन्दनाङ्गदी । वीर  
हा विषमः शून्यो धृताशी  
रचलश्चलः ॥ ६७ ॥

श्री. सुवर्ण वर्णो सुवर्ण का ऐ  
सा रङ्ग है अर्थात् ज्योतिस्वरू  
प हे हे माङ्गो सुवर्ण का ऐसा रं  
ग है जिसका वराङ्गः अक्ष है  
अङ्ग जिसका चन्दनाङ्गदी  
ज्ञानन्द देने वाला है विजायत  
जिसका वीरहा हिरण्यकश्य  
प ऐसे शूरवीरों का मारने वाला  
है विषमः जिसके बराबर  
कोई नहीं है शून्यो अच्छों से  
अच्छा है और अज्ञान हीं खता है धृ-  
ताशीः किसी का आसरा नहीं  
रखता है अचलः ज्ञान से न-  
हीं चला हुआ है अर्थात् कोई रू  
प उसके नहीं है चलः वायु  
रूप होकर चलता है ॥ ६७ ॥

کرنے والا ہے -

اشلوک

سیرن بر تو پیمائنگو بر انگشت  
چند نامگ گدی - سیر نامگ  
شور بود هر تاشیر حلیش چله -

سیکا

سیرن بر تو سونے کا ایسا رنگ ہو چکا  
یعنی جو ت سروپ ہی پیمائنگو سونے کا ایسا  
اچھا رنگ ہو چکا بر انگشت سریشٹھ ہو انگشت کا  
چند نامگ گدی آئند دینے والا ہو بازو  
چکا پیر نام بر تاشیر ایسے شور بیر و ن کو  
مار نیوالا ہو پیمائنگو طاق و واحد ہی یعنی ایک  
برابر کوئی نہیں ہی شور نیوالا چھون سے  
بھی اچھا ہی یعنی صفت والوں سے بھی بہتر  
ہی اور مانند ہوا کے جسم نہیں رکھتا ہی  
دھر تاشی آسار بہت ہی یعنی کسی سے  
کسی بات کی امید نہیں رکھتا ہی چلہ اصل  
یعنی قائم و لازوال مستقل و بے خوف ہی  
چلہ با یو روپ ہو کر چلتا ہی یعنی بصورت  
او ہو کر روان ہوتا ہی -

नहीं है प्रत्यक्ष मूर्ति जिसकी चर्चा  
त उसकी उपमा किसी मूर्ति के वा-  
य नहीं कर सके प्रत्यक्ष मूर्ति से  
गाय है मूर्ति जिसकी शताननः  
वे प्रभास है मुख जिसके ॥ ८५ ॥

युक्तं किं कः किं  
यत्तत्पदमनुत्तमं । लोक  
नो बत्सलः ॥ ८६ ॥

मै. एकी केवल वाचात एक है  
नैकः गाय से अनैक रूप है स-  
वः यत्त रूप है और सोम नाम वा-  
य का है जो चक्षु से पैदा होती है  
कः सुख रूप है किं विनाशे यो  
यत्त यत्त शब्द वस्तु आकार  
तत्त पद मोक्ष होने वाले पुस्वनि  
सको प्राप्त हो अनुत्तम नहीं है  
उत्तम उससे जो ई लोक बन्धु लो-  
को के बन्धु अर्थात् सब के भरो पैदा  
स्थान है लोकनाथो लोको को स-  
च्चे मार्ग में ले जाता है और मद की  
तामना पूर्ण करता है भावो  
बधु वंश में उत्पन्न हुआ है भ-  
नो बत्सलः प्रतीति पर

नहीं है प्रतीति पर प्रतीति पर प्रतीति पर  
प्रतीति पर प्रतीति पर प्रतीति पर  
प्रतीति पर प्रतीति पर प्रतीति पर  
प्रतीति पर प्रतीति पर प्रतीति पर

अश्लोक १५  
अश्लोक १५  
अश्लोक १५  
अश्लोक १५

अश्लोक १५  
अश्लोक १५  
अश्लोक १५  
अश्लोक १५

आनन्द को देने वाला है हृषीकेश-  
नन्द रूप है दुर्द्वारो त्या दुःख क-  
रके धारण करते है योगी जिस को  
अर्थात् बड़े परिश्रम से प्राप्त होता  
है अपराजितः किसी से जीता  
नही जाता अर्थात् गुण प्रकट  
किसी से नहीं हारता ॥ ६४ ॥

मू. विश्वमूर्तिर्महामूर्ति  
दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् । अ-  
नेकमूर्तिरव्यक्तः शतमू-  
र्तिप्रशताननः ॥ ६५ ॥

म. विश्वमूर्तिः जराचर है मू-  
र्ति जिसकी अर्थात् सब मूर्ति उस  
की मूर्ति है और वह सब का प्राण है  
महामूर्तिः प्रमाण रहित है मूर्ति  
जिसकी अर्थात् प्रकाश रूप होकर  
संसार में प्रकट हुआ है दीप्तमू-  
र्तिः ज्ञानमूर्ति है अर्थात् मनोहर  
रूप है अमूर्तिमान् मूर्ति रहि-  
त है अर्थात् देह नहीं रखता है  
अनेकमूर्तिः भक्तों की अनुग्र-  
ह के वाले अनेक हैं मूर्ति उसकी  
अर्थात् मूर्ति की रक्षा के वाले अ-  
वतार धारण करता है अव्यक्तः

आन्द को देने वाला है हृषीकेश  
दुर्द्वारो त्या दुःख करके धारण करते  
हैं योगी जिस को अर्थात् बड़े परिश्रम से  
प्राप्त होता है अपराजितः किसी से जीता  
नहीं जाता अर्थात् गुण प्रकट किसी से  
नहीं हारता ॥ ६४ ॥

अश्लोक

مَشْمُورٌ تَرَمَّا مَوْتٌ تَرَدِيَتْ مَوْتٌ  
مَوْتٌ مَانٌ - اَنِيَكٌ مَوْتٌ  
بَرِيكَةً ثَمَّتْ مَوْتٌ شَتَانِيَّةٌ -

शिका

مَشْمُورٌ تَرَمَّا مَوْتٌ تَرَدِيَتْ مَوْتٌ  
مَوْتٌ مَانٌ - اَنِيَكٌ مَوْتٌ  
بَرِيكَةً ثَمَّتْ مَوْتٌ شَتَانِيَّةٌ -  
تمام عالم میں پیدا ہوئی ہے مَوْتِ گمان  
مَوْتِ مَانِ یعنی بصورتِ خوب و دلکش ہے  
اَنِيَكٌ مَوْتِ مَانِ کوئی صورتِ نہیں رکھتا ہے  
اَنِيَكٌ مَوْتِ مَانِ کی بجائی کیو اسطے  
بہت ہیں مَوْتِ اُسکی یعنی واسطے محافظت  
خلایق کے اوتار دھارن کرتا ہو اُسکی

ऐश्वर्य जिसका और सृष्टिरूप  
होकर प्रकट होता है सत्य-  
परायणः सत्पुरुषों का स्था-  
न है शूरसेनो शूरवीर है ते-  
ना जिसकी हनुमंतादि यदु-  
श्रीष्टः पादद्वों में श्रेष्ठ है स-  
न्निवासः सत्पुरुषों का आ-  
सन है सुयामुनः बच्चे हैं  
श्री राम और श्री कृष्ण जिनको  
गोप प्यारे हैं शर्धातु जिसके व-  
न्धु लोग बच्चे हों और ग्याल  
जिसके साथ हों ॥ ८३ ॥ ८३ ॥

सुभूतावासो वा सुदेवः  
सर्वा मुनिलयोनलः ।  
दर्पद्वादर्यदोहप्रोदुद्धरो  
त्वा पतजितः ॥ ८४ ॥

श्रीभूतवासो प्राणियोन्मास्थ  
 नैवा सुदेवः सब जगत्को  
 देखने वाला है और प्रकाशक है  
 सर्वो सुजिलयो सब प्रा-  
 णियों का आसरा है नलः पू-  
 र्णसाक्षी स्वता है दर्पहा गर्व  
 का दूर करने वाला है दर्पदो

اور شورشِ جہاں کا یہ وہ ذات ہے کہ بصورتِ  
عالم کے ظہور کرتا ہی سنت پر آئینہ ہے  
لوگوں کا آئینہ ہی مہنی مقامِ سالکانِ راہِ وحدت  
شورشِ بیخود بنا دے ہر فوج جسکی مثل ہنومان غیر  
چند شترِ کشتہ جاوون میں بزرگ تر ہے  
سکنِ نوا سے اچھے لوگوں کا آئینہ  
پناہ ہی سیامندہ اچھے ہیں شری محمدؐ  
اور شری کرشن مہاراج جنگو گوب پیارے  
ہیں جسکے دلہنگان اچھے ہیں گوال ہمدرد ہیں ۔

اشفاق

92

بختیاریا سو باسد یوه سر بانیو  
نله - درپ نادریپ دو دریپو  
دردهر و تشاپراچته -

4

96

۱۰  
 چھوٹا یا سبب چاندرو کا مقام ہے  
 یا سبب یہ تمام عالم کا دیکھنے والا اور پرکش  
 کر نیو الہی صمد یا سبب پرانیوں کا آسرا ہے  
 یعنی تمام عالم کی امید گاہ ہے ملکہ قدرت کامل  
 کے ہستی درجہ ہا گرب کا دُر کر نیو الہی صمد  
 مخالف راہ حق بن اٹکا غور کھودیتا ہے دُر کر نیو



स्तोत्रं जिस कार्य के स्तुति करै  
स्तुति: गुणवाला है स्तोता  
भीष्म आदि रूप होकर स्तुति  
करनेवाला है राणाप्रियः युद्ध  
है प्यारा जिसको अर्थात् भक्तों  
की रक्षा के वास्ते सुदर्शनचक्र  
रखता है पूर्णाः सब तरह से पू-  
र्ण है पूरयिता भक्तों की का-  
मना पूर्ण करने वाला है अ-  
र्थात् सब सामर्थ्य शीघ्र मनो-  
र्थ मनुष्यों को देता है पुण्यः  
पवित्र रूप है अर्थात् अपने  
नाम स्मरण से मनुष्यों के पापों  
को शुद्ध करता है पुण्य की-  
र्तिः सब कीर्ति उसकी पवित्र  
है अपना मयः विवाद रहित  
है अर्थात् किसी तरह का रोग  
दोष नहीं रखता है ॥६१॥॥

मू. मनोजवस्तीर्यकरोव  
सुरेतावसुप्रदः । वसुप्र  
दोवा सुदेवो वसुर्वसुम  
ना हविः ॥ ६२ ॥ ६२ ॥

श्री. मनोजबः मनकी  
तरह है वेग जिसका अर्थात्

استخوانی که در شکم است و در میان ریه ها  
استخوان کبوتر نام دارد و این استخوان را  
روپ میگویند که از آنست که نوک لایه ران پرینه  
جمله های بسیار جگه یعنی جنگ کو دست رگها  
بر او رسد شش چکر واسطه محافظت خلق که گشتا  
هی فوریه پورن هی صنی سب قدرت اور  
سب آرزو اسکو حاصل بین فوریت با بکلون  
کی سب کامنا پوری کرتا ہی یعنی سب قدرت  
وارزو آدمی کو عطا کرتا ہی چشمیه پوتیر  
روپ هی یعنی اپنی یاد کردنو لو کر سب  
گناه معاف کردیا هر حق کثرت  
پوتیر هر کثرت جسکی یعنی سب اوصاف ایکن  
بزرگترین انامیه بود و تربت هی یعنی  
امر اض ظاہری و باطنی زمین رکعتا ہی -

اشکر

منوج و س پیڑم کروئیں  
ریتا بس پردہ۔ بس پردہ  
باسدیو و بس بس مشاہیر۔

۹۷  
شیکا  
منوچ و ه من کی طرح منوچیک جسکا یعنی



अर्थात् नामन रूप महाकर्मा  
बड़ा है कर्म जिसका अर्थात् प्रमाण  
सृष्टि का रचना उसी काम  
म है महातेजो बड़ा है तेज जि  
सका अर्थात् सब तरह की बड़ी  
योग्यता स्वता है महोरगः  
वासुकि नाग अर्थात् सब सोंपों  
में बड़ा है महा क्रतुः अश्व  
मेध यज्ञ रूप है महा यज्ञ  
बड़ी यज्ञ करने वाला है अर्थात्  
न जप तप में सब से बड़ी यज्ञ है  
महा यज्ञो जप यज्ञ रूप है  
महा हविः सम्पूर्ण जगत्  
स्थूल सूक्ष्म हो कर लीन करदे  
महा का अर्थ बड़ा है और ह-  
वि का अर्थ हवन है ॥ ६० ॥

मू. स्तव्यः स्तवप्रियः स्तो-  
त्रस्तुतिः स्तोतारणप्रियः  
पूर्णाः पूरयिता पुण्यः पुण्य  
की निर्णामयः ॥ ६१ ॥

म. स्तव्यः स्तुति करने योग्य है  
अर्थात् उसकी स्तुति सब करते  
हैं वह किसीकी स्तुति नहीं करता  
स्तवप्रियः स्तुति है प्यारी जिसको

कर्म मरद ह्दम और बावुन रूप से है  
महा कर्मा बड़ा है कर्म जिसका अर्थ  
एक ही कर्म ही काम ही महा तेजो  
बड़ा है तेज जिसका अर्थ सब नफ़िलत  
अतम रक्ता है मरु रक्ता बासक नाक  
यिनी सब सानुन में बड़ा है महा क्रतु  
अश्व मेध यज्ञ रूप है महा यज्ञ  
बड़ी यज्ञ करने वाला है अर्थात्  
न जप तप में सब से बड़ी यज्ञ है  
महा यज्ञो जप यज्ञ रूप है  
महा हविः सम्पूर्ण जगत्  
स्थूल सूक्ष्म हो कर लीन करदे  
महा का अर्थ बड़ा है और ह-  
वि का अर्थ हवन है ॥ ६० ॥

स्तुति करने योग्य है  
अर्थात् उसकी स्तुति सब करते  
हैं वह किसीकी स्तुति नहीं करता  
स्तवप्रियः स्तुति है प्यारी जिसको

स्तुति करने योग्य है  
अर्थात् उसकी स्तुति सब करते  
हैं वह किसीकी स्तुति नहीं करता  
स्तवप्रियः स्तुति है प्यारी जिसको

१०. ब्रह्मायो ब्रह्माणं का क-  
 ल्याणकरनेवाला है अर्थात् जो  
 तप करते हैं ब्रह्म को जानते हैं  
 उनको भिन्न रखता है ब्रह्म  
 रुद्र तप करने वाला है ब्रह्मा  
 तप रूप अर्थात् विद्या ज्ञान आ-  
 नन्द से परिपूर्ण सदा सर्वदा बना  
 रहता है ब्रह्म ब्रह्म विबर्ह-  
 नः तप का बढ़ाने वाला है ब्र-  
 ह्म विद् ब्रह्म जानने वाला अ-  
 र्थात् वेद का जानने वाला है ब्रा-  
 ह्मणी ब्रह्मण होकर वेद पदा-  
 वै अर्थात् अवतार धारण करके  
 सब देखता है ब्रह्मी देव बाणी ब्रा-  
 ह्मणों का मालिक है अर्थात् वेद  
 की मूर्ति है ब्रह्म जो ब्रह्म का ज्ञा-  
 नने वाला है अर्थात् वेद रूप है  
 ब्रह्माण प्रियः ब्रह्माण प्या-  
 रे है जिसको ॥ ८८ ॥ ८९ ॥  
 सू. महाक्रमो महा कर्मो  
 महातेजो महोरगः । स-  
 हा क्रतुर्महायज्वा महाय-  
 जो महा हविः ॥ ९० ॥  
 १०. महाक्रमो बड़े हैं कर्म जिसके

११. ब्रह्मण्यो ब्रह्माणं का क-  
 ल्याणकरनेवाला है अर्थात् जो  
 तप करते हैं ब्रह्म को जानते हैं  
 उनको भिन्न रखता है ब्रह्म  
 रुद्र तप करने वाला है ब्रह्मा  
 तप रूप अर्थात् विद्या ज्ञान आ-  
 नन्द से परिपूर्ण सदा सर्वदा बना  
 रहता है ब्रह्म ब्रह्म विबर्ह-  
 नः तप का बढ़ाने वाला है ब्र-  
 ह्म विद् ब्रह्म जानने वाला अ-  
 र्थात् वेद का जानने वाला है ब्रा-  
 ह्मणी ब्रह्मण होकर वेद पदा-  
 वै अर्थात् अवतार धारण करके  
 सब देखता है ब्रह्मी देव बाणी ब्रा-  
 ह्मणों का मालिक है अर्थात् वेद  
 की मूर्ति है ब्रह्म जो ब्रह्म का ज्ञा-  
 नने वाला है अर्थात् वेद रूप है  
 ब्रह्माण प्रियः ब्रह्माण प्या-  
 रे है जिसको ॥ ८८ ॥ ८९ ॥  
 सू. महाक्रमो महा कर्मो  
 महातेजो महोरगः । स-  
 हा क्रतुर्महायज्वा महाय-  
 जो महा हविः ॥ ९० ॥  
 १०. महाक्रमो बड़े हैं कर्म जिसके

अर्थवाला है अर्थात् उसके सब मनोर्थ सिद्ध होते हैं कान्तः सुन्दर रूप है कृतागमः वेद को शुद्ध करने वाला है अर्थात् सब विद्याओं को उसी ने उत्पन्न किया है अपनिर्दृश्य वपुः सत्य रूप आनन्द रूप है और यह भी है कि वह कोई रूप और गुण नहीं रखता है विष्णुः भक्तों के हृदय में प्रवेश करने वाला है और पृथ्वी से आकाश तक व्याप्त होकर स्थित है बीरो भूरावीर है अर्थात् सबसे अधिक बल रखता है अनन्तो अविनाशी है अनन्त है धनः वज्रयः दिग्विजय में सब धन को जीत लेता है अर्थात् अर्जुन व राजा रूप हो कर लोगों से बहुत खेल लेता है ॥८८॥८८॥

मू. ब्रह्माणो ब्रह्मकृद् ब्रह्मा ब्रह्मब्रह्मविवर्धनः ।  
ब्रह्मविद् ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मजो ब्राह्मणप्रियः ॥८९॥

ارٹھ والا ہی مینی اسکی سب مرادیں پوری ہوتی ہیں کائناتہ سندروپ ہی مینی بیجا کو اختیار کرتا ہی کرتا گمہ بنید کو شددہ کرنے والا ہی مینی سب شاستر اور علوم اسی نے پیدا کیے ہیں -  
انرویشیہ بیہ ست روپ آند روپ سچداتند روپ ہے اور یہ بھی کہ وہ کوئی صفت نہیں رکھتا ہی لیشہ بھکتوں کے ہر دس میں پرویش کر نوالا ہی یہ وہ ذات ہے کہ زمین سے آسمان تک محیط ہو کر قائم ہی ہو و شور میر ہی مینی قوت سے زیادہ رکھتا ہی انفتو اباشی ہو بے انت ہی وھنچیمہ دگ برجین سب دھن کو جیت لیتا ہے مینی بھوت ارجن اور راجا کے ہو کر لوگوں سے دولت لیتا ہے -

اشلوک

برہمنیو برہم کر د برہما برہم  
برہم برہم دھنہ - برہم برہم  
برہمی برہمگیو برہمن پر یہ -

वीरः शरवीर है शूरः शरसेन  
के बंश में पैदा हुआ है शौरि-  
जने प्रसरः इन्द्र आदिका  
ईश्वर है त्रिलोकात्मा ती-  
नों लोक का जीव है त्रिलो-  
कोष्ठाः तीनों लोकों का मा-  
लिक है अर्थात् तीनों लोक उ-  
सकी आज्ञा में हैं के शवः  
सूर्यों की कान्ति है अर्थात् सूर्य  
चन्द्रमा का मालिक है और  
के शव उसको कहते हैं जो स-  
ब तरह की सामर्थ्य रखता हो  
के शिवा केशी दैत्य का मा-  
नेवाला है हरिः अवगुणका  
मिटानेवाला है ॥८७॥८७॥

यू. कामदेवः कामपालः  
कामीकान्तः कृतागमः  
अनिर्देश्यवपुर्विह्मुर्वी  
रोजन्तो धनन्तयः ॥८८॥

१०. **कामदेवः** कामना का देने वाला है और प्रकाश रूप है काम **पालः** भक्तों की कामना का पूरण करने वाला अर्थात् सब कामनार्थ पूरण करने वाला है **कामी**

ہیرہ شور ہیر یعنی شجاع ہر شورہ  
شور بین کے ہنس میں پیدا ہوا ہے  
شور حشیشورہ انڈر وغیرہ کا بھی  
مالک ہر تر لو کا تاتینون لوک کی اما  
ہر یعنی ہر سہ عالم کی جان ہر تر لو کیشہ  
تینون لوک کا مالک ہر یعنی ہر سہ عالم ذات  
حکم اسکے ہیں کیشہ سورجون کی روشنی  
ہر یعنی یہ وہ ذات ہر کہ حسب خطوط شجاع  
آفتاب و ماہتاب کا ہی اور جو سب طرح کی  
قوت و قدرت رکھتا ہو اسکو کیشہ کہتے ہیں۔  
کیش مالکیشی نام دیت کا ماریو الا ہے  
ہرہ اوگن کا مٹانے والا ہی۔

اشکر

کام دیوہ کام پالہ کامی کاشته  
کرتا گمہ - ایز ویشیہ پیریشتر  
پیر و نشو و ہنجیمہ

6

کاشی کا تیل تو وہ کاشی کا دھپنہ والا اور پیر کاشی  
روپ ہی کا مہ پالہ جھکتو کلی کاشی کی چھان  
والا یعنی سبکی آرزو پوری کرنی والا ہی کامی

पूजने के योग्य है अर्चितः पूजित  
 है कुम्भो सागरात्सागः जिसके भी-  
 तर है विशुद्धात्मा विशुद्ध है आ-  
 त्मा जिसकी अर्थात् अपनी प्रशंसा  
 कराने का अभिलाषी नहीं है वि-  
 शोधनः सबका शुद्ध करने वा-  
 ला है अर्थात् जो कोई उसका स्म-  
 रण थोड़ा भी करता है उसके पापों  
 को दूर कर देता है अनिरुद्धो  
 नहीं है किसी से रुकने वाला अर्थात्  
 निष्काम और निरभिलाषी है प्र-  
 तिरथः नहीं है पक्ष जिसके अ-  
 र्थात् तरफ दारी नहीं है और उस  
 के बराबर कोई नहीं है प्रद्यु-  
 म्नी बहुत है जात जिसकी अ-  
 र्थात् दौलत बहुत है मितवि-  
 क्रमः बे प्रमाण हैं पराक्रमजि-  
 नके अर्थात् उसके बराबर किसी  
 को सामर्थ्य नहीं है ॥ ८६ ॥  
 मूः कालनेमिनिहाचीरः शु-  
 रः शौरिर्जनेश्वरः । त्रिलो-  
 कात्मानिलोके शः केश-  
 वः केशिहाहरिः ॥ ८७ ॥  
 गीः कालनेमिनिहा कालने-  
 मिहासका मारने वाला है

बوجने के लायक ही अर्चित हो जा गया है  
 कुम्भो सागरात्सागः सभी समान हैं  
 अन्तर ही भिन्न है जहाँ तक  
 दिल जहाँ अपनी तिकी की तुरिफ करानिका  
 चाहते हैं वे भिन्न हैं  
 पाक कर दिया है वे दात हो के अगर कौन  
 भी याद अस्की करे तो अस्को गनाहों से या  
 कर दिया है अन्तर दूखों में किसी से रुकने  
 वाला अर्थात् लाटूच और प्रोअसी प्रोअसी  
 नहीं है अर्थात् प्रोअसी प्रोअसी  
 बराबर कौन नहीं है प्रोअसी प्रोअसी  
 दात जहाँ अर्थात् दात जहाँ अर्थात्  
 ब्रह्मन्म है अन्तर्हिन प्रोअसी प्रोअसी  
 बराबर कौन अर्थात् दात जहाँ अर्थात्

अश्लोक

कालनेमिनिहाचीरः शूरः  
 क्षीरः क्षीरः क्षीरः क्षीरः  
 क्षीरः क्षीरः क्षीरः क्षीरः  
 क्षीरः क्षीरः क्षीरः क्षीरः

कालनेमिनिहाचीरः शूरः

नहीं है अर्थात् उससे बड़ा और  
 कोई नहीं है शास्त्रतः स्थिरः  
 निरन्तर और स्थिर है अर्थात् सदा  
 बच रहता है कभी नाश नहीं होता  
 भूषाणी पृथ्वी में गहन करता है  
 जैसे श्री राम चन्द्रावतार और ऐसा  
 है कि पृथ्वी और जल पर शयन क-  
 रता है भूषाणी पृथ्वी की शोभा है  
 अर्थात् अपनी इच्छा से अवतार  
 धारण करके पृथ्वी को अपने प्रका-  
 श से प्रकाशित किया भूतिः स-  
 त्य रूप है विशोकः शोक से रहि-  
 त है अर्थात् आनन्द रूप है शो-  
 क नाशनः भक्तों का शोक दू-  
 र करने वाला है अर्थात् जो उस  
 की शरण जाता है उसका सब  
 दुःख दूर कर देता है ॥ ८५ ॥

मू० अर्चिष्मानर्चितः कु-  
 म्भो विशुद्धात्मा विशोधनः  
 अनिरुद्धो प्रतिरथः प्रद्यु-  
 म्भो मित विक्रमः ॥ ८६ ॥

श्री० अर्चिष्मान् चैतन्य प्रकाश  
 है अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश  
 सब उसको पूजते हैं और सब के

नहीं है यानी अस् से बزرग़्तर कौन नहीं है  
 शास्त्रोत्तम स्तुति स्तुति स्तुति स्तुति  
 यानी हमेशा ताम् है और मृत नहीं रहता है  
 भूषाणी पृथ्वी पर पत्थरों की भाँति जैसे  
 भूरी राम चन्द्रावतार परिये वह दात है कि भू-  
 री पर आराम करता है भूषाणी पृथ्वी  
 की शोभा है यानी भूषाणी अपने अंतरालों  
 अपने नूर से भूषाणी को सुन्दर करता है भूषाणी  
 सब रूप है भूषाणी कि रंग रंग रंग रंग  
 दूर से यानी कौन रंग नहीं रहता है भूषाणी  
 बसत आराम है शोक नाशने  
 भूषाणी का दूध दूर करता है यानी जो भूषाणी  
 भूषाणी होना है सब दूध दूर करता है

अश्लोक  
 अर्चिष्मान् अर्चितः कु-  
 म्भो विशुद्धात्मा विशोधनः  
 अनिरुद्धो प्रतिरथः प्रद्यु-  
 म्भो मित विक्रमः ॥ ८६ ॥

श्री० अर्चिष्मान् चैतन्य प्रकाश  
 है अर्थात् ब्रह्मा विष्णु महेश  
 सब उसको पूजते हैं और सब के

गी. स्वप्नः अच्छे हैं नेत्र जिसके स्वप्नः  
 अच्छे हैं अङ्ग जिसके शतानन्दो है  
 कर्णोंतरह के आनन्द का रूप है नन्दिः  
 आनन्द का रूप है ज्योतिः  
 गी. गी. श्रवणः ज्योतिः गण कर के  
 ईश्वर है अर्थात् सूर्य चन्द्रमाता-  
 रा गगान् अग्नि आदि सब उसके  
 प्रकाश से प्रकाशित है विजि-  
 तात्मा जीता है जिसने मन अ-  
 पना विषय त्याग नहीं है परा-  
 धीन आत्मा जिसका अर्थात्  
 कोई उसको बुद्धि के द्वारा जी-  
 त नहीं सकता सत्कीर्तिः अ-  
 र्थ है कीर्ति जिसकी छिन्न-  
 संशयः दूर है संदेह जिसके  
 मू. उदीर्णः सर्वतश्च सुर-  
 नीशः शास्यतः स्थिरः । भू-  
 शयो भूषणो भूतिर्विशोकः  
 शोक नाशनः ॥ ८५ ॥

गी. उदीर्णः सबसे अधिक है  
 सर्वतश्च सुसुखकारि देने वा-  
 ला है अर्थात् सब सृष्टि की आँख  
 है अनीशः जिसका कोई स्वामी

सुकेशः अच्छे हैं नेत्र जिसे सुकेश  
 अच्छे हैं अङ्ग जिसे शतानन्दो है  
 कर्णोंतरह के आनन्द का रूप है नन्दिः  
 आनन्द का रूप है ज्योतिः  
 गी. गी. श्रवणः ज्योतिः गण कर के  
 ईश्वर है अर्थात् सूर्य चन्द्रमाता-  
 रा गगान् अग्नि आदि सब उसके  
 प्रकाश से प्रकाशित है विजि-  
 तात्मा जीता है जिसने मन अ-  
 पना विषय त्याग नहीं है परा-  
 धीन आत्मा जिसका अर्थात्  
 कोई उसको बुद्धि के द्वारा जी-  
 त नहीं सकता सत्कीर्तिः अ-  
 र्थ है कीर्ति जिसकी छिन्न-  
 संशयः दूर है संदेह जिसके

सुकेशः अच्छे हैं नेत्र जिसे सुकेश  
 अच्छे हैं अङ्ग जिसे शतानन्दो है  
 कर्णोंतरह के आनन्द का रूप है नन्दिः  
 आनन्द का रूप है ज्योतिः  
 गी. गी. श्रवणः ज्योतिः गण कर के  
 ईश्वर है अर्थात् सूर्य चन्द्रमाता-  
 रा गगान् अग्नि आदि सब उसके  
 प्रकाश से प्रकाशित है विजि-  
 तात्मा जीता है जिसने मन अ-  
 पना विषय त्याग नहीं है परा-  
 धीन आत्मा जिसका अर्थात्  
 कोई उसको बुद्धि के द्वारा जी-  
 त नहीं सकता सत्कीर्तिः अ-  
 र्थ है कीर्ति जिसकी छिन्न-  
 संशयः दूर है संदेह जिसके

सुकेशः अच्छे हैं नेत्र जिसे सुकेश  
 अच्छे हैं अङ्ग जिसे शतानन्दो है  
 कर्णोंतरह के आनन्द का रूप है नन्दिः  
 आनन्द का रूप है ज्योतिः  
 गी. गी. श्रवणः ज्योतिः गण कर के  
 ईश्वर है अर्थात् सूर्य चन्द्रमाता-  
 रा गगान् अग्नि आदि सब उसके  
 प्रकाश से प्रकाशित है विजि-  
 तात्मा जीता है जिसने मन अ-  
 पना विषय त्याग नहीं है परा-  
 धीन आत्मा जिसका अर्थात्  
 कोई उसको बुद्धि के द्वारा जी-  
 त नहीं सकता सत्कीर्तिः अ-  
 र्थ है कीर्ति जिसकी छिन्न-  
 संशयः दूर है संदेह जिसके

श्रीमानलोकत्रयाश्रयः ८३

श्रीः लक्ष्मी का देने वाला है

श्रीशः लक्ष्मी का देश है श्री

निवासः शोभा का स्थान है श्री

निधिः माया का खजाना है श्री

विभावनः शोभा वाली वस्तु प्राणि

यो को देने वाला है अर्थात् अन्न ध-

न संतति भाग्य के अनुसार सब को

देता है श्री धरः लक्ष्मी का धारण

करने वाला है श्री करः भक्तजनों

को लक्ष्मी देता है अर्थात् अपने स-

रण करने वालों को नित्यानन्द कर

देता है श्रीयः कल्याण रूप है जि-

स का कभी नाश नहीं है श्री मा-

न शोभा वान अर्थात् सब सम्पत्ति

वाला है लोकत्रयाश्रयः ती-

नै लोक का आश्रय है ॥ ८३ ॥

सू. स्वसः सङ्गः शतानन्दो

निरिद्वयैति शिवोऽपि

नितात्मा विधेयात्मा सत्की-

र्तिश्चिन्मसंशयः ॥ ८४ ॥

शरी मान लोक त्रयाश्रये

शरी दे लक्ष्मी का रनि वाला है श्री

शरी लक्ष्मी का देश है श्री

निवासः शोभा का स्थान है श्री

निधिः माया का खजाना है श्री

विभावनः शोभा वाली वस्तु प्राणि

यो को देने वाला है अर्थात् अन्न ध-

न संतति भाग्य के अनुसार सब को

देता है श्री धरः लक्ष्मी का धारण

करने वाला है श्री करः भक्तजनों

को लक्ष्मी देता है अर्थात् अपने स-

रण करने वालों को नित्यानन्द कर

देता है श्रीयः कल्याण रूप है जि-

स का कभी नाश नहीं है श्री मा-

न शोभा वान अर्थात् सब सम्पत्ति

वाला है लोकत्रयाश्रयः ती-

नै लोक का आश्रय है ॥ ८३ ॥

सू. स्वसः सङ्गः शतानन्दो

निरिद्वयैति शिवोऽपि

नितात्मा विधेयात्मा सत्की-

र्तिश्चिन्मसंशयः ॥ ८४ ॥



कल्याण रूप है अर्थात् उसके स्मरण से मनुष्य शुद्ध और सुख का भागी होता है श्रीवत्सवसाः भृगु की लता का चिन्ह है उसकी छाती पर अर्थात् भृगुजी ने विष्णु भगवान की सहनशीलता की परीक्षा लेने के वास्ते सीते हुवे भगवान की छाती पर लात मारी परन्तु विष्णु भगवान ने कुछ बुरा न माना और भृगुजी से कहा कि मेरी छाती अति कोर है और आप के चरण अति कोमल हैं आप के चरणों में मेरी छाती की चोट लगी होगी सो आप राधक्षमा कीजिये श्रीवासः लक्ष्मी जिसमें वास करती है श्रीपतिः लक्ष्मी के पति हैं श्रीमतां वरः शोभावालो में श्रेष्ठ है ॥८२॥  
मूः श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः

किया न रूपा ही मेरी अपने नाम के बाद  
करिओ लोको पाक व लपित कर दिया है  
शरीर बत्तन बगशाह बहग जी की  
लात का चिन्ह ही चिन्ही जैसी प्रेमी की माने  
मैं बहग ब्राम्हन ने बत्तन बहगान का हृम  
वर्द्धात आने के वास्ते बत्तन बहग  
की चिन्ही प्रेमी के जोर से बत्तन बहग  
मारी बत्तन बहगान ने बहग जी से  
कहा कि मेरी चिन्ही अत कठोर ही और आपका  
चरन अत कोमल ही सो आप के चरन में मेरी  
चिन्ही की चोट लगी होगी सो आप राधक्षमा  
शरीर बासे लक्ष्मी बत्ती ही चिन्ही की  
लात वाला मेरी अली रक्ता ही शरीर  
प्रेमी के पति हैं मेरी वाजब दोस्त हैं  
शरीर मताम्बर शोभावालों में  
श्रेष्ठ मेरी अफ़ल है -

श्लोक

शरीर दे शरीर शरीर  
नो आसे शरीर नदहे शरीर जहाँ  
शरीर दे शरीर शरीर शरीर

پृथوی کا भार اُتارنے کے واسطے  
 अवतार लिया गोपतिः पृथ्वी  
 का पति है गोप्ता अपने आप  
 को रक्षा करने वाला और संसार  
 को सब आपत्ति से छुड़ाने वा  
 ला और अपने आप को अपनी  
 महिमा में गुप्त रखने वाला है बु  
 धभाक्षो अपनी दृष्टि में सब  
 की कामना पूरा करता है बु  
 धप्रियः धर्म है प्यारा जिसको ॥ ८१ ॥  
 मू. अनिर्वर्त्ती निवृत्ता  
 त्मा संक्षोपा क्षेम क  
 च्छिवः । श्रीवत्स व  
 क्षाः श्रीवासः श्रीप  
 तिः श्रीमताम्बरः ॥ ८२ ॥

क्षी. अनिर्वर्त्ती धर्म سے نہ  
 ہٹانے والا ہے اور دھرم کا  
 رक्षک ہے निवृत्तात्मा नि  
 वृत्त ہے آتما जिसकी संक्षो  
 पा उत्पत्तिकाल में सब जगत  
 को भुलाता है और संहार काल में  
 अपने में लीन करता है क्षेम कु  
 च्छिवः कल्याण करने वालا

زمین کا بوجھ اُتارنے کے واسطے اوتار لیوی  
 گوپتیہ پر پتھوی کا پت مینی مالک زمین  
 کا ہی گوپتا ایسے آپ کو رچھا کر نیولا  
 ہی یعنی تمام عالم کو خطرات سے اس  
 میں رکھی اور اپنے آپ کو پردہ صفا  
 میں نہان رکھی ہر گھنچھا گوشوائی نظر  
 سے سبکی آرزو پوری کرتا ہی مینی سب پر  
 نظر رحم و کرم کی رکھتا ہی ہر گھنچہ پر یہ  
 دھرم ہی پیارا جسکا۔

اشلوک

۱۲  
 انبر برتی نیر تاتما سنجھیتا مجھم  
 کر چھوہ - شری بخشش کیشا  
 شری باسہ شری پتہ شری تانہ  
 ٹیکا

۱۳  
 انبر برتی دھرم سے نہیں ہٹنے والا ہی  
 یہ وہ ذات ہی کہ طریقہ نیکو کاری کو دوست  
 رکھتا ہی نیر تاتما سنجھیتا ہوا ہی من جسکا  
 سنجھیتا بیدایش کے وقت تمام عالم  
 کو بھلاوتی اور سنگھار کال میں اپنے میں  
 لین کر ہی مینی قیامت میں سب کو فنا کرے  
 چھینم کر چھوہ کلیمان کرنے والا

कुमुदः कुवलेशयः। गो-  
हितोगोपतिर्गोप्रावृष  
भाक्षोवृषप्रियः॥ ८१॥

गो. शुभाङ्गः अच्छे हैं अङ्गजि  
सके शांतिदः शांति देनेवा-  
ला है अर्थात् मित्रता शत्रुता से  
रहित कर देता है स्वप्ना सब का  
उत्पन्न करने वाला है कुमुदः  
पृथ्वी पर अवतार लेकर आन-  
न्द करने वाला है अर्थात् जब  
सब जल ही जल था तब कुमुद  
के फूल के सदृश पानी में विष्णु  
रूप होकर खिला इस वास्ते कु-  
मुद नाम पाया कुवलेशयः  
जल में शयन करने वाला है कु-  
वलय उसको कहते हैं कि जो पृ-  
थ्वी को अपने में छिपावै और श-  
य शयन करने को कहते हैं जो कि  
यह दोनो गुण विष्णु रूप में हैं इसे  
यह नाम हुआ गोहितो गोवो की  
रक्षा करने वाला है अर्थात् गोवों  
की रक्षा के वास्ते गोवर्द्धन को  
उठा लिया और गो अर्थात्

कमंडह किलेशिह - गोमूत्र गोमूत्र  
गोमूत्रा ब्रह्म केशु ब्रह्म प्रिये

शिका

शशिहान्क अच्चे हैं अङ्गजि  
शान्त दे शान्त दे सिने वाला है  
मिनी दोस्ती दोस्ती से नجات देता है  
मर शशा सब का पद अक्रिया ला है कमंडह  
पर बहोय प्रोत्तर लिकर आनंद कर ला है मिनी जब  
सम एलम पानी ही पानी तहा तब बसोत  
मल निलो फर के पानी में बसोत रोप होकर  
कहला असो सल्ले कमंडह नाम पाया किलेशिह  
पानी में सोने वाला है किल असो किलेशिह  
हैं कि जो जमिन को अपने में पोशिये  
करले और शिह मीन अश्रात के हैं  
जो कि दोनो वस्ति बसोत रोप में हैं  
असो सल्ले ये नाम पाया गोमूत्र गोमूत्र की  
बहरी कर ला है ये दोनो वस्ति होकर सल्ले  
महापत मादे गादा के गो ब्रह्म प्रिये  
अपनी बायें जगनिया मीन खमर सल्ले  
प्रोत्तर लाया और गोमूत्र असो किलेशिह कि जो किलेशिह

अनुसार काम करें सामगः साध  
वेद करके गाने में आने अर्थात् गान  
विद्या में भी चही है साम सामवेद  
रूप है निर्वाण मोक्ष रूप अर्था-  
त सब दुखों का नाश करने वाला है  
मोक्ष जन्म औषधि अर्थात् तब लेशों को  
नाश करने वाला है विषयक वेद रूप  
है अर्थात् जन्म मरण से छूटने के वास्ते  
विद्या सिखाता है संन्यास कृत  
संन्यास कर्म करने वाला है अर्थात्  
सर्व त्याग का सिखाने वाला है शा-  
मः प्रलय काल में सब का हित कर-  
ने वाला है अर्थात् चारों आश्रम  
और त्यागी को परम पद देने वा-  
ला है प्रीति राग और द्वेष से र-  
हित है अर्थात् शत्रुता मित्रता न-  
ही रखता है निष्ठा प्रलय काल में  
सब जगत् जिसमें रहे शान्तिः  
जलान का हयने वाला है परा-  
याणः परमाश्रय है ॥ ८० ॥  
म-शगाड-शान्तिरः सप्ता

मोक्ष काम करने में सामगः साम  
करके गाने में आने अर्थात् गान  
विद्या में भी चही है साम सामवेद  
रूप है निर्वाण मोक्ष रूप अर्था-  
त सब दुखों का नाश करने वाला है  
मोक्ष जन्म औषधि अर्थात् तब लेशों को  
नाश करने वाला है विषयक वेद रूप  
है अर्थात् जन्म मरण से छूटने के वास्ते  
विद्या सिखाता है संन्यास कृत  
संन्यास कर्म करने वाला है अर्थात्  
सर्व त्याग का सिखाने वाला है शा-  
मः प्रलय काल में सब का हित कर-  
ने वाला है अर्थात् चारों आश्रम  
और त्यागी को परम पद देने वा-  
ला है प्रीति राग और द्वेष से र-  
हित है अर्थात् शत्रुता मित्रता न-  
ही रखता है निष्ठा प्रलय काल में  
सब जगत् जिसमें रहे शान्तिः  
जलान का हयने वाला है परा-  
याणः परमाश्रय है ॥ ८० ॥  
म-शगाड-शान्तिरः सप्ता

प्रेम आसरा है  
श्लोक  
शिवानन्द शान्त देह नर शान्ता

अर्थात् अधर्म बुद्धियों को मारने वाला है दृष्टिः प्रदः वांक्षा का पूरण करने वाला है दिवस्पृक स्वर्ग का स्पर्श मय नरने वाला है और भक्तजनों को पदार्थ देने वाला है सर्वदृग् व्यासो सब को देखने वाला है अर्थात् प्रकट करने वाला सब विद्याओं और बुद्धियों का है सर्वदृग् का अर्थ यह है कि सब को देखने वाला हो और व्यास शब्द का अर्थ यह है कि एक वेद से चार वेद करे ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद वाचस्पतिः वाणी का पति है अर्थात् चित्त की बात भी उसको सुन पड़ती है योनिजः योनि अर्थात् किसी के पेट से नहीं पैदा हुआ है ॥ ७४ ॥

यु. त्रिसामा सामगः साम निर्वोणं भेषजं भिषकः। संन्यासकृच्छ्रमः शान्तो निष्ठाशान्तिः परायणः ॥ ७५ ॥

यु. त्रिसामा तीनों वेद करके वि त है अर्थात् देवता तीनों वेद के

मैनी जो लोग दहरम के دشمن हैं अन्कामात्रा  
 हरि दर्शन प्रदो आनंद का पुरा कर नोला  
 हरि दोस प्रक सुग का नखन  
 करि नोला मैनी माक भिस्त ब्रिन का सै  
 सरत दरक निया सिकु सुको दिखने वाला  
 हरि मैनी सब علوم वदुल का मा हरि नोला  
 सरत दरक के ये मैनी हैं कि सब दिखने  
 वाला मोद बियास के ये मैनी हैं कि एक  
 ब्रिद से चार ब्रिद करी ओल रक ब्रिद दोम ब्रिद  
 ब्रिद सोम साम ब्रिद चारम अथर्व ब्रिद -

बाचस्पति यानी का माक मैनी मा सब  
 सखि नोला सुकोल का सखि नोला भी मलूम हो जाता  
 ओला नोला नोला मैनी शक से नैन पैदा होला  
 अश्लोक

त्रिसामा सामगः साम निर्वोणं भेषजं भिषकः। संन्यासकृच्छ्रमः शान्तो निष्ठाशान्तिः परायणः ॥ ७५ ॥

यु. त्रिसामा तीनों वेद करके वि त है अर्थात् देवता तीनों वेद के

त्रिसामा तीनों वेद करके वि त है अर्थात् देवता तीनों वेद के

अर्थात् उसीने पृथ्वी का जोतना बी-  
ना सिरसाया और हल धर श्री कृष्ण  
जी के भाई का भी नाम है अर्थात्  
सूर्य रूप है अर्थात् उसी के द्वारा सब  
संसार प्रकाशित है और अदिति  
के पेट से कश्यप के घर वामन अवता-  
र भी हुआ है ज्योतिः प्रकाश रूप है  
अर्थात् वामन रूप है सहि-  
स्रुः सरदी गरमी का सहने वाला है अ-  
र्थात् सब काल में एक तरह है गति  
रत्नमः श्रेष्ठ परमात्मा रूप है अर्थात्  
अच्छा स्वभाव रखता है ॥ ७८ ॥

शु. सुधन्वा खाड्य परशु-  
दासणोद्विगप्रदः। दि-  
वस्य बसर्वह ग्या सो वाच-  
सतिरयो निजः ॥ ७९ ॥

शु. सुधन्वा अच्छा है धनुष जि-  
सका और धनुष अभिप्राय है नेत्र और  
भृकुटी इत्यादिक से अर्थात् वह ऐ-  
सा है कि नेत्र और भृकुटी के सैन से  
सब काम करता है खाड्य परशु-  
शत्रुओं का नाश करने वाला है कु-  
मार जिसका परशु रामावतार का  
रुणी दानवी का नाने वाला है

یعنی اسی نے کاشت کرنا زمین کا بتلایا اور  
ہلہلہ کر کے زمین پر کاشت کرنا شروع کیا اور بھی  
کہتے ہیں آدیتھو سورج روپ ہی یعنی اسی  
کے سبب سے تمام عالم روشن ہے اور بانون  
جی کا اوتار سخا نہ کشیپ از شکم اوت ہوتا  
جیوتہ پرکاش روپ ہی اوتہیہ بانون  
روپ ہی شمشیر جارا اور گرمی کا سینے  
ہی یعنی سروت میں کیساں رہتا ہے۔  
گت ششم سریشچ پرماکار روپ ہی یعنی  
طریقہ نیک رکھتا ہے۔

۱۱  
شکل  
سہ ہشتواکھنڈ پر شر و آرنو دین  
پرودہ - ووس پرش شرب  
درک پیا سو با چیت ریونجہ

۱۲  
شکل  
سہ ہشتواکھنڈ پر شر و آرنو دین  
پرودہ - ووس پرش شرب  
درک پیا سو با چیت ریونجہ  
۱۳  
شکل  
سہ ہشتواکھنڈ پر شر و آرنو دین  
پرودہ - ووس پرش شرب  
درک پیا سو با چیت ریونجہ

جو کچھ اسکو قرار دین بجایے پرکشش ہو  
 دشت قائم و شکم پر شکم کشو شد  
 ہر دمی بن پرکشش کرتا ہی یعنی آدمیوں  
 سینہ میں بصورت علم قیام رکھتا ہی  
 منہ غفلت کو مہر اذنا کر زمین دل چسکا۔  
 اشلوک  
 بھگوان بھگوانندی بن مالی  
 پلائیہ۔ آدیو جیوت  
 راوتیہ سہسرت گت ششم  
 بھگوانیشو رچ والا ہی بھگ کے  
 منی یہ ہیں کہ حشمت و حکو کاری و نام  
 نیک و دولت و ترک تعلقات و آزادی و  
 رکھتا ہو اور وان کے منی صاحب اور  
 مالک کے ہیں بھگما پاپیوں کا جاہ و شرم  
 کھود دینے والا ہی ندی سکھ والا  
 ہی یعنی ہمیشہ خوش و خرم رہتا ہی۔  
 پنچالی تلسی کی مالا پہنے ہی یعنی یہ وہ را  
 ہی کہ عاجز و ناچیز کو بھی عزت دے کر  
 قائم و برقرار رکھتا ہے  
 پلائیہ حصہ ہی ہے ہتھیار جسکا

جو کچھ اسکو قرار دین بجایے پرکشش ہو  
 دشت قائم و شکم پر شکم کشو شد  
 ہر دمی بن پرکشش کرتا ہی یعنی آدمیوں  
 سینہ میں بصورت علم قیام رکھتا ہی  
 منہ غفلت کو مہر اذنا کر زمین دل چسکا۔  
 اشلوک  
 بھگوان بھگوانندی بن مالی  
 پلائیہ۔ آدیو جیوت  
 راوتیہ سہسرت گت ششم  
 بھگوانیشو رچ والا ہی بھگ کے  
 منی یہ ہیں کہ حشمت و حکو کاری و نام  
 نیک و دولت و ترک تعلقات و آزادی و  
 رکھتا ہو اور وان کے منی صاحب اور  
 مالک کے ہیں بھگما پاپیوں کا جاہ و شرم  
 کھود دینے والا ہی ندی سکھ والا  
 ہی یعنی ہمیشہ خوش و خرم رہتا ہی۔  
 پنچالی تلسی کی مالا پہنے ہی یعنی یہ وہ را  
 ہی کہ عاجز و ناچیز کو بھی عزت دے کر  
 قائم و برقرار رکھتا ہے  
 پلائیہ حصہ ہی ہے ہتھیار جسکا

और देख नहीं पड़ता है चक्र ग-  
दाधारः चक्र गदाधारी है और  
यह कि ज्ञान का गोल चक्र रखक  
र सब ओर से संसार की रक्षा कि  
ये दुवे है ॥ ७६ ॥ ७६ ॥ ७६ ॥

मृ. वेधाः स्वाज्ञे जितः क-  
स्मो दृढः संकथेणोच्युतः ।  
वरुणो वारुणो दृष्टः पुष्करा  
हो महामनाः ॥ ७७ ॥

मृ. वेधाः प्रज्ञा रूप अर्थात् सृष्टि  
करता है स्वाज्ञे अपने स्व रूप  
के सामर्थ्य से विश्व को रचा है -  
अजितः नहीं जीतने में जाता  
है किसी के कस्मो मक्तो की नाप मि  
रता है दृढः निराकार अर्थात् एक  
रूप है संकथेणों प्रलय काल में  
सब प्रजा को खींच ले अर्थात् सब को  
नाश कर के आपर है उच्युतः नाश  
रहित है वरुणो अपनी किरणों  
को खींच लेता है अर्थात् सूर्य की त  
रह अन्त को पश्चिम में चला जाता  
है वारुणो अगस्त रूप अर्थात्  
अगस्त मुनि है दोनों वर्णों का पति है  
जो कि सब देवताओं का रूप है इस से

اور نظر نہیں آتا چکر گدا و حار  
اور گدا و حاری ہر بینی عقل بصورت چکر چکر  
محافظة خلق کی کرتا ہے۔

اشلوک  
مید حاہ سو انگو جتہ کر شتو  
شکر کشتو قتیہ پر تو بار نو  
برکشہ شکر انکشو ہما مناہ

مید حاہ بر مجاروپ یعنی آفرینندہ خلاق  
ہر سو انگو اپنے سواروپ کے سامنے  
سنار کو رہا اجتہ کوئی انگو جتہ میں  
سکتا کر شتو بھکتوں کی تاپ سیتا ہے۔  
و ر حہ نزدیک مینی ایک قرار پر ہے  
شکر کشتو پر کال میں سب سنسار کو  
کھینچ لیتا ہے مینی تمام عالم کو فانی کر کے خود کا  
رہتا ہے اچیتہ ناس سے ریت ہے  
یعنی لازوال ہے پر تو اپنی کر تو کو کھینچ  
لیتا ہے مینی دن اخیر ہونے پر شل آجنا نوبت  
میں چلا جاتا ہے بار نو اگست روپ ہے  
یعنی اگست سن ہر دونوں برنوں کا پتہ ہے  
جو کہ سب یو تو کی صورت دی ہو اس سے



होकर जल में वास करता है कृ-  
तान्त कृत जगत का उत्पन्न  
करने वाला है और काल को उत्प-  
न्न करने वाला है ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

मू. महावराहो गोविन्दः  
सुषेनः कनकाङ्गदी । गु-  
ह्योगम्भीरोगहनी गुह्य-  
क्रगदाधरः ॥ ७६ ॥

म. महावराहो वासहस्त  
उपतिष्ठेष्ट हे गोविन्दः मत्तां  
को ज्ञान भक्ति आदि के द्वारा  
प्राप्त होता है सुषेनाः प्यार है  
काले सिपाही जिसको कन-  
काङ्गदी सुवर्ण का बिजाधर  
है जिसके सुवर्ण के हथेनेत्र हैं जि-  
सके गुह्यो वेश में लुका हुआ  
है अर्थात् उसको हृदय में रखता  
है गम्भीरो अनन्त है गहनी  
ज्ञान वैराग्य से पुरुषों को नहीं प्राप्त  
हो अर्थात् कठिनता से उसका मि-  
लना है गुह्यः वाली करके ज-  
नने में नहीं आता है अर्था-  
त् सब जीवों में छिपा हुआ है

रہتا ہے کونیا نیت کثرت جلت کا ماش  
کرنیوالا ہے یعنی قیامت میں عالم کو نیست  
و نابود کرتا ہے اور موت کو پیدا کرتا ہے۔

اشکوک

مہار اہو گو بندہ سکھین  
کنکا ننگ گدی گنجو گنجیر و  
گمنو گیش حکر گدا دھرہ۔

ٹیکا

مہار اہو بارہ روپ نہایت بڑا ہے۔  
گو بندہ بھکتو کو پراپت ہو تا ہی یہ وہ د-  
ہی کہ کام و علم تقویٰ سے اسکو بانی سکھین  
پیارے ہیں کالے سپاہی جو کنکا ننگ  
گدی سونے کا بازو بندہ جسکے اور آکا گھر  
بہنگ طار کتا ہے گنجو بیڈون میں چھیا ہوا  
ہی یعنی اسکو جینے میں چھیا ہوا رکھتے ہیں  
گمنو و جبکی تھاہ نہیں ہے گمنو گیان و  
میراگ ریت پر شوگو نہیں پراپت ہو تا ہی  
یعنی بد شکاری تمام اسکا کتا ہے گمنو  
بانی سے جاننے میں نہیں آتا ہے یعنی  
وہ ذات پاک ایسی ہے کہ سب  
جانداروں میں پوشیدہ موجود ہے

उससे ज्ञानरूपति है नन्दः नि-  
 यमानन्दम गहित है सत्यधर्मः  
 सत्य है धर्म जिसका निविक्र-  
 मः वासन रूप होकर त्रिलोकी को  
 तीन पैर से नापा और हरिवंशपु-  
 रा में लिखा है कि (वि) त्रिलोक  
 का कहते हैं ॥ ७४ ॥ ७४ ॥

मू. महर्षिः कपिलाचार्यः  
 कृतजीमेदनीपतिः । विप-  
 दस्त्रि दशाध्यक्षो मताम्  
 कृतान्तकृत ॥ ७५ ॥

म. महर्षिः म. अधियों और  
 जानियों में ब्रह्मे पार्थिव सबके  
 का जाता है कपिलानाचार्यः क-  
 पिलदेव है जिसने राजा सगर के प-  
 दा की उपदेश दिया और शांति  
 शास्त्र को बनाया कृतजी ज-  
 गत् को जानता है मेदिनीपतिः  
 पृथ्वी के पति है विपदः जाग्रतस्व-  
 प्रमुपुप्तिनी नीचवस्था खता है  
 विदशाध्यक्षो त्रिदशों का मा-  
 लिक है महाशुद्धः मत्स्य रूप  
 र्यात प्रलयकाल में मत्स्य रूप

अस से फिन सरुका पाते हैं तन्द  
 ब्रह्मे शक्ति से रचित है जो अपनी लक्ष्मी  
 नैन हासल करता है शक्ति व हर्म  
 जो वरुण जैसा किनी पति और त्रिक  
 नैन पक के तिन लोको को बावों रू  
 होकर नापावो मरुतिस परान में लका हो  
 त्रिभुज त्रिलोक के हैं

अश्लोक

म. कहे कि लका चरु करुणो मदिनी म-  
 पिस त्रिदशाध्यक्षो मताम् कृतान्तकृत  
 श्लोक

म. कहे ताम रीक और किनी नैन ब्राह्मी  
 मी के जानने वाला सब ब्रह्म कि लका चरु  
 कपिल मी मी के जेने राजा सगर के प-  
 दा की उपदेश दिया और शांति  
 शास्त्र को बनाया कृतजी ज-  
 गत् को जानता है मेदिनीपतिः  
 पृथ्वी के पति है विपदः जाग्रतस्व-  
 प्रमुपुप्तिनी नीचवस्था खता है  
 विदशाध्यक्षो त्रिदशों का मा-  
 लिक है महाशुद्धः मत्स्य रूप  
 र्यात प्रलयकाल में मत्स्य रूप



جس کا اُچھا ت سत्य کا چاہنے  
 والا ہے **दाशार्हः** भक्तों की पूजा  
 सी कार करने वाला है और दाश  
 हः नाम है पादवों के पुरुषों का कि  
 जिस कुल में श्री कृष्ण जी ने अव-  
 तार लिया था **सात्वतां पतिः**  
 भगवत धर्मों का पति है और सा-  
 त्वत नाम भी है पादवों के पुरुषों का  
 जहाँ श्री कृष्ण जी ने जन्म लिया ७०

**मू. जीवो विस्मयिता साक्षी**  
**मुकुन्दो मित विक्रमः । अं-**  
**भो निधिर नन्तात्मा महो-**  
**दधिशयो न्तकः ॥ ७३ ॥**

७. **जीवो** देह में रहने वाला है  
 अर्थात् प्राण रूप होकर देह की र-  
 हा करने वाला है **विनियता-**  
**साक्षी** जो शांति है उसका साक्षी व-  
 ही है और गुप्त और प्रकट संसारी  
 व्यवहार को आँख की सहायता  
 के बिना देखता है **मुकुन्दो** मु-  
 क्तिको देने वाला है अर्थात् संसारी  
 बन्धन से छुड़ा देता है **मित विक्र-**  
**मः** बे प्रमाण है पराक्रम जिसका

जس کا یعنی وہ ذات ہے کہ راستی کا چاہنے  
 والا ہے **दाशार्ह** ہمہ بھکتوں کی پوجا  
 قبول کرنے والا ہے اور **दाशार्ह** ہمہ نام چادروں  
 کے بزرگ کا تھا جن کے کل میں شری کرشن  
 ہماراج نے اوتار لیا تھا **सात्वतां**  
**पति** ہمہ بھگوت دھرموں کا پتی ہے اور **सात्वतां**  
 بزرگ خاندان جادو کا تھا کہ جس خاندان  
 میں شری کرشن ہماراج نے اوتار لیا تھا۔

**اش्लोक**  
**जीवो विनियता साक्षी मुकुन्दो मित**  
**भो निधिर नन्तात्मा महोदधिशयो न्तकः**  
**मोदोदधिशयो न्तकः**

**ٹیکا**  
**जीवो** وہ ذیہ میں رہنے والا ہے یعنی وہ ذات  
 ہے کہ بصورت نفس ہو کر اس کو قائم رکھتا ہے  
**विनियता** ساکشی جو شانت ہے اس کا ساکشی  
 ہے یہ وہ ذات ہے کہ ظاہر و پوشیدہ بغیر  
 مدد نگاہ کے ملاحظہ احوال عالم کا کرتا ہے  
**मुकुन्दो** مکت کا دینے والا ہے یہ وہ  
 ہے کہ بند جہان سے خلاصی عطا کرتا ہے  
**मित** بگرمہ بے پرمان ہے پر اکرم جس کا

बहुत है जिसके अर्थात् शुभ  
कर्मों की रक्षा करता है ॥३१॥  
मूः सोमपोमृतपः सोमः  
पुरुजित्पुरुषोत्तमः । वि  
नयो जयः सत्यसंधो दा  
शाहेः सात्वतांपतिः ॥३२॥  
मूः सोमपो अमृत को पिये  
है और भी यह कि यज्ञ करके  
धर्म का प्रचार करता है और  
भी सोम नाम घास का है कि जो  
अमृत से उत्पन्न है और वह य  
ज्ञादिक में काम आती है ॥ मूः  
नपुः यजमान होकर यज्ञ के  
शेष को खाता है और भी ऐसा  
है कि जिसने अमृत को उत्पन्न  
किया है सोमः औषधि में रस  
उत्पन्न करने वाला है अर्थात् चन्द्रमा  
रूप है और प्रकाश रूप अर्थात्  
महादेव रूप है पुरुजित् शत्रु  
को जीतने वाला है पुरुषोत्त  
मः बहुत श्रेष्ठ है अर्थात् अति उ  
च्च स्थानी है विनयो नम्र अर्थात्  
गरीब है जयः सब प्राणियों को जी  
तता है सत्यसंधो सच्चा है वचन

बत ही जिक्र یعنی وہ ذات ہے کہ طریقہ  
نیکو کاری کو قائم رکھتا ہے۔  
۴۱  
اسلوب  
سوم پو مرتبہ سومہ پر جیت  
پر کھوٹہ۔ بیوجہ ستیہ سندھو  
دانشاریہ سا تو تانگ پتہ  
ٹیکا  
۴۲  
سوم پو اُمرت پینے والا اور جگ کر کے  
طریقہ نیکو کاری کو ظاہر کرنے والا ہے اور سوم  
نام گھاس کا ہے کہ جو اُمرت سے پیدا ہے اور وہ  
اکثر جگ میں کام آتی ہے مرتبہ ججان ہو کر  
جگ کا بچا ہوا کھاتا ہے اور وہ ایسا ہے کہ  
جسے آب حیات کو پیدا کیا ہے سومہ  
دواؤں میں رس ڈالنے والا ہے یعنی جینڈا  
روپ اور وہ ذات ہے کہ محض نور و لطافت  
ہی یعنی سادہ و پر جیت و شمنوں کا جتنے  
والا یعنی فتح کرنے والا ہے پر کھوٹہ بہت اُتم  
ہی یعنی سب جانداروں سے افضل ہے  
۴۳  
سوم پو ملائم و غریب مزاج ہے جیسے سب  
پرائیو کو جیتا ہے ستیہ سندھو سہا ہے

भूरि दक्षिणाः ॥ ७१ ॥

श्री: उत्तरो जन्म संसार बन्धन  
से तारा हुआ है अर्थात् जन्म  
मरण से रहित है गोपति  
गंडवों का स्वामी है जैसे कल्ला  
बतार में गंडवों की पालनकी  
और गोपाल नाम पाया और  
पृथ्वी के मालिक को भी कह  
ते हैं गोपा रक्षा करने वाला है  
और सब प्रजा की पालन क  
रता है ज्ञान गम्य ज्ञान क  
रके लाभ हो जो अर्थात् वह  
देवस्वर ज्ञान के द्वारा प्राप्त भी  
हो सक्ता है पुरातनः काल  
करके नाशवान नहीं है अ  
र्थात् सदा सर्वदा स्थित है श  
रीर भूत शरीर को प्राणी रू  
प होकर रक्षा करने वाला है  
अर्थात् सब सृष्टि की पालन  
करता है भूजोक्ता सब  
का पालने वाला है कपी  
न्द्रो हनुमान जी के मालि  
क श्री राम चन्द्र रूप अथवा  
बाराह रूप भूरि दक्षिणाः  
पूज करने वालों की दक्षिणा

बहुरङ्गशे -  
शिका

असुर संसार के जन्म के बन्धन से  
तारा हुआ है अर्थात् जन्म  
मरण से रहित है गोपति  
गंडवों का स्वामी है जैसे कल्ला  
बतार में गंडवों की पालनकी  
और गोपाल नाम पाया और  
पृथ्वी के मालिक को भी कह  
ते हैं गोपा रक्षा करने वाला है  
और सब प्रजा की पालन क  
रता है ज्ञान गम्य ज्ञान क  
रके लाभ हो जो अर्थात् वह  
देवस्वर ज्ञान के द्वारा प्राप्त भी  
हो सक्ता है पुरातनः काल  
करके नाशवान नहीं है अ  
र्थात् सदा सर्वदा स्थित है श  
रीर भूत शरीर को प्राणी रू  
प होकर रक्षा करने वाला है  
अर्थात् सब सृष्टि की पालन  
करता है भूजोक्ता सब  
का पालने वाला है कपी  
न्द्रो हनुमान जी के मालि  
क श्री राम चन्द्र रूप अथवा  
बाराह रूप भूरि दक्षिणाः  
पूज करने वालों की दक्षिणा

किन्तु रोहनुमान जी का मालक है  
श्री राम चन्द्र रूप या बाह्य रूप  
बहुरङ्गशे बहुरङ्गशे बहुरङ्गशे

१० गभस्तिनेभिः किरण  
रूपी चक्र हैं जिसके अर्थात्  
सूर्य चन्द्रमा उसी से प्रकाशित  
हैं सत्वस्थः सतोगुण है स्थि-  
त जिसके अर्थात् वह ऐसा है कि  
सब शरीरों में व्याप्त हो कर स्थित है  
सिंहो नरसिंह रूप अर्थात् सिं-  
ह के तुल्य बलवान है भूतमहे-  
श्वरः प्राणियों का महा ईश्वर है  
अर्थात् सब जीवों में बड़ा वही है  
आदिदेवो सब प्राणी जिसमें  
रहें प्रलय काल में अर्थात् वह ऐ-  
सा है कि पहिले प्रकाश रूप प्र-  
कट हुआ है महादेवो सब  
में पूजनीय है और उसकी बड़ा  
ई कुछ विद्या बुद्धि बल धन धा-  
न्य ही पर नहीं है किन्तु बिना  
किसी ऐश्वर्य के वह स्वतः प्र-  
तिष्ठावान है देवेशो देवता-  
ओं का मालिक है देवभृद्गुरुः  
इन्द्र का गुरु है अर्थात् सकल  
विद्याधिकारी है ॥७०॥

मू-उत्तरो गोपतिर्गोमाज्ञा  
नगम्य पुरातनः। शरीर  
भूतभृद्गोक्ता कपीन्द्रो

सका  
किसे सत्वस्थ नमिने तर्कन रूपी चक्रों से  
یعنی سورج یعنی وہ ذات ہے کہ جس سے سورج  
چاند وغیرہ روشن ہیں سورج و چاند  
ہو اس حقیقت جسکے یہ وہ ذات ہے کہ تمام جسموں  
میں بصورت جان قائم ہے سنگھو زنگھ  
رُف یعنی مانند سنگھ کے قوت رکھتا ہے۔  
بھوت ہمیشہ سورہ پرانیوں کا مہا ایشو  
ہے یہ وہ ذات ہے کہ سب جانداروں میں بزرگ ہے  
آدیو و سب پرانی پر لکال میں حسین  
ہیں یعنی وہ ذات ہے کہ پہلے بصورت روشنی  
ظاہر ہوا ہے و سب اسکو پہنچتے  
ہیں یہ وہ ذات ہے کہ بزرگی اسکی منحصر  
کچھ علم و قوت و دولت ہی پر نہیں ہے  
و لویشو دیوتاؤں کا مالک ہے و یو بھرو  
گروہ اندر کا گرو یعنی داناوی حملہ علوم مہوی  
و مضموی کا ہے۔

اشلوک

آتش و گوہر کو پتیا گیا ان کیسے پتہ  
شیر بھوت بھرو بھوکتا کپتندرو

अर्थान्तालक है एतल गर्भी  
एतल है गर्भ में जिसके धने-  
पूवरः बड़ा धनवान् है ॥६५॥

मू. धर्मगुपधर्मद्व-  
र्मीसदसत्त्वरमक्षरं। अ  
विज्ञातासहस्रांशुर्विधा  
ताकतलक्षणः॥ ६६ ॥

ॐ धर्मगुण धर्म की रक्षा  
 करने वाला है धर्म कृत  
 धर्म का करने वाला है धर्म  
 धर्म धर्म गान है सदसत  
 परब्रह्म है क्षरं नाशवान है अ  
 क्षरम् अविनाशी है अवि-  
 ज्ञाता जिसका ज्ञाने वाला और  
 कोई नहीं है सहस्रांशुः हजार  
 ों है किरण जिसके सूर्योदिकवि  
 धाता सम्पूर्ण जगत् को धारण  
 करने वाला है सत्त्व गुण  
 सिद्ध है चैतन्य रूप है ॥ ६६ ॥

मृ. गमस्तिनेमिः सत्व-  
स्थः सिंहो भूत महेश्व-  
रः । उपादिदेवो महादे-  
वो देवेशो देवभृद्गुरुः ॥

بین رشتن کر چھوڑتن ہر گریہ میں چلے  
 یعنی جو اس بات اعظم اسکے شکم میں ہے  
 وہ ششورہ صاحب دولت اعظم ہے  
 اشلوک

۶۹

وہم ہر گز نہ دھرم کرو و دھرمی  
سے کہ شکر مائیں نہ آگیا  
نہ ہر گز نہ ہر گز نہ ہر گز نہ  
۹۹

وَحَرَمٌ كَبِيرٌ دَحْرَمُ كِي رَجْعَا كَرْنِوَالَاہِی  
وَحَرَمٌ كَرْنِو دَحْرَمُ كَا كَرْنِوَالَاہِی دَحْرَمُ  
دَحْرَمُ وَالَاہِی سَدَسَتْ پُر رَجْعَا ہِے  
كَشْرَ نَاش مَان كَشْرَنَك اَبَاشِ ہِے  
اَكْبَا تَا جِسا جَانِے وَالَا كُو نِی ہِے  
سَدَسَتْ كَشْرَ ہِے رَا رُون ہِے نِ كَرْنِ جِسا  
سَوَجِ اَكْبِ ہِے دَحْرَمُ كَا بَجَلَت كُو دَحْرَمُ  
كَرْنِوَالَاہِی كَرْنِ كَشْرَنَ سَدَسَ ہِے

اور چیتا کو پتہ نہ ہو  
اس لئے کہ  
کچھ نہ ہو  
اور پتہ نہ ہو  
اور پتہ نہ ہو  
اور پتہ نہ ہو



मू. स्वापनः स्ववशो  
व्यापी नैकात्मानैकक-  
र्मकृत् । वत्सरो वत्स-  
लो वत्सी रत्नगर्भो ध-  
नेश्वरः ॥ ६८ ॥ ६८ ॥

री. स्वापनः अपनी माया  
करके अज्ञानियों को सुलाता  
है और आप जागता है स्वव-  
शो अपने ही वश्य है किसीके  
आधीन नहीं व्यापी नैका-  
त्मा सब में व्याप रहा है और  
सृष्टि रचने के वास्ते अनेक आ-  
त्मा प्रकट करता है नैक क-  
र्मकृत् अनेक कर्म करने  
वाला है उत्पत्ति पालन नाश इ-  
त्यादिक वत्सरो सम्पूर्ण ज-  
गत में बसता है और सम्पूर्ण ज-  
गत उसमें बसता है वत्सलो  
दयावान है अर्थात् शत्रुवों पर भी  
दया करता है वत्सी गडवों के  
बच्चे उसको प्रिय है जैसा कि श्री  
राह्यावतार में गौवों की पाल-  
ना की और यह कि सब सृष्टि  
का पिता है सब जीव उसके वत्स

اشلوک  
سواپنہ سو بشتویا پی نیکا  
نیک کرم کرت - بشتو بشتو  
بشتی رتن گر جو دھیشو رہ -

شیکا  
سواپنہ اپنی مایا کر کے اگیا نیون کو  
سلا تا ہی اور آپ جاگتا رہتا ہی سواپنہ  
اپنے ہی کسیکے تحت نہیں بیا پی  
نیک آتما سب میں بیا پ رہا ہی  
وہ ذات ہی کہ واسطے اجر اسے کارخانہ  
عالم کے سبازوں طرح کی چلی کرتا ہی -  
نیک کرم کرت ایک کرم کرنے والا  
بشتی پیدا ہی و پرورش و فضا وغیرہ  
بشتو و سب جگت میں بستا ہی اور  
سب جگت آسمین ہی بشتو دیا و ان  
ہی یہ وہ ذات ہی کہ دشمنوں کے ساتھ  
بھی دوستی کرتا ہی بشتی گلوؤں کے  
بچے اشلوک پارے میں چنانچہ شری کرشن  
اور مار سیکو کہ گلوؤں کی پرورش کی اور تمام عالم  
کھپے رہی اور یہ مردمان عالم آسکر مال بچے



सतांगतिः सत पुरुषों को ग-  
ति देने वाला है अर्थात् वह ऐ-  
सा दयालु है कि सब मुक्ति के  
चाहने वाले उससे मुक्ति की  
इच्छा रखते हैं सर्वदर्शी  
सब को देखने वाला है अर्था-  
त् सब के कर्मों को देखता औ-  
र जानता है विमुक्तात्मा  
विमुक्त है आत्मा जिसकी स-  
र्वज्ञता सब का जानने वाला है  
अर्थात् सब में है ज्ञान मुन-  
मम् ज्ञान रूप है और बड़ी  
बुद्धि ठीक ठीक बेघटान ब-  
ढ़ाव स्थिर रखता है ॥ ६६ ॥

मू. सुवृत्तः सुमुखः सूक्ष्मः  
सुधोषस्तुखदः सुहृत् ।  
मनोहरो जित क्रोधो वीर  
बाहुर्विदारणः ॥ ६७ ॥

टी. सुवृत्तः सुन्दर है संकल्प  
जिसका और वह ऐसा है कि  
जो उसकी शरण गया वह दुःख  
से दूर गया सुमुखः अच्छा  
है मुख जिसका अर्थात्

सनातन गते अच्छे लोग को अभी  
गत दीने वाला है - ये ذات हरि सब  
गुणसंगत अतः हरि से रसगरी  
जाते हैं सब वशी सबको  
दिकहेने वाला है ये वे ذات हरि के ताम्रमाल  
मरदान को दिकहेने और जानता है मुक्ति का  
आदमि आता है सब हरि सब का  
जानने वाला है ये वे ذات हरि सब में  
ही गिया नित्य हरि गिया नित्य हरि  
ये वे ذات हरि के दानस बزرग व बने  
कम व कास्त रक्ता है और रास्त और  
शायत है -

अश्लोक  
सुवृत्तः सुमुखः सूक्ष्मः  
सुधोषस्तुखदः सुहृत् ।  
मनोहरो जित क्रोधो वीर  
बाहुर्विदारणः ॥ ६७ ॥

टीका  
सुवृत्तः सुन्दर है संकल्प  
जिसका और वह ऐसा है कि  
जो उसकी शरण गया वह दुःख  
से दूर गया सुमुखः अच्छा  
है मुख जिसका अर्थात्

अपने में लीन करलेता है और  
आप ही आप स्थिर है **समी**  
**हनः** सृष्टि के वास्ते भले प्र-  
कार से व्यवहार करता है और  
सृष्टि की उत्पत्ति और पालन  
और नाश उसकी इच्छा से  
होती है ॥ ६५ ॥

**सू. यज्ञ इज्यो महेज्यश्च**  
**क्रतुः सवसता गतिः। स-**  
**र्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्व**  
**ज्ञो ज्ञानमुत्तमम् ॥ ६६ ॥**

दी. यज्ञ यज्ञ रूप है और सब  
देवताओं का उत्पन्न करने वाला  
**इज्यो** पूजने योग्य है और ऐ-  
सा है कि कोई किसी देवता को  
पूजे वह प्रसन्न होता है हरिबंश  
पुराण में लिखा है कि देवता जी-  
र पितरों की जो यज्ञ करता है वह  
प्रसन्न होता है **महेज्यश्च**  
पूजने वालों में यज्ञ अर्थात् पूज-  
ने योग्य है **क्रतुः** विस्मय रूप  
है **सचम** बल रूप और स-  
त्पुरुषों की रक्षा करने वाला है

अपने में लीन یعنی محو کر لیتا ہے یہ وہ ذات  
ہے کہ خود بخود قائم ہے **سعی** **مہنہ**  
سہاوت کے واسطے اچھے پرکار سے بیوا  
کرتا ہے یہ وہ ذات ہے کہ ایجاد اور بقا اور  
نفا سے عالم کی ساتھ خواہش اسکے کے ہے

اشلوک

تکلیف آجیو ہے جیش کرے سترنگ  
سناٹ گتہ - سترنگ دشنی  
بکلتا تھا سترنگیہ گیان مٹم -

طیکا

جگتہ جگت روپ ہے یہ وہ ذات ہے کہ  
آفرینہ تمام فرشتگان ہے **اجو** جو  
کے قابل ہے یہ صفت ذات پریشور کی  
ہے کہ کوئی چاہے جس دیوتا کی پوجا کرے  
وہ اسی میں خوش ہو جاتا ہے جیہ جیش  
پر ان میں لکھا ہے کہ دیوتا اور پریشور  
واسطے ہیں جو کوئی جگت کرتا ہے اس سے  
بھی میں خوش ہوتا ہوں **جیش**  
پوجنے والوں میں جگتہ سے یعنی پوجنے والے  
لائق ہے کہ شیش روپ ہے سترنگ برہم  
ہے اور اچھے لوگوں کی رچا کرنے والا ہے



मनुष्य उसको नित्यानन्द सम-  
न कर उसकी चाहना करते हैं  
अपनर्था नहीं है प्रयोजनजि  
स को धर्म अर्थ काम मोक्ष  
से महाकोषो बहुत सजा  
ना रखता है अर्थात् प्राणमय  
सोनेदी विज्ञान आनन्द स्थूल  
शीर कारण इत्यादि इसका  
स्ते कि रखना बहुत रखता  
है इसे उसका नाम महाको-  
ष है महाभागो बड़ा है भा-  
ग जिसका अर्थात् बड़े आनन्द  
रूप है महाधनः बड़ा धन  
माला है अर्थात् सम्पूर्ण धन  
धान्य को जो मुख और आन-  
न्द का कारण है उसने उत्प-  
न्न किया है ॥ ६४ ॥

मू. अनिर्विर्त्ताः स्थ-  
विष्टो भूधर्मपूयो म-  
हामखः । नक्षत्रने-  
मिर्नक्षत्री क्षमः क्षा-  
मः समीहनः ॥ ६५ ॥

टी. अनिर्विर्त्ताः नहीं है घमाड

मदम असको راحت सیرمدی جان کرے  
طالب ہیں انکو چھو نہیں ہی پر یوں  
جسکو دھرم اور ارتقا اور کام اور  
مکش سے مہا کو مشو بہت خزانہ  
رکھتا ہے یعنی پران بہت گیان اندری  
گیان آند استھول شریہ کارن عیوہ  
اسواسطے کہ خزانہ بہت رکھتا ہے اس  
وجہ سے اسکا نام مہاکوش ہے۔

مہا بھاگو بڑا ہی بھوک جسکا مینی  
مہا ب عیش و عشرت عظیم کا ہے۔  
مہا دھنہ بڑا ہی دھن جسکا مینی  
یہ وہ ذات ہے کہ تمام دولت کو جو عیش  
حصول لذت و عیش کی ہی پیدا کرتا ہے۔

اشلوک

انر پرتہ استھو پشو جھور دھرم  
پو یو مہا مکھہ - نکشتر نکشتری

کشمہ کشامہ سہی ہنہ

میکا

انر پرتہ نہیں ہے گھنہ

दक्षो सम्पूर्ण कार्यो की शीघ्रक  
रता है विश्रामो मोक्ष कोरता  
है अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि को जो  
उसका ध्यान करता है मुक्ति दे  
ता है विश्वदक्षिणः सब  
जगत् में चतुर है सब कर्मो  
का जाननेवाला है ॥ ६३ ॥

मू. वित्तिारः स्थावरः स्था  
णुः प्रमाणं बीजमव्ययं ।  
अर्थेनर्थो महाकोशो महा  
भागो महाधनः ॥ ६४ ॥

१. **विस्तारः** सम्पूर्ण जग-  
 त जिसमें विस्तार को प्राप्त  
 हो **स्थावरः** शील स्वभाव है  
 अर्थात् धीर है और सब को  
 धीरता देता है **स्थाणु** जिस  
 में पृथ्वी पति आदिक स्थित हो  
**प्रमाणां** प्रमाण करने वाला है  
 और प्रकट है **बीजमव्ययं**  
 अविनाशी है और उसके बीज  
 से नाना प्रकार की प्रजा उत्पन्न  
 हुई हैं अर्थात् सब जिस की  
 प्रार्थना करें और वह ऐसा है कि

و کوشش و سب کاموں کو جلد کرنا پسند فرماؤ  
کوشش کو دنیا ہی پر وہ ذات ہے کہ تمام  
عالم کو جو اسکا دھیان کرتا ہو نہایت  
دیتا ہی مینشو و کوشش و سب بخت  
سے پیشتر ہی یہ وہ ذات ہے کہ دانا سے  
تمام افعال و اعمال ہی

۱۰۰

نستاره استخوانه استخوان  
پرمانگنج بقیه نیک - آرخوا  
نرخو نما گز شو نما چو گو نما وخته

کا

بشارہ تمام عالم جس سے وسعت پاؤ  
استحواورہ خیل سبحا و الاہیہ وہ  
ذات ہی کہ خود قائم ہی اور سب چیزوں کو  
قیام بخشنا ہی استحواستہ جبین برقی  
ست وغیرہ قیام کرین پر مانگ پر مان  
کہ نبی الاہیہ وہ ذات ہی کہ ظاہر ہی سچ علیہ  
تنگ ابناشی ہی مینی وہ ذات ہی کہ جسکے  
تخم سے طرح طرح کی خلقت ظاہر ہوئی ہی  
ارکھو سب کی منت کرتے ہیں وہ ذات کہ

कहा है कि अधोक्षजः उसको  
कहते हैं कि जो सब जगह उत्प-  
न्न होये ॥ ४२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥

मृ चतःसुदर्शनः कालः  
पामष्ठापरिग्रहः । उग्रः  
सर्वस्वरोदक्षो विश्रामो  
विश्वदक्षिणः ॥ ६३ ॥

टी. चतुः समय रूप है अर्थात्  
सब चतुः उसी का रूप है सुद-  
र्शनः सुख पूर्वक भगवान्  
को देखे अर्थात् वह ईश्वर ऐ-  
सा है कि जिसके दर्शन से म-  
नुष्य विरक्त होकर मुक्ति को  
प्राप्त होता है कालः सबको  
गिन लेता है अर्थात् समय रू-  
प है परमेशी हृदय में रहने  
वाला है अर्थात् जो उसकी शर-  
ण जानै उसको बन्धन से छुटा  
देवै परिग्रहः शरण आने  
वालों को हाथ आवै जैसे प्रह्ला-  
द को उग्र सर्वस्वरो  
सूर्यादिक को भय देने वाला है  
अर्थात् गहन से भय नाश हो जा-  
ने का है सम्पूर्ण प्राणी जिसमें हैं

कहा है कि अधोक्षजः उसको  
कहते हैं कि जो सब जगह उत्प-  
न्न होये ॥ ४२ ॥ ६२ ॥ ६२ ॥

अश्लोक

रश्मे सुदर्शने काले प्रपञ्चस्थि  
प्रकृति - अग्रो स्मृति स्मृति  
शुक्ल श्रामो विश्रामो विश्रामो

मिका

रश्मे काले काले स्मृति स्मृति  
प्रकृति - अग्रो स्मृति स्मृति  
शुक्ल श्रामो विश्रामो विश्रामो  
यह वेदों का है कि जिसके दर्शन से म-  
नुष्य विरक्त होकर मुक्ति को  
प्राप्त होता है कालः सबको  
गिन लेता है अर्थात् समय रू-  
प है परमेशी हृदय में रहने  
वाला है अर्थात् जो उसकी शर-  
ण जानै उसको बन्धन से छुटा  
देवै परिग्रहः शरण आने  
वालों को हाथ आवै जैसे प्रह्ला-  
द को उग्र सर्वस्वरो  
सूर्यादिक को भय देने वाला है  
अर्थात् गहन से भय नाश हो जा-  
ने का है सम्पूर्ण प्राणी जिसमें हैं





दने बालानही है नयो जीव  
को ब्रह्म रूप कर देता है शर्मा  
त गनुषों को दयालुता और  
कृपालुता सिखाता है नयो  
नयः मोक्ष को प्राप्त कर देता  
है और नहीं है परमाणु प्रेम वा-  
ला जिस का व्योमः कर्म जा-  
ला है शक्ति मतां श्रेष्ठो  
ज्ञानार्थ वालों में श्रेष्ठ है धर्मों  
सब माणियों का धारण करने  
वाला है धर्म विदुत्तमः  
धर्म जानने वालों में उत्तम है ६१

यू. वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः  
प्राणदः प्राणवः पृथुः।  
द्वितीयगर्भः शत्रुघ्नो व्या-  
प्तो वायुरधोक्षजः। ६२।

श्री. वैकुण्ठः नहीं है संकोच  
जिस को और वह ऐसा है कि जि-  
सने पृथ्वी को पानी पर और वायु को  
आकाश में बहारा रखा है पुरु-  
षः मनुष्यों के सब पापों को भ-  
स करता है और सब के पविले है  
प्राणः क्रिया शक्ति वाला है

दिने वाला नहीं है तमिः जीव को ब्रह्म  
कर देता है तमिः जीव को ब्रह्म  
सकलता है तमिः जीव को ब्रह्म  
कर देता है और तमिः जीव को ब्रह्म  
जका ब्रह्म कर्म वाला है शक्ति  
मतां श्रेष्ठो ज्ञानार्थ वालों में श्रेष्ठ  
है धर्मों सब माणियों का धारण करने  
वाला है धर्म विदुत्तमः धर्म जानने  
वालों में उत्तम है ६१

अश्लोक

युक्तेषु तमिः जीव को ब्रह्म  
कर देता है तमिः जीव को ब्रह्म  
सकलता है तमिः जीव को ब्रह्म  
कर देता है और तमिः जीव को ब्रह्म  
जका ब्रह्म कर्म वाला है शक्ति  
मतां श्रेष्ठो ज्ञानार्थ वालों में श्रेष्ठ  
है धर्मों सब माणियों का धारण करने  
वाला है धर्म विदुत्तमः धर्म जानने  
वालों में उत्तम है ६१

युक्तेषु तमिः जीव को ब्रह्म  
कर देता है तमिः जीव को ब्रह्म  
सकलता है तमिः जीव को ब्रह्म  
कर देता है और तमिः जीव को ब्रह्म  
जका ब्रह्म कर्म वाला है शक्ति  
मतां श्रेष्ठो ज्ञानार्थ वालों में श्रेष्ठ  
है धर्मों सब माणियों का धारण करने  
वाला है धर्म विदुत्तमः धर्म जानने  
वालों में उत्तम है ६१

स्थित है स्तुष्टः सम्पूर्ण गुणों  
 वारके मुक्त है और सब स्थानों  
 में वर्तमान है शुभेष्टः  
 अच्छे हैं नेच जिसके और ऐ  
 सा है कि मुमुक्षु को मुक्ति दे  
 ता है और अज्ञान को दूर क  
 रता है ॥ ६० ॥

गृह्यः रामो विरामो विरजो  
मार्गो नैयो नयोनयः । सी  
रः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो  
धर्मविदुत्तमः ॥ ६१ ॥

गो. रामो सबयोगी जिसमें  
रमण करै उसको एम और फ  
एब्रहम कहते हैं **विरामो** सब  
प्राणी जिसमें लीन होजावै अ  
र्थात् वह ऐसा है कि जिसमें स  
तृष्टि अन्त को मिल जाती  
है **विरजो** नहीं है विषय की  
वृच्छा जिसको अर्थात् वह ई  
श्वर सकल दुःखों से परे है औ  
र वेदों में भी कहा है कि वह प  
वन से भी अधिक पवित्र है मा  
र्ग मोक्ष का उपाय है अर्थात् सिवा  
य उसके और कोई दूसरा मोक्ष का

تو کہی کہ ہستی شے نہ ہو کہ کو بر ایت ہی  
 ہستی بڑے گن کر کے محبت ہو اسی  
 وہ ذات ہو کہ سب جگہ پر موجود ہی۔  
 سچ کہتا ہے کہ جہ میں غیب ہے کہ یہ وہ ذات  
 ہی کہ خواہندگان نجات کو نجات دے اور  
 غفلت کو معدوم کرے۔

۹۱

لَا تُؤْمِرُ بِأَمْرِ رَبِّكَ مَا تَكْرَهُهُ  
يَتَذَكَّرُ أُولَئِكَ لِيُخَوِّفَهُمُ بِالْمَقَالِ

5

رُا مُو سب ہوگی جسمیں رُمن کریں اُسکو  
 رام اور پُر پُرجھ کہتے ہیں پُر اُمو سب  
 پُرانی جسمیں لین ہو جا رہیں یعنی وہ ذات  
 ہے کہ جسمیں تمام جہان آخر کو مل جاوے  
 پُر جو نہیں ہے بشر کی اچھا جسکو یعنی یہ  
 صفت اُس ذات میں ہے کہ کلفت اور  
 کدورت سے پاک ہے یہ میں بھی کہا ہے  
 کہ وہ پُور ہے بھی پُور تر ہے مار گور  
 کا آپا ہے ہی یعنی یہ وہ ذات ہے کہ  
 سوا اُسکے اور کوئی دوسرا نجات کا

سوا نے اُسکے اور کوئی دوسرا نجات کا

री अवसायो निश्चय रूप  
ह ईश्वर है कि संसार रूप प्र-  
कर है **व्यवस्थानः** सम्पू-  
र्ण जगत् को अलग अलग  
स्थित करने वाला है अर्थात्  
सकल सृष्टि उसके ज्ञान और  
अज्ञान से वर्तमान है **संस्था-  
नः** यहिले प्रकार जो स्थित हो  
हीर सागर में योगियों के हृ-  
दय में सूर्य माण्डल में उस ई-  
श्वर का स्वभाव है कि अंत को  
उसके होने के वास्ते यह स्थान  
अच्छे हो **स्थान दो** स्थान दे-  
ने वाला है अर्थात् वह ऐसा है  
कि ध्रुव इत्यादि को उनके कर्मा-  
नुसार स्थान देता है **ध्रुवः** स्थिर  
है अर्थात् वह ईश्वर ऐसा है कि  
अविनाशी है और किसी तरह  
से कभी नाश को प्राप्त नहीं हो-  
ता **परिधिः** परम है ऐश्वर्य अ-  
र्थात् अद्वि वाला है यह उसमें  
गुण है कि विभव अत्यन्त रास-  
ता है **परमस्पृहः** आत्मा में प्र-  
काशवान है और प्रकाश रूप  
होकर केवल आप ही आप

मिका

بسیار کوی فشی رُوب می ده ذات  
ہر کہ بصورت عالم ہی میوستانہ  
تمام عالم کو علیحدہ علیحدہ قائم کرنیوالا  
ہی ہے وہ صفت ہے کہ تمام عالم جرات  
و منہیات و مکروہات وغیرہ بعلم اسکے  
حاضر و موجود ہی **سَنَسْتَحَانِہ** بچے  
پر کار جو اِستِحقّت ہو چھیر ساگر میں یا  
جو گیون کے سروے میں یا سوچ مند  
میں اس ذات کی یہ صفت ہے کہ آخر کو  
واسطے ہونے اسکے کے یہ مقامات  
**اچھے ہون استحقان دو**  
استحقان ایسے والا ہی یہ وہ ذات ہے کہ  
قطب وغیرہ کو موافق عمل کے جگہ بننا ہی  
**وہر وہ** قائم ہے وہ ذات ہے کہ لازوال  
ہو اور کیوجہ سے فنا اسپر گزر کر ہی نہ رہے  
پریم ایشورج والا ہی یہ صفت اس ذات  
کی ہے کہ دولت و حشمت اعظم رکھتا ہے  
پر **سَنَسْتَحَانِہ** آتامین پر کاش مان ہے  
وہ ذات ہے کہ بصورت عقل محض خود بخود

कराणं करणं कर्त्ता वि-  
कर्त्ता गहनो गुहः ॥ ५८ ॥

६०. उद्भवः साया जगत जिससे  
पैदा हुआ क्षोभाणो भायाओ

रपुरुष को उत्पत्ति में लयावै-

हसुः प्रकाश रूप है श्रीगर्भः

लक्ष्मी है गर्भ में जिसके परमे

श्वरः सबसे अधिक ईश्वर है

कराणं विप्रकनवाला है का

राणं करनेवाला है कर्त्ता बनाने

वाला है विप्रकर्त्ता जगत् को

जोने का बतार का बनाना है गह

नो दुस्वकार के जान्ने योग्य है गु-

हः अपनी माया करके अपने रू-

प में लुके स्यात् अपने आप को

संसार रूप में छिपावै ॥ ५८ ॥

मूः व्यवसायो व्यवस्थानः

संस्थानः स्थान से ध्रुवः पर

दिः परमः स्वस्व सुदुः

हः सुभिक्षाणः ॥ ६० ॥

करुणं करुणं करुणं करुणं  
करुणं करुणं करुणं करुणं

अधिकारों का नाम है जिससे

है करुणं करुणं करुणं करुणं

बनाने का नाम है करुणं करुणं

है करुणं करुणं करुणं करुणं

में है करुणं करुणं करुणं करुणं

अधिकारों का नाम है करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

करुणं करुणं करुणं करुणं

दूसरा अर्थ यह है कि उसके पेट में सब सृष्टि है और तीसरा अर्थ यह है कि श्री कृष्णजी को यशोदाजीने रस्ती से बाँधा था मृत्यु सहने वाला है अर्थात् किसी के बुराई करने से बुरा नहीं मानता यह गुण केवल ईश्वर ही में है **मही धरो पृथ्वी का धारण करने वाला है** अर्थात् पहाड़ होकर पृथ्वी को स्थित किये है विष्णु पुराण में लिखा है कि जंगल और पहाड़ और दिशा सब उसी का रूप है **महा भागो** बड़ा हि भाग जिन का स्मरण कर ईश्वर ऐसा है कि अपनी इच्छा से संसार में प्रकट हुआ जैसे श्री कृष्ण अवतार और रामावतार **बेगवान्** मत्त से भी अधिका है बेग जिनका अप्रति-**ताशनः** वे प्रमाण है मोजन जिन का अर्थात् प्रलय के समय सब सृष्टि को रखा जाता है ॥ ५६ ॥

सू. उद्भवः श्रीभक्तोद-  
वः श्रीगर्भः परमेश्वरः॥

ایک مذوات ہو کہ ساتھ ضبط جو اس ظاہر و  
باطن کے اُسکو نہ پاسکے اور دوسرے معنی  
یہ ہیں کہ اُسکے پیٹ میں تمام عالم جو اور  
تیسرے معنی یہ ہیں کہ شرعی کرشن مہاراج  
اور جیو داخی نے رشتی سے پائندہ بھارتھا۔

ستم سے والا ہی بینی کیسے بُرائی کرنے  
 سے برا نہیں ماننا یہ صفت صرف ذات  
 پر مشرور میں ہی مئی و مہر و پر تھوی کا  
 کارخانہ کر نیوالا ہی مٹی بیشل پہاڑ ہو کر  
 زمین کو قائم رکھا چنانچہ بیش پران میں  
 لکھا ہی کہ صحرا کو وہ دجلہ اطراف صورت  
 اس پر مشور کی ہو رہا تھا گو برا ہی  
 بھاگ جگا اور یہ وہ ذات ہی کہ تجو اہش  
 پستہ عالم میں طور کیا جیسے شری کرشن  
 اور رام آوارہ ہو گیا اُن سے بھی کہ  
 سبک جگا یعنی ازیشہ بول سے بھی  
 ایوہ تیز قرار پڑا تھا پتہ پران پر تھو  
 جگا یعنی تپت میں سبب جگان کو کھاتا ہی

۱۰۰  
 ۱۰۱  
 ۱۰۲  
 ۱۰۳  
 ۱۰۴  
 ۱۰۵  
 ۱۰۶  
 ۱۰۷  
 ۱۰۸  
 ۱۰۹  
 ۱۱۰  
 ۱۱۱  
 ۱۱۲  
 ۱۱۳  
 ۱۱۴  
 ۱۱۵  
 ۱۱۶  
 ۱۱۷  
 ۱۱۸  
 ۱۱۹  
 ۱۲۰  
 ۱۲۱  
 ۱۲۲  
 ۱۲۳  
 ۱۲۴  
 ۱۲۵  
 ۱۲۶  
 ۱۲۷  
 ۱۲۸  
 ۱۲۹  
 ۱۳۰  
 ۱۳۱  
 ۱۳۲  
 ۱۳۳  
 ۱۳۴  
 ۱۳۵  
 ۱۳۶  
 ۱۳۷  
 ۱۳۸  
 ۱۳۹  
 ۱۴۰  
 ۱۴۱  
 ۱۴۲  
 ۱۴۳  
 ۱۴۴  
 ۱۴۵  
 ۱۴۶  
 ۱۴۷  
 ۱۴۸  
 ۱۴۹  
 ۱۵۰  
 ۱۵۱  
 ۱۵۲  
 ۱۵۳  
 ۱۵۴  
 ۱۵۵  
 ۱۵۶  
 ۱۵۷  
 ۱۵۸  
 ۱۵۹  
 ۱۶۰  
 ۱۶۱  
 ۱۶۲  
 ۱۶۳  
 ۱۶۴  
 ۱۶۵  
 ۱۶۶  
 ۱۶۷  
 ۱۶۸  
 ۱۶۹  
 ۱۷۰  
 ۱۷۱  
 ۱۷۲  
 ۱۷۳  
 ۱۷۴  
 ۱۷۵  
 ۱۷۶  
 ۱۷۷  
 ۱۷۸  
 ۱۷۹  
 ۱۸۰  
 ۱۸۱  
 ۱۸۲  
 ۱۸۳  
 ۱۸۴  
 ۱۸۵  
 ۱۸۶  
 ۱۸۷  
 ۱۸۸  
 ۱۸۹  
 ۱۹۰  
 ۱۹۱  
 ۱۹۲  
 ۱۹۳  
 ۱۹۴  
 ۱۹۵  
 ۱۹۶  
 ۱۹۷  
 ۱۹۸  
 ۱۹۹  
 ۲۰۰

भीम और सूर्यादि जिस से डरते  
हैं समय तो उत्पत्ति पावन  
संहार का जानने वाला है हवि  
हरिः यज्ञ के भागों का लेनेवा  
ला है हवि के अर्थ यह है कि जो  
कुछ होम में जल जाय और हरि  
के अर्थ यह है कि सब पापों को  
हर के मनुष्य को शुद्ध कर देवे  
सर्व लक्षणा सारे लक्षणों का  
एक देखता है लक्षणा यो  
सत्ता हुआ है लक्ष्मीवान  
लक्ष्मी वाला है समिति जयः  
संग्राम का जीतने वाला है ॥ ५७ ॥

सू. विश्वरो रोहि तो मार्गे  
हेतुर्दामोदरः सहः । म-  
ही धरो महा भागो वेग वा-  
न मिताशनः ॥ ५८ ॥

श्री. विश्वरो जगिनाशी है रो-  
हितो लाल है वार्ण जिनका  
मार्गो मुक्ति की इच्छा वालों को  
विचारने योग्य है हेतुः मुक्ति  
का देने वाला है दामोदरः-  
स्त्री जिसके उदर में बंधी हुई है

बेहम और सूरज وغیرہ جس سے ڈرتے  
ہیں سہم یگیو اثبت ہالین شگھار کا جاننے  
والا ہی ہجیر ہرہ بگ کے جاکون کا لینے  
والا ہی ہجیر کے یہ معنی ہیں کہ جو کچھ بیچ و خرید کے  
جل جابے اور ہرہ کے یہ معنی ہیں کہ سب  
گناہوں کو بخش کر تو ہی کو پاک کر دے  
سرب لکشن لکشنیو سب لکشن  
کر کے دیکھتا ہے لکشنی وان  
دولت مند ہی سہم جب  
شگھار کا جیتنے والا ہی

اشلوک

بکشر وروہتو مارگو پشرواموورہ  
سہم مہی دھرو متا بھاگو  
نیک وان متا شہنہ  
ٹیکا

بکشر و ابناشی مینی لازوال ہی مرہوتو  
لال ہی رنگ جسکا مارگو مکت کی اچھا  
والوں کو بچانے جوگ ہی ہمتہ مکت  
کا دینے والا ہی داموورہ رتی  
جس کے پیٹ میں بندھی ہوئی ہے

मू. पद्मनाभो रविन्दासः  
पद्मगर्भा शरीरभूत । म  
हर्दिनः श्रीरुद्रात्मा महा  
शो गरुडध्वजः ॥ ५६ ॥

श्री. पद्मनाभो कमल है ना-  
भि में जिनके अर्थात् ब्रह्मा रूप  
अरविन्दासः कमलवत हैं नेत्र जि-  
नके पद्मगर्भाः कमल है ग-  
र्भ में जिनके शरीरभूत श-  
रीर को धारण करे है महर्दि-  
नही है ऋद्धि अर्थात् तपस्या  
जिसकी चट्टनी बढ़ता हुआ  
है रुद्रात्मा ब्रह्मादिकों की  
जाता है महाशो अच्छे हैं  
नेत्र जिनके गरुडध्वजः ग-  
रुड है ध्वज में जिनके ॥ ५६ ॥

मू. अतुलः पराभीमः  
तत्त्वज्ञः सर्वज्ञः । सर्व  
ज्ञानमिति नयः ॥ ५७ ॥

श्री. अतुलः नहीं बराबर है  
जसके कोई पराभी शरीर  
का दिखाने वाला है भीमः

اشلوک  
پدم نامجو پند آگشته پدم گرچه  
شریر بخت - مهر و مهر و مهر  
بر و ها تاها کشوگر و مهر و مهر

ٹیکا

پدم نامجو پدم پند آگشته پدم گرچه  
شریر بخت - مهر و مهر و مهر  
بر و ها تاها کشوگر و مهر و مهر  
کی تاها تاها کشوگر و مهر و مهر  
گر و مهر و مهر و مهر و مهر و مهر

اشلوک

اگرچه شریر بخت و مهر و مهر و مهر  
سرب کشوگر و مهر و مهر و مهر و مهر

ٹیکا

اگرچه شریر بخت و مهر و مهر و مهر  
سرب کشوگر و مهر و مهر و مهر و مهر





सब को व्यवहार करने वाला  
है आता हो देवताओं को प्रा-  
ण का देवे वाला है ब्रह्म स वा-  
नुजः इन्द्र के छोटे भाई जै-  
से वासन अवतार दिग्गजां  
हैं किन्तु वे सब भी ब्रह्म के  
सबे अधिष्ठान सब का आ-  
धार हैं सब का प्रलय कर दि-  
त हैं जमीन पे तब रह है प्र-  
तिष्ठितः अपनी महिमा प्र-  
हित है ॥ ५३ ॥

नृ. वा. १०८  
जीवादिभ्योऽङ्गुलः ।  
वासुदेवो ब्रह्मज्ञानुसदि  
दिवः पुरन्दरः ॥ ५४ ॥

श्री. स्कन्दः अमृत रूप करके दि-  
 रै अर्थात् तप्त करै स्कन्द धरो  
 देवताओं का सेनापति अर्थात्  
 स्वामि कार्निव धुर्यो जगत् की  
 उत्पत्ति और पालन और संहार का  
 धारण करने वाला वर दो वर  
 दान देने वाला है वायु वा-  
 रुन्ः वायु है मयारी जिसकी

سب کا یہ بار کرنے والا ہی ترانہ و  
دیوناد کو بھی پران کا دینے والا ہے  
اس کا نام ہے جو نے بھائی جی  
ان کا نام ایک نر میں کا تھا  
مستشار تو یہی اور  
اس کا نام ہے جو نے بھائی جی  
اس کا نام ہے جو نے بھائی جی  
اس کا نام ہے جو نے بھائی جی

۵۷  
 میکا  
 برید بجان را و دیوه پرتله  
 بر دیو با تو با نه - پاسدیو  
 استگند و استگند و حرو و حرو

اسکندہ امرت روپ ہو کر جھرتا ہی  
یعنی سیراب کرتا ہی اسلئے دھرو  
دیوتاؤں کا سینا پت یعنی سوام کا تیک  
دھرو نو جگت کی آتش پت اور پالن  
اور سنگھار کرنے والا ہی ہے دھرو  
بردان دینے والا ہی یا پو یا پتہ  
پون یعنی بتوا ہے سواری جس کی

विश्वनाथमहर्षिः॥५२॥

मी-दुष्टों सब को प्यार है वि-  
 शिष्टः जन्तुर्ध्यामी रूप और  
 जन्मा है शिष्टेष्टः अच्छे  
 पुरुष प्यार हैं जिसको शिष्ट-  
 पादों गौर का पंख है जिसके  
 शिर के ऊपर लहुषी जपनी  
 माया करके बाँध लेता है कृ-  
 ष्णः भक्तों की वागना देता है  
 मोक्षदा लघुओं का क्रोध दूर  
 करने वाला है क्रोध कत  
 पापियों के ऊपर क्रोध करने  
 वाला है कर्त्ता सन्पूर्ण जगत्  
 का करने वाला है विश्नुवा  
 हुः जगत् की भुजा है मही  
 धरः पृथ्वी का धारण करने  
 वाला है जयार्त वाराह रूप  
 शेष रूप होकर ॥५२॥

मूः अच्युतः प्रथितः प्रा-  
णः प्राणरोवासवानुजः  
अपांनिधिस्थिमानमप्र-  
मत्तः प्रतिष्ठितः ॥ ५३ ॥

ली. अच्युतः जन्मसे रहित है  
प्रथितः विख्यात है प्राणाः

پیشو بایر تھی و حرمہ -

۱۰۰  
 شیخ  
 ایشو سبکو نیارا ای پشیش  
 روپ آچھا ای پشیش  
 پیارے ہن جسکو شک نہ دی ہو کیا پتر  
 ہی جیکے سر کے اوپر شک ہو اپنی مایا ہن  
 باندھ لیتا ہی ہر دکھ بھگتوں کی کا منا  
 دینے والا ہی کرو دھ مانا دھو دھ  
 کرو دھ دور کر نیو الا ہی کرو دھ کر دھ  
 پاپیوں کے اوپر کرو دھ کر نیو الا ہی کر دھ  
 سب بھگت کا کر نیو الا ہی پشیش بابا ہم  
 بھگت کی بھیجا ہی تھی دھروہ پر تھوی کا  
 اٹھانیو الا ہی بارہ پشیش روپ ہو کر

اشلوک  
 اچوتہ پرتختہ پیرانہ پران دُو  
 باسو انجہ آپاگ ندم  
 روستا قمر اترتہ پرتختہ  
 میکا

آجیوتہ جنم سے بریت ہے  
نیرتھہ کیسا یعنی مشہور ہے برآں

मू. युगादिरुद्युगावर्तो  
नैकमायोमहाशनः। अद-  
श्यो व्यक्तरूपश्चसहस्र  
जिदनन्तजित् ॥ ५१ ॥

टी. युगादिकृत् जगत्काञ्चा-  
दि करनेवाला है युगावर्त्तोयु-  
गोंका वर्त्तानेवाला है नेकमा-  
यो नहीं है एक माया जिसके म-  
हाशनः बड़ा है भोजन जिस  
का अर्थात् सब संसारको एक  
प्रास करके समाप्त करता है अ-  
दृश्योदेखनेमें नहीं आता है य-  
ह भी ईश्वर का एक गुण है कि इ-  
न्द्रियोंसे परे होकर अज्ञानः  
स्वयंप्रकाश है रूप जिसका अ-  
र्थात् सृष्टिरूप होकर आपही  
प्रकट और प्रकाशित है सहस्र  
जित् हजारों को जीतने वाला  
है अनन्तजित् बहुतों को  
जीतने वाला है ॥ ५१ ॥

मू. दृष्टोविशिष्टःशिष्टे  
ष्टःशिखाडीनहुषोवृ  
षः। क्रोधहाक्रोधकृतर्जो

۱۵  
اشلوک  
جگا و کر د جگا ر تو نمک مالو  
ما شنه - اور شیو بکت ر شج  
شهر عذ منت جت -

۱۱  
جگا و کرو جگا کا اور کرو الہی جگا کرو  
جگون کا برتا اور کرو الہی جگیت مایو  
نہیں ہر ایک مایا جگے مہا نشہ ہر  
مہوین جگا یعنی یہ وہ ذات ہے کہ تمام عالم  
کو آخر کار ساتھ ایک لقمہ کے تمام کر لیا  
اور شیو دیکھنے میں نہیں آتا ہے یہ بھی  
ایک صفت ذات پر مشہور کی ہے کہ خدا  
خسہ میں گنجائش پذیر نہیں ہے جگیت  
روپہ سو جگیت پر کاش ہر روپ جگا  
یعنی آپ ہی بصورت عالم یا اختیار خود غا  
ور روشن ہوا ہے ہر شے جہ ہزاروں کو جتنے  
والا ہے یعنی اوپر نیلا لیں کہ بھی مظهر و موصو  
امت جہت بے انتہا جتنے والا ہے

۵۲  
اسلوک  
اشویشی ششیشی شکشی  
سکه سکه سرورده ماکرودم

शशचिन्दुः खरगोष्ठी की ऐसी  
चिन्दी है जिसके सुरेश्वरः देव  
तान्त्रों का मालिक है ज्योषधं  
भक्तों की दवा है जगत्सेतुः  
जगत् का पुल है सत्यधर्म  
पराक्रमः सत्य और धर्म का  
पराक्रम है जिसको ॥ ४६ ॥

मू. भूतभव्यभवन्नाथः प  
वनः पावनो नलः। काम  
हा कामकृतकान्तः का-  
मी कामप्रदः प्रभुः ॥ ५० ॥

टी. भूतभव्यभवन्नाथः हो  
गया होगा है इन तीनों का मालि-  
क है पवनः सार जगत् को पवि-  
त्र करने वाला है पावनो पवि-  
त्र मानी पाक ज्ञात है अनलः  
प्राणों का धारण करने वाला है  
कामहा भक्तों का कामदेव  
हूँ करने वाला है कामकृत  
साधुओं के काम पूरे करै कान्तः  
सुन्दर है कामी मोक्ष चाहनेवा  
ले जिसकी कामना करै हैं का-  
मप्रदः कामना का देने वाला  
है प्रभुः समर्थ है ॥ ५० ॥

شش بندہ چندان کی ایسی بندی  
ہے جسے شش بندہ دیتا ہوں کاملہ ہے  
او گھنہ شک بھکتوں کی دوا ہے جگت  
سیتہ جگت کا پل ہے سیتہ و ہرم  
پر اگر مہ اچھے گیان کا پر اکرم ہے جسکو۔

اشلوک

بھوت بھتیہ بھوتنا تھہ پونہ  
پاؤنولہ۔ کام ہا کام کرت  
کانتہ کامی کام پرودہ پر بھہ

شکا

بھوت بھتیہ بھوتنا تھہ ہو گیا ہوگا  
ہو ان تینوں زمانوں کا مالک ہے پونہ سب  
جگت کو پونہ کر نیوالا ہے پاؤنولہ سب جگہ  
پاک ہے انملہ پر انون کا دھارن کر نیوالا  
ہے کام ہا بھکتوں کا کام دہور کر نیوالا  
ہے کام کرت سادھ لوگوں کی  
سورجہ پورن کرنے والا ہے کانتہ  
سندر ہے کامی موکش چاہنے والے  
جسکی اچھا کرتے ہیں کام پرودہ کامنا کا  
دینے والا ہے پر بھہ سمرتہ ہے۔

मू. ओजस्तेजोद्युतिधरः  
प्रकाशात्मा प्रतापनः। सृ-  
ष्टः स्रष्टाक्षरोमन्त्रश्चन्द्रा-  
शुभास्कारद्युतिः॥ ४८ ॥

टी. ओजस्तेजोद्युतिधरः  
प्राण का बल तेज प्रकाश का धा-  
रण करने वाला प्रकाशात्मा  
ज्ञान रूप है आत्मा जिसकी प्र-  
तापनः जगत् का प्रकाश क-  
रने वाला जैसे सूर्य और चन्द्र-  
मा **सृष्टः** धर्म ज्ञान वैराग का  
आसरा **स्रष्टाक्षरो** ओंकार  
है अक्षर जिसका **मन्त्रः** गुप्त का जामने  
वाला है **चन्द्राशु** चन्द्रमा है कि-  
रण जिसकी **भास्कारद्युतिः**  
सूर्य है प्रकाश जिसका ॥ ४८ ॥

मू. अमृतांशुद्वयोभा-  
नुः शशविन्दुः सुरेश्वरः  
शौषधं जगतः सेतुः स-  
त्यधर्मपराक्रमः॥ ४९ ॥

टी. अमृतांशुद्वयो अमृत  
रूपी किराणी से पैदा हुआ अर्थात्  
शौषधि भानुः प्रकाशवाना है

اشلوک  
او جس تجو دیوت و حمرہ پرکاش  
پر تپانہ۔ روضہ اشیشا کثر و  
مشرش چند را نشر بحا سکر دیوتہ

ٹیکا  
او جس تجو دیوت و حمرہ پران کا  
بل تج پرکاش دھارن کرنے والا ہے  
پرکاشا تھا عیان روپ ہو آتما جسکا  
پر تپانہ بکلت کا پرکاش کرنیوالا ہے جیسے  
سورج اور چندرمان روضہ دھرم گیان  
بیراگ کا آسرا ہے اشیشا کثر و اوکار  
انجیر جسکا مشر و گت کا جانور والا چند را  
چندرمان ہی کرن جسکی بحا سکر دیوتہ  
سورج ہی پرکاش جسکا -

اشلوک  
امرتانگ شود و جھو و بجائے شش  
بندہ سر نشورہ - او کھضت  
جگتہ سیتہ سقیہ و حمرہ پر اکرمہ -

ٹیکا  
امرتانگ شود و جھو و امرت روپی کرے  
ہید امو ابینی او کھرم بجائے پرکاش والا ہے

क्षानादिक दिया उसको बढ़ा-  
ता है बड़ मानश्च ब्रह्मादि-  
क सम्पूर्ण प्रजा को बढ़ाता है  
विविक्तः उत्पत्तिरहित है  
श्रुति सागरः सकल चेशं  
का समुद्र है ॥ ४६ ॥

मू. सुभुजो दुर्द्धरो वाग्मी  
महेन्द्रो वसुदेवसुः। नैक  
रूपो रूहद्रूपः शिपिवि-  
ष्टः प्रकाशनः ॥ ४७ ॥

री. सुभुजो अच्छे हैं भुजा जि-  
सके अर्थात् वह संसार की र-  
क्षा के वास्ते अच्छे भुजा रख-  
ता है दुर्द्धरो दुर्धर करके धा-  
रणा होती है जिसकी वाग्मी  
वेद वाणी का पैदा करने वाला है  
महेन्द्रो ब्रह्मादिक का पति  
है वसुदेव धनदायक है वसुः  
वायुरूप है नैकरूपो अनेक  
रूप है रूहद्रूपः बड़ा है रूपवि-  
ष्टका शिपिविष्टः जग के जीवों में  
बास करने वाला है प्रकाशनः  
प्रकाश करने वाला है ॥ ४७ ॥

وان دغیره دیا آسکو بڑھاتا ہے۔  
بروہر ماناشچ برہما دغیره سب  
پر جا کو بڑھاتا ہے بیکتہ اثبت  
سے بہت ہی سرت بھاگروہ تمام  
بیدون کاشندر ہی۔

اشلوک

سُبھجھو در دھرو باگی میندرو  
بس دو بستہ۔ نیک رو پو پو  
رو پو شپیشٹہ پر کاشنہ۔

ٹیکا

سُبھجھو اچھے ہیں بھجھکے یعنی یہ وہ ذات  
ہر کہ جسکے بازو واسطے محافظت ظالم کے  
بہت اچھے ہیں در دھرو مشکل سے دھاتا  
ہوتا ہی باگی بید بانی کا پیدا کرنی والا ہی  
میندرو بروہر دغیره کا پتہ ہی کسندرو  
دھن دینی والا ہی کسندہ یا پو روپ ہے  
نیک رو پو ایک روپ میں برہم روپ  
بڑا ہی روپ جسکا شپیشٹہ بھکت  
کے جیون سے تراس کرنے والا ہے  
پر کاشنہ پر کاش کرنی والا ہی۔

संस्तुत जिसका विशिष्टः सर्व  
से अधिक है शिष्टकृत अच्छे  
आचारों की पालना करने वाला है  
शुचिः सिद्ध है सिद्धार्थः सि  
द्ध है अर्थ जिसके सिद्ध संक  
ल्पः सिद्ध है संकल्प जिस के  
अर्थात् चित्त उसका परमानन्द  
है सिद्धिदः कर्म का फल देने  
वाला है सिद्धि साधनः सिद्धि  
यों का सिद्ध करने वाला है ॥ ४५ ॥

मू. वृषाही वृषभो विष्णुर्व  
षपर्वा वृषोदरः। चर्द्धनो  
वर्द्धमानश्च विचिन्तः शु  
तिसागरः ॥ ४६ ॥

री. वृषाही बारह दिन की य  
ज्ञ करके सिद्ध हो अर्थात् शुभ क  
र्म का उत्पन्न करने वाला है वृ  
षभो भक्तों को कामना दे वि  
ष्णुः विशेषता करके सब में चले  
अर्थात् अति शीघ्र गामी है वृ  
षपर्वा नाना प्रकार की मजा उ  
त्पन्न करे वृषोदरः बैल का उ  
दर है अर्थात् सब संसार उसके  
पिठ में है चर्द्धनो जो भक्तों ने

सर्वोप जकाथ श्च से ओहक  
है श्च श्च कर्त अच्चे आचरों की  
पालना करे वाला है श्च  
सिद्ध है सिद्धार्थः सिद्ध है  
सिद्ध है अर्थ जिसके सिद्ध संक  
ल्पः सिद्ध है संकल्प जिस के  
अर्थात् चित्त उसका परमानन्द  
है सिद्धिदः कर्म का फल देने  
वाला है सिद्धि साधनः सिद्धि  
यों का सिद्ध करने वाला है ॥ ४५ ॥

अश्लोक

४५  
ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य श्रम पर  
ब्रह्मचर्य - ब्रह्मचर्य  
मार्ग ब्रह्मचर्य सागर

श्लोका

४६  
ब्रह्मचारी बारह दिन की य  
ज्ञ करके सिद्ध हो अर्थात् शुभ क  
र्म का उत्पन्न करने वाला है वृ  
षभो भक्तों को कामना दे वि  
ष्णुः विशेषता करके सब में चले  
अर्थात् अति शीघ्र गामी है वृ  
षपर्वा नाना प्रकार की मजा उ  
त्पन्न करे वृषोदरः बैल का उ  
दर है अर्थात् सब संसार उसके  
पिठ में है चर्द्धनो जो भक्तों ने



टी. सुप्रसादः अच्छा प्रसन्न  
है प्रसन्नात्मा सरा रहै प्र-  
सन्न आत्मा जिसकी विश्व  
धुक् जगत की रक्षा करै और  
अपने ज्ञान ऐश्वर्य्य करके जग-  
त को संहार करै विश्वभुग  
विभुः प्रलय काल में जगत  
को संहार करै विराट रूप है स-  
त्कर्ता ब्रह्मा का सत्कार कर-  
ने वाला है सत्कृतिः ब्रह्मादि  
को का पूज्य है साधुः सब का का-  
र्य्य सिद्ध करता है जह्नुः मनु-  
ष्य और सब जीवों को संहार  
करता है नारायणो जब है  
स्थान जिसका और नर रूप है  
नरः भक्तों को कर्म में लगा-  
ता है ॥४४॥

मू. असंख्येयो प्रमेयात्मा  
विशिष्टः शिष्ट कच्छुचिः ।  
सिद्धार्थः सिद्ध संकल्पः सि-  
द्धिदः सिद्धि साधनः ॥४५॥

टी. असंख्येयो असंख्य योनि  
अप्रमेयात्मा वे इच्छा है

सिका  
سم سادہ آتھا پرست بر شایا  
سدار ہی پرست آتھا جسکی بشود دھم  
جگت کی رچھا کرنے والا اور اپنے گمان  
ایشورج کر کے جگت کو سنگھار کر نوا  
بشود بھگت بچھہ پر لی کال میں  
جگت کو سنگھار کرتا ہی براٹ روپ  
ہو کر ست کرتا بر مھا کاست کار  
کرنے والا ہی ست کرتے بر مھا کو  
کا پوجی ہی سادہ دھم سب کا کارج  
سدم کرتا ہی جہنم آدمی اور سب جیو کو  
سنگھار کرتا ہی نارامیو بل ہی استھان  
جسکا اور نر روپ ہی نرہ بھکتوں کو

کرم میں لگاتا ہی۔  
اشلوک  
آسکھو یو پرے یا تھما بشد  
شست کرت چھیہ سدها رتھ  
سدها شکپہ سدها دہ سدها سادہ

ٹیکا  
آسکھو تو اسکھو جن معنی ہے انتھامطر  
کائنات ہی پرے یا تھما ہے اچھا ہی

आवर्त्तनो उत्पत्तिश्चौरपालनश्चौरनाश करनेवाला चौरयह कि संसारी चक्र का फिराने वाला है निवृत्तात्मा ज्ञान करके हरा हुआ है संसार से आत्मा जिसका अर्थात् संसारी बन्धन से अलग है सम्बृत्तः पूर्ण भक्ति हो कर बड़ा हुआ है अर्थात् संसार में गुप्त हो कर व्यापक है सम्प्र-मर्दनः प्रलय काल में संसार को संहार करने वाला है अहः सम्बर्त्तनको मन का बरताने वाला चौर खो देने वाला है वल्लिः जीव का बरताव करने वाला है चौर सहा प्रलय काल रूप है चौर यह उसके प्रताप की प्रशंसा है अपनिलो नहीं है प्रमाण जिसका चौर यह कि अनादि है धराणीधरः पृथ्वी का धारण करने वाला है ॥ ४३ ॥

मू. सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः सत्कर्ता सत्कृतिः साधुर्जगन्नायणो नरः ॥ ४४ ॥

५५

آبر تو آفتاب اور پالن اور سنگھار کرنے والا ہے اور یہ کہ دائرہ عالم کو گردن کرنے والا ہے نمبر تا تمام گمان کر کے ہٹا ہوا ہے سنسار سے آگے جسکا مینی فیروز عالم پاک ہے شمع برترہ پورن شکست کر کے ڈھکا ہوا ہے مینی پوشیدہ محیط عالم ہے شمع برترہ دہ پرانی کال میں جگت کو مردن کرنے والا مینی فنا کنندہ عالم ہے امہ نمبر تکوین کو برتاؤ سننے والا اور کھودینے والا ہے نمبر جھوکا برتاؤ کرنے والا اور بصورت قیامت کبریٰ ہے اور اسکے جلال کی صفت ہے آملو نہیں ہے برمان جسکا اور یہ کہ ایتہ انین نکھتا دھرنی دھره پر تقوی کا دھان کرنے والا ہے۔

اشلوک

سپر سادہ پرستنا تا بشودرگ شو جھاک بھجہ ست کرتا ست کرتہ سادہ جہر تا اینوزہ۔



नारायणरूप है और यह कि स-  
ब विद्याओं का सिखाने वाला और  
पैदा करने वाला है **गुरु त-**  
**मो** बड़ा गुरु अर्थात् ब्रह्मादि-  
को ब्रह्मविद्या का सिखाने वाला  
है **धाम** ज्योति सरूप का  
रूप है और यह कि सब के स-  
नेहों का धाम है **सत्यः** प्राणि-  
यों का आसरा है सच्चा है **सत्य**  
**पराक्रमः** सत्य है पराक्रम  
जिसका निमिषो योग और  
निद्रा में लपटने नेत्र को पहुँचने  
अर्थात् महा माया और सोने  
जागने में बराबर है **अनि-**  
**मिषः** तन्त्र बोध रूप है और  
भी निहंग रूप है **सर्वी** वैजयं-  
ती माला वाला है **वाचस्पति-**  
**हृदारधीः** सारी विद्याओं का  
पति और उदार है बुद्धि जिसकी  
और यह कि बुद्धि उसकी सब  
भेदों के जानने वाली है ॥ ४१ ॥  
**सू. अग्रणीर्गामणीः श्री**  
**मान्वायोनेता समीरणाः ।**  
**सहस्रमूर्त्ति विश्वात्मा सह**  
**स्वाधः सहस्रपात् ॥ ४२ ॥**

नारاین روپ نی اور یہ کہ آفریننده و آفریننده  
جملہ علوم کا ہی گھر سمجھو اور اگر وہی یعنی بڑھا  
وغیرہ کو برہم بڑیا کا سکھانے والا ہے  
وہ عام جو ت سروسرپ پرکاش روپ  
یعنی محض شعلہ نور ہے اور یہ کہ سب کے  
مطالب کا مکان وہی ہے سچا سچا  
کا آسرا ہے اور راست باز ہے سچا  
مرا کر مہ سچا ہی پر اکرم جسکا سچا  
بہتر اور میں اپنی انکھوں کو بند کر کے نہیں مہایا  
اور یہ کہ خواب و بیداری میں یکساں ہے  
انکھیں تو بودہ روپ ہی اور یہ کہ بصورت  
ننگ ہی سرگرمی بخینتی بالاولا ہی اور  
یہ کہ خلاصہ صبح غامر کا اپنے گلوں میں کھتا ہے  
باجسپت روار دھی سب بڑیا کا  
مالک ہے اور اوار ہے بڑھ چکی اور یہ کہ عقل  
اُسکی جاننے والی سب جانی کی ہے

اشلوک

اگر تیر گرانہیہ شرمایان نیایو  
نیتا سمیرنہ سہسرمور دھا  
بشواتا سہسراگشہ سہسراپاٹ

जिसकी सर्वदृक् सबकारेखने  
वाला है सिंहः सिंह है अर्थात् है-  
त्य रूपी मृग का मारने वाला है सं-  
धाता कर्म फल करके पुस्त्रों को  
गति करने वाला और यह कि सृ-  
ष्टि को प्रकट किया है संधिमा-  
न कर्म फल को देने वाला है और  
कर्म का फल भोगने वाला है-  
स्थिरः एक तरह पर स्थिर है  
अज्ञो भक्त जनो के हृदय में  
आने वाला अर्थात् गुप्त प्रकट में  
आने वाला दुर्मर्षाः दुःसकार  
के संभालने योग्य है और यह कि  
कोई उसका सामना नहीं कर सकता है  
शास्ता पुरुषों को कर्म का बना-  
ने वाला विश्रुतात्मा विशेषता  
करके विख्यात है स्वरूप जिसका  
सुरारिहा देवताओं के शत्रु  
बोगों का मारने वाला है ॥ ४० ॥

मू. गुरुगुरुतमो धाम  
सत्यसत्य पराक्रमः। नि-  
मिषो निमिषः सुखी वाच-  
स्यतिरुदारधीः ॥ ४१ ॥

मि. गुरुतप का उपदेग करने वाला

जैसे सर्प द्रुम सब का दیکھے والا  
یعنی سب باتوں کو دیکھتا ہے سنگھ  
مرگ کا ماری والا ہے سندھ کا کرم پہل  
کر کے پریشون کو گت دینے والا ہے اور یہ کہ  
پرودہ عدم سے عالم کو بے نقہ نشود لایا ہے  
سندھ کا کرم پہل کا بھگنے والا اور دیکھ  
نیو اعمال کا ہے استعصر ایک طور پر قائم ہے  
اچھ بکثرت کے پردی میں یعنی ظاہر و باطن  
انیوالا ہے ورم کھنڈہ دکھ کر کے سمجھ کر ہے  
اور یہ کہ شیطان تعالیٰ اسکا نہیں کر سکتا ہے  
سنا سنا پریشون کا کرم بنانے والا ہے  
بیشتر ماتما خصوصیت کے ساتھ ظاہر سے  
سروپ جسکا۔ سزار کا دیوتاؤں  
کے دشمنوں کا ماری والا ہے

اشلوک

گرگزگرمودھام سنیہ  
پراکرمہ۔ نکمہ بکھمہ سرگوی  
باچیت روزار دھی  
لیکا

گرگزہ تپ کا اپیش کرنے والا

मी. मरीचिः किरणो बाला सूर्य  
रूप है अर्थात् सब प्रकाश उससे  
प्रकाशित है दमनो दुष्टो को  
अपने धर्म पर लाने वाला अ-  
र्थात् कुकर्मों मनुष्यों को कुक-  
र्म का दण्ड देता है हंसः संसा-  
र के बन्धन को दूर करने वाला  
जी। यह कि काल रूप हो कर  
सृष्टि को संहार करता है सुप-  
र्णो सुन्दर हैं पंख जिसके अर्था-  
त् गरुड रूप भुजगो तमः  
सर्पों में श्रेष्ठ जैसे शेष नाग सब  
सर्पों में श्रेष्ठ है हिरण्यना-  
भः सुन्दर है नाभि जिसकी सु-  
तपाः सुन्दर है तप जिसका  
अर्थात् वही नाथ पद्मनाभः  
कमल है नाभि में जिसके प्र-  
जापतिः सब सृष्टि ब्रह्मा  
आदि का मालिक है ॥ ३८ ॥  
मू. अमृत्युः सर्ववृत्तिं  
हः संधाता संधिमान्निष्  
रः। अजो दुर्मर्षणः शास्ता  
विश्रुतात्मा सुगारिहा। ४०  
मी. अमृत्युः नहीं है सत्यु

मरीचिका - مریچک کہ دکن والائینی نورجیو  
ہی یعنی سب روشنی اس سے روشن ہیں و  
دشمن کو اپنے دھرم پر لانیوالا یعنی بدوں کو  
ساتھ نہ لے اے اعمال بد کے پہنچاتا ہے ہنس  
سنسار کے بندھن کو دور کر نیوالا ہے اور یہ کہ  
بصورت قضا ہو کر موجودات عالم کو نیست  
و نابود کرتا ہے سپر نو سندرمین بکھر  
بازو جسکے گرد و روپ کہ وقت پر داز کے  
ساتھ خوبی اور زیبائی کے نظر آتا ہے۔  
بھگوانو شتمہ سانپوں میں سریشٹھ یعنی  
افضل جیسے شیش ناگ یعنی بچ خلقت آرد  
و ماراں اس سے بڑھ کر اور کوئی نہیں ہے ہیر  
نا بھہ سندرمین بکھر جسکی شستیاہ سندرم  
تپ جسکا یعنی بدرمی ماتھ پو پندرم نا بھہ  
کھل کی ایسی ہی نا بھہ جسکی - پر جا پتر  
برمھا دکن کا پت یعنی مالک موجودات ہے۔  
اشلوک  
امرتیہ سرت دن سنگھ سندا  
شیمان شتھرہ - احو و مر کھنہ  
شاستا شستار شستار نا -  
میکا - امرتیہ نین ہی مرث

मू. महेष्वासो मही भर्ता  
जीनिवासः स ताङ्गतिः  
अनिरुद्धः सुरानन्दो गो-  
विन्दो गोविशं पतिः ॥ ३५ ॥

यीः महेश्वासो बड़ा है धनुषजि  
 सका अर्थात् संसार की पालना  
 और उत्तमनि और नाश करता है  
 महीभर्ता पृथ्वी का पति है  
 श्रीनिवासः लक्ष्मी वसे है जि  
 सके सतांगतिः सत्पुरुषों  
 की गति है अनिरुद्धः नहीं है  
 किसी शत्रु से रुकने वाला सुरा  
 नन्दो देवताओं का आनन्द  
 देने वाला है गोविन्दो सात  
 ललोक से पृथ्वी का लाने वाला  
 है गोविदां पतिः वेदके जानने  
 वालों का पति है ॥ ३८ ॥

मृ. मरीचिर्दमनोहंसः सु-  
पर्णो भुजगोत्तमः । हिर-  
ण्यनाभः सुतपाः पद्मना-  
भः प्रजापतिः ॥ ३६ ॥

انفلو

میں کو اس وقت ہی میرا شری نوا  
سنا کہ کہتے - آؤ وہ میرا  
گوئی وہ کہہ انک پتہ

ہمیکہ اسو بڑا ہی دھنکے جکائی انوشتر  
 و پرورش و فناء عالم کرتا ہے۔  
 مہی بھرتا پر تھوی کا پتہ مہی ملک  
 ہی شری نو اسہ بھی بستی جو جسک  
 ستانک گتہ اچھے پر شون کی گت  
 مو اند دھہ نہیں ہو کسی دشمن سے  
 رکھنے والا۔ سمر اند و دیوتاؤں کا  
 کند دینے والا ہی گوہند و رسالہ  
 پاتال لوک سے پھوی کا لانے والا ہے  
 گوہند انک پتہ بید کے جاننے والا  
 پتہ ہی مینی دانندہ کلام الہی -

اشکر

۱۲  
 مخرج دمنونده سپر نو جگوه  
 سر قییه ناجیه ستیاه پدم  
 ناجیه بر جایت

आनन्द जिसको और यह कि के-  
ल और सामर्थ्य उसके बराबर कि-  
सी को नहीं है महाबलः बड़ा है  
बल जिसका अर्थात् उससे अ-  
धिक कोई बली नहीं है ॥ ३६ ॥

मू. महाबुद्धिर्महावीर्यो  
महाशक्तिर्महाद्युतिः ।  
अनिर्द्वयवपुः श्रीमानमे-  
वात्मा महाद्रिष्टका ॥

श्री. महाबुद्धिः बड़ी है बुद्धि  
जिसकी महावीर्यो बहुत  
है पराक्रम जिसका महाश-  
क्तिः बड़ी है शक्ति जिसकी म-  
हाद्युतिः बड़ी है प्रभा जिसकी  
अनिर्द्वयवपुः लोगोंसे बहुत  
त है रूप जिसका अर्थात् कोई  
उसका पता नहीं चलता सकता है  
और जो कोई उसको देख सकता  
है श्रीमान् लक्ष्मी वाला है  
उसमें आत्मा ने प्रमाण है बु-  
द्धि जिसकी अर्थात् कोई उस  
की बुद्धि से नहीं पास होता है म-  
हाद्रिष्टक मन्दराचल पर्व-  
त का धारण करने वाला है ॥

अन्तर्जको और यह कि शक्ति और बल  
जिनमें भी है बल और शक्ति  
जिसे अधिक को शक्ति नहीं कहता है -

अश्लोक

महाबुद्धिर्महावीर्यो  
महाशक्तिर्महाद्युतिः ।  
अनिर्द्वयवपुः श्रीमानमे-  
वात्मा महाद्रिष्टका ॥

श्री

महाबुद्धिः बड़ी है बुद्धि  
जिसकी महावीर्यो बहुत  
है पराक्रम जिसका महाश-  
क्तिः बड़ी है शक्ति जिसकी म-  
हाद्युतिः बड़ी है प्रभा जिसकी  
अनिर्द्वयवपुः लोगोंसे बहुत  
त है रूप जिसका अर्थात् कोई  
उसका पता नहीं चलता सकता है  
और जो कोई उसको देख सकता  
है श्रीमान् लक्ष्मी वाला है  
उसमें आत्मा ने प्रमाण है बु-  
द्धि जिसकी अर्थात् कोई उस  
की बुद्धि से नहीं पास होता है म-  
हाद्रिष्टक मन्दराचल पर्व-  
त का धारण करने वाला है ॥



को उलंघन करने वाला संग्रहः  
संहार करने वाला सर्गो संसार  
रूप अर्थात् सब का पैदा करने  
वाला धृतात्मा जन्म रहित  
नियमों प्रजा को अपने धर्म  
में लगाने वाला यमः समाप्त  
करने वाला है ॥ ३५ ॥

मू. वेद्यो वैद्यः सदा योगी  
वीरहा माधवो मधुः । अ-  
तीन्द्रियो महामायो महो-  
त्साहो महाबलः ॥ ३६ ॥

श्री. वेद्यः जिनको संसार में मु-  
क्ति की इच्छा है उनका जानने  
वाला और मुक्ति को देने वाला  
वैद्यः सब जज्ञों और चारों के-  
दों का जानने वाला सदा योगी  
सदा है योग जिसके वीरहा  
देव्यों को मारने वाला माधवो  
ब्रह्म वेद का पति मधुः ज्ञान  
न्द वायक शक्त की तरह श-  
तीन्द्रियो इन्द्रियों से रहित है  
महामायो बड़ी है माया जि-  
सकी महोत्साहो बड़ा है

کو انگشت کرنے والا ہی شکر ہے ہر کمال  
میں لکھا کر نویں والا ہی شکر کو سنار روپ یعنی  
آفرینندہ خلائق ہی دھرتا کا ختم رست  
و انبیا نشی ہی تمجید پر جا کو اپنے دھرم میں  
لگائے والا ہی تمجید آخر کر نویں والا ہی۔

اشلوک

بندہ یو بید یہ سدا جوگی بندہ  
ماو هو و مدھہ۔ ایتندریو مہا  
ما یو مہو تسا ہو مہا بلہ

اشلوک

بندہ یو بیکو سنار سے نکلت ہو جائیگی اچھا  
سوی لکھا جائے والا اور نکلت کا دینے والا ہی  
بندہ یہ سب انگوں بہت چار و بیک کا جاننے  
والا ہی سدا جوگی سدا ہی جوگ جس کے  
بندہ کا دیشیوں کا مارنے والا یعنی کشندہ  
عزت تان ہی ماو هو و برہم بیک کا پت  
ہی مدھہ آتند روپ ہی لینے مانندہ  
کے علاوہ بخش ہی ایتندریو اندریوں سے  
لگ میں عاقل شمسین رکھتا ہی مہا مایو  
بڑی ہی مایا جسکی یعنی اسکی مایا میں سب  
جو بندہ ہر تہ میں مہو تسا ہو مہا ہے

विश्वयोनिः जगत् की योनि  
है अर्थात् उत्पत्तिका स्थान है पु-  
नर्वसुः चारम्बार जीवों में वसे  
अर्थात् देह में रहै ॥ ३४ ॥

मू. उपेन्द्रो वामनः प्रांशु-  
रमोघः शुचिरुज्जितः। अ-  
तीन्द्रः संग्रहस्सर्गो धृता-  
त्मा नियमो यमः ॥ ३५ ॥

श्री. उपेन्द्रो गेलोक में रहने वा-  
ला है और इन्द्र के छोटे भाई  
राजा बलि की भी कहते हैं कि  
जिनके वास्ति वामन अवतार  
धारण किया वामनः वाम-  
न रूप होकर राजा बलि के म-  
द को दूर किया प्रांशुः सब से  
ऊँचा है और जो कोई तीनों  
लोक को तीन पैर से नापे उस  
की भी प्रांशु कहते हैं अमोघः  
नहीं है वे अर्थ चेष्टा जिसकी अ-  
र्थात् जिस तरह पर जो कोई उस  
को ध्यान करता है उस तरह पाव-  
ह उसको पाना है शुचिः पापियों  
की पवित्र करने वाला है उज्जितः  
अत्यंत बलवान है अतीन्द्रः इन्द्र

पश्चिम जूनें تمام دنیا کا محل آفرینش ہے  
پھر بسے بار بار حیوان میں بسوئی ہے  
میں آتا ہے یہ وہ ذات ہے کہ محل آفرینش

تمام عالم کا ہے  
اشلوک ۳۵

اپنی دُر ویا منہ پر انشتر ہو گئے شیخ  
روز جہ - اتیندرہ سنگر  
سنگر کو دھرتا تھا میو میو

شیکا ۳۵

اپنی دُر وگو کوک میں رہنے والا اور انڈر کے  
چھوٹے بھائی یعنی راجا بل کو بھی کہتے ہیں  
جکے واسطے باؤن اوتار دھارن کیا یا منہ  
باؤن اوتار رکھ کر راجا بل کا ابھان دور کیا  
پرانشر سے اونچا ہے اور یہ کہ کوئی  
تین لوک کو تین قدم کر کے ناپ سکے  
بھی پرانش کہتے ہیں اموگھ نہیں ہے  
بے ارتھ چہیٹھا جسکی یعنی جو کوئی بے طرح  
اسکا دھیان کرتا ہے وہ اسکو اس طرح  
پاتا ہے شیخہ پاپیوں کو پوتر کرنے والا  
ہے اور جہ بل میں پرانہ یعنی بہت  
صاحب قوت ہے اتیندرہ انڈر



विचार करने वाला अर्थात् भूत  
भविष्य वर्तमान तीनों काल उ-  
सी में हैं कविः तीनों काल  
का जानने वाला है ॥ ३२ ॥

मू. लोकाध्यक्षः सुराध्य-  
क्षो धर्माध्यक्षः कृताकृ-  
तिः । चतुरात्मा चतुर्व्यू-  
हश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः ॥ ३३ ॥

मू. लोकाध्यक्षः लोकों का  
मालिक है सुराध्यक्षः देवतों  
का स्वामी है धर्माध्यक्षः ध-  
र्मों का मालिक है कृताकृतिः  
कारण कार्यरूप है चतुरात्मा  
चार आत्मा हैं जिनके अर्थात्  
चार गुण हैं पैदा करना १ पाल-  
ना २ बनाये रखना ३ संहार क-  
रना ४ चतुर्व्यूहः चार हैं भु-  
जा जिनके वासुदेव १ संकर्षण  
२ प्रद्युम्न ३ अनिरुद्ध ४ जीर-  
मी यह कि ब्रह्मा विष्णु महेश  
हिरण्यगर्भ उसकी सृष्टि हैं च-  
तुर्दंष्ट्रः चार हैं दाढ़ जिसके अ-  
र्थात् नरसिंह अवतार में चार

प्यारने वाला मनी अस्की दाढ़ मاضि و حال  
و استقبال ہر۔ کتبہ نرکال کا جاننے  
والا مینی سب کا ناظر ہو۔

اشلوک

لوکا و دیگشہ سر او دیگشہ دھرم  
و دیگشہ کرتا کرتیہ۔ چتر اتما چتر  
بیوتیش چتر و گنگشہ چتر بھوجہ

شیکا

لوکا و دیگشہ لوکا مالک مینی سب عالم  
با اختیار اسکے سر او دیگشہ دیوتا و لوکا  
مالک ہی دھرم او دیگشہ دھرمون کا  
مالک ہی مینی سب کی نیکی اور بدی وغیرہ  
کا دیکھنے والا ہے کرتا کرتیہ کارج  
اور کارن کا روپ ہی چتر اتما چار ہیں  
اتما کے مینی چار صفت ہیں جسکے مینی  
پیدا کرنا۔ پالنا۔ قائم رکھنا۔ نابود  
کرنا چتر بیوتیش چار ہیں بھاگ  
جسکے پاس دیو۔ شکر کھن۔ پر دمن اور  
انر دھ اور یہ کہ بر بھائین مینیش برتتہ  
گر بھ بھی اُسکی خلقت ہیں چتر و گنگشہ  
چار ہیں داڑھ جسکے مینی نرنگم اتما رہیں چار

स्थिर है अर्थात् सदा एकरस है  
वरा रो हो अेष है सवारी जिस  
की शेष और यह कि जो कोई  
उसमें लय होजाय फिर संसार  
में न आवे महातपाः बड़ा है त  
पजिसका ॥ ३१ ॥

सू. सर्वगः सर्वविज्ञानुर्वि  
ध्वक्सेनो जनार्दनः । वे  
दो वेदविदव्यंगो वेदाङ्गो  
वेदवित्कविः ॥ ३२ ॥

श्री. सर्वगः सब में प्राप्ति है स  
ब जगह पहुँचता है कोई जग  
ह उससे खाली नहीं है सर्व  
विज्ञानुः सब को जानने और प्र  
काश रूप है विध्वक्सेनो स  
ब तरफ है सेना जिसकी जना  
र्दनः दुष्ट जीवों को पीड़ा देने  
वाला और भक्तों की मनोकाम  
ना पूरा करने वाला है वेदो ज्ञा  
त्मा को जो देखावे और वेदको  
जानने वाला वेदविद वेद का  
जानने वाला व्यंगो ज्ञान से पू  
रा है वेदाङ्गो वेद है अ  
ङ्ग जिसका वेदवित वेद का

استقر یعنی همیشه یکسان ہی برآورد  
انجی ہی سواری جسکی پیش اور یہ کہ جو کوئی  
اس میں داخل ہوا پھر عالم میں نہ آیا تھا  
تیاہ نہایت ہی تپ جیسا کہ وہ ذات ہی کہ  
تمام عالم میں مشرق ہو کر لذت سکی لیتا ہی۔

اشلوک

سرب گہ سرب بد بھانر بشوک  
سینو جنار و نہ۔ بید و بید  
بید و بید انگو بید پت کبہ۔

شیکا

سرب گہ سب میں جانا ہی وہ ذات  
ہی کہ سب جگہ پہنچتی ہی کوئی جگہ اس سے خالی  
نہیں ہی سرب بد بھانر سب کو جانتا ہی  
اور پرکاش روپ یعنی صاحب نور و ظہور  
ہی بشوک سینو سب طرف ہی سینا  
یعنی فوج جسکی اور یہ کہ سب عیاں اس سے  
بھاگتے ہیں جنار و نہ دشت جیودن کو  
کہ کہ دینے والا اور بھکتوں کو سب آرزو کا  
پورا کر دینا ہی بید و آتما کا دکھانی والا اور یہ  
کہ جاننے والا ہی بید بید کا جاننے والا انگو  
اسان ہی نورن پر سید انگو بید ہی لگ جیسا کہ بید کا

अविनाशी है अमोघः जि  
सने जो इच्छा की उसकी वह  
इच्छा पूरा की अर्थात् किसी  
को निराश और विमुख नहीं  
रखता है पुण्डरी काक्षी  
कमलसेनेव है जिसके वृषकर्म  
वृषा कृतिः धर्म है कर्म  
जिसका और धर्म के अर्थ है  
आकार जिसका ॥ ३० ॥

मू. रुद्रो बहुशिरो बभ्रुर्वि  
श्वयोनिश्मुचिश्वाः । ३५  
मृतः शास्वतः स्यात्तुर्वरा-  
रोहो महातपाः ॥ ३६ ॥

टी. रुद्रो संहार काल में सब को  
रुला देवे चहु शिरो बहुत है  
शिर जिसके चभु लोको को तो  
पण करनेवाला और प्रीति करने  
वाला है विश्वयोनि जगत् की  
योनि अर्थात् जगत् उसी से पैदा  
है शुचिश्च वात्पवित्र करनेवा  
ला है अर्थात् उसका नाम लेने  
से सब पाप दूर हो जाते हैं अमृ  
तः बुद्ध्या और नाश से रहित  
है शाश्वतः स्थाणु नित्य है

بے زوال ہی اٹھو گھم جنسے جو اچھا کی سگی  
وہ اچھا پورن کی بیٹی کیسکو محروم نہیں بھٹا  
پیشہ رسی کا کشو مکمل کے ایسے ہیں غیر جیکے  
بر کھ کر ما بر کھا کر تہ دھرم ہر کرم  
جسکا اور دھرم سکے واسطے ہی طنز جیسا -

اشلوک

روايت به شرحي بهر رستجو  
 شيخ شرفا - امرت شاسته است  
 بهر رستجو بهر شاسته -

کہ دور و سنگھ کال میں سب جاکر لاوے  
 وہ راستہ ہیکر وقت قیامت کے سب کو فائدہ  
 بہت مشر و بہت بہن سر حیکے بچھو لوگوں  
 کا پالنے والا اور عزیز رکھنے والا اور قائم  
 و سلامت رکھنے والا ہی ہیشو جو نہ  
 جگت کی جون ہی بیٹے مخرج پیدا ایش  
 و عس آفرینش تمام عالموں و موجودات  
 کا وہی سر شح مشر و اوپر ترینی پاک  
 کرنے والا ہی تینے اسکا نام لینا سب گناہوں  
 سے پاک کر دیتا سر اقرتہ بڑھایا اور زوال  
 نہیں رکھتا ہی شاشو تہ استخا نہ نہ ہی



प्रजाभवः प्रजा को उत्पन्न कर  
ने वाला है अद्भुतः प्रकाश रूप है  
सम्बत्सरो सम्बत स्वरूप है  
अर्थात् समय रूप होकर वर्त्तमान  
न है व्यालः दुष्टों के वश में न  
हीं जाने वाला है और यह कि  
वह ऐसा अगम्य है कि किसी  
के वश नहीं हो सक्ता प्रत्य-  
यः ज्ञान रूप है सर्व दर्श-  
नः सब को देखने वाला है

मू. अजः सर्वेश्वरः सि-  
द्धः सिद्धिः सर्वादि रच्यु-  
तः। वषाक पिर मे यात्मा  
सर्वयोगविनिःसृतः। २६।

टी. अजः जन्म रहित है अर्थात्  
तु कभी पैदा नहीं हुआ और न हो-  
ता है और न होगा सर्वेश्वरः  
सबका ईश्वर अर्थात् मालिक है  
सिद्धः सदा सतभाव अर्थात् एक  
तारह पर रहता है सिद्धिः ज्ञान  
न्द रूप फल मोक्ष का देने वाला  
है सर्वादि रच्युतः सबका

कारण और नाश रहित है

پر چا بچوہ خلقت کا پیدا کرنا والا ہے۔  
آہستہ پر کاش روپ ہی سمیت شروع  
سمیت شروع ہی یعنی بصورت زمانہ ہو کر  
قائم ہی یہاں دشمنوں کے قابو میں نہیں  
آئی والا ہے اور یہ کہ وہ ذات نہایت لطیف  
ہی گرفت نہیں ہو سکتی یہ قہر یہ گیان  
روپ ہی یعنی بذات خود عقل خالص ہے۔  
سرتب و رشتہ سب کا دیکھنے والا ہے۔  
یعنی دانائے ننان و آشکارا ہے۔

اشلوک

۲۶  
اچہ سریشورہ سیدھے سیدھے  
سر باد پرچوہ۔ برکھا کپ رے  
یا کا سب جوگ بنسرتہ۔

ٹیکا

۲۷  
اچہ یعنی کہیں پیدا نہیں ہوا اور نہ ہوا ہے  
اور نہ ہوگا سریشورہ سب کا ایشور  
ہی یعنی تمام حاکموں کا حاکم و بادشاہوں کا  
بادشاہ ہی وہ ذات واحد ہی سیدھے سیدھے  
ایک صورت نیک پر رہتا ہے سیدھے آئے  
روپ پہلے تونکس کا دینے والا ہے سر باد پرچوہ  
سب کا اود کارن اور ناش سے رست ہے۔



कृतज्ञः जो कृत भक्त जनक-  
 ति हैं उसका जन्मे वाला है कृ-  
 तिः को है अर्थात् तीनों लोक  
 का काम करने वाला है आत्म-  
 वान् अपने स्वरूप का आधार  
 र है अर्थात् उसका कोई घर न  
 हां है अपनी प्रतिष्ठा में आप  
 रहता है ॥ २७ ॥

मू. सुरेशः शरणांशर्म वि-  
 श्वरेताः प्रजाभवः । अ-  
 हः सम्वत्सरो व्यानः प्र-  
 त्ययः सर्वदर्शनः ॥ २८ ॥

टी. सुरेशः देवताओं के ईश  
 अर्थात् मालिक है शरणां डेर ह-  
 वे और अपनी शरण में आने हुवे  
 जीवों की रक्षा करता है जैसे कि  
 गज की रक्षा करके शाह से छूटा  
 या और शैपयी की बीच सभा के  
 लाज रक्षी और विभीषण को  
 लंका का राज्य दिया अर्थात् जो  
 शरण आता है उसका दुःख दूर क-  
 रेता है शर्म मुखरूप है विश्व  
 रेताः जगत है बीज उसका अ-  
 र्थात् संसार उसी से उत्पन्न है

कृतज्ञः जो कृपे भक्त जनक-  
 ति हैं उसका जन्मे वाला है कृ-  
 तिः को है अर्थात् तीनों लोक  
 का काम करने वाला है आत्म-  
 वान् अपने स्वरूप का आधार  
 र है अर्थात् उसका कोई घर न  
 हां है अपनी प्रतिष्ठा में आप  
 रहता है ॥ २७ ॥

मू. सुरेशः शरणांशर्म वि-  
 श्वरेताः प्रजाभवः । अ-  
 हः सम्वत्सरो व्यानः प्र-  
 त्ययः सर्वदर्शनः ॥ २८ ॥

टी. सुरेशः देवताओं के ईश  
 अर्थात् मालिक है शरणां डेर ह-  
 वे और अपनी शरण में आने हुवे  
 जीवों की रक्षा करता है जैसे कि  
 गज की रक्षा करके शाह से छूटा  
 या और शैपयी की बीच सभा के  
 लाज रक्षी और विभीषण को  
 लंका का राज्य दिया अर्थात् जो  
 शरण आता है उसका दुःख दूर क-  
 रेता है शर्म मुखरूप है विश्व  
 रेताः जगत है बीज उसका अ-  
 र्थात् संसार उसी से उत्पन्न है

ब्रह्माने वहाँ सृष्टि रची इसी से  
कुलदेव का स्थान पवित्र और  
श्रेष्ठ समझा जाता है ॥ २६ ॥

मू. ईश्वरो विक्रमी ध-  
न्वी मेधावी विक्रमः क्रमः  
अनुत्तमो दुराधर्षः कृत

शः कृतिरात्मवान् । २७ ।

री. ईश्वरो सब कार्य करने वाला है विक्रमी मूर्खी है धन्वी धनुषधारी है जैसे रामचन्द्रावतार मेधावी बुद्धिवाला जो सुनै वह भूलता नहीं सब का जानने वाला और याद रखने वाला है विक्रमः सारजगत को उलंघन करै जैसे वामन रूप और यह कि सब जीवों को चलने फिरने की शक्ति देता है क्रमः चरमूर्ति चलने वाला और चलने की शक्ति उत्पन्न करने वाला है अनुत्तमो नहीं है उत्तम उससे कोई दुराधर्यः और कोई उस को डरा नहीं सत्ता और उस पर सबल नहीं हो सत्ता है -

برصحا جی نے وہاں پر سرشت کو رجا اور اسی سے  
کر چھین کر جبکہ بہت مقبرہ پاک شمار کیا جاتی ہے۔

۱۲  
اشلوک  
ایستور و بگرمی و حسنوی سیدها  
بگرمی کرمه - انتمود را دهر  
کرتگیه کرت راقم و ان  
۱۳  
شیکا

ایستوڑ و سب کام کہ میوالا یعنی حاکم  
حقیقی و قادر مطلق ہی بیکرمی شہر میری  
یعنی شجاع اعظم و مرتبہ بلند ہر دھنوی  
دھنک دھاری ہی جیسے شری رام چند رجبی  
میدھاوی بدھ والا ہی جو کچھ سنتا  
ہو اسکو کبھی بھولتا نہیں یہ وہ ذات ہے  
کہ حافظہ و دریافت بدرجہ کامل رکھتا ہے۔  
بکرمہ تمام جہان کو طے کر جائے جیسے باؤ  
اوتا پ اور یہ کہ قوت رفتار جاندار کو عطا  
کر تا ہے کہ منہ چلنے والا اور یہ کہ قوت رفتار کا  
پیدا کر نیوالا ہی استخوانین ہی اٹم اس سے  
کوئی یعنی اسکے سواے اور کوئی بزرگ نہیں ہے  
وہ آدھ کھہہ ڈر جانے کے قابل نہیں یعنی  
کوئی اسکو ڈرا نہیں سکتا اور نہ اسکا ہر سکتا ہے

कहते हैं कि जब सब पृथ्वी पर पा  
नी ही पानी था और कुछ न था तब  
उन्हीं ने विशुभगवान् रूप धारण  
करके पानी में आराम किया और  
मधुकैरभदेत्य विशुभगवान् के का  
न के मेल से पैदा हुये और ब्रह्मा वि  
शुभगवान् के कमल नाभि से पै  
दा हुये तब मधुकैरभने ब्रह्मा के ना  
रने का इरादा किया उस समय वि  
शुभगवान् पलथी मारे हुये पानी  
से बाहर निकल हुये और पानी पर  
पलथी मारे हुये मधुकैरभको मा  
रा और वह जगह कुरुक्षेत्र की है  
जि जो ४८ कोस में पलथी की सूर  
त है और कहते हैं कि उन्हीं दैत्यों  
की चरबी जिसको संस्कृत में मेद  
कहते हैं पानी पर बिछाई गई  
इसी वास्ते इस पृथ्वी का नाम मेदि  
नी है जब से राजा पृथु ने इस पृथ्वी  
को लेकर साफ और दुरुस्त किया  
तब से इस मेदिनी का नाम पृथ्वी  
हुआ राजा पृथु चौबीस अवतारों  
में गिने जाते हैं मार्कण्डेय पुराण  
में इस पृथ्वी का हाल विस्तार  
पूर्वक लिखा है और इसी वास्ते

कहते हैं कि जब सब नरिन पर पानी ही पानी  
था सो सब पानी के और कुछ न था तब  
अन्धों ने بصورت बंश जंगलान् धारण  
दरियान पानी के आराम किया और मधुकैरभ  
नाम दो रात्रि बंश जंगलान् के कान के  
मेल से पैदा हुये और ब्रह्मा वि  
शुभगवान् के कमल नाभि से पैदा हुये तब  
मधुकैरभने ब्रह्मा के नारने का इरादा किया  
उस समय विशुभगवान् पलथी मारे हुये पानी  
से बाहर निकल हुये और पानी पर पलथी  
मारे हुये मधुकैरभको मारा और वह जगह  
कुरुक्षेत्र की है जि जो ४८ कोस में पलथी  
की सूरत है और कहते हैं कि उन्हीं दैत्यों  
की चरबी जिसको संस्कृत में मेद कहते हैं  
पानी पर बिछाई गई इसी वास्ते इस पृथ्वी  
का नाम मेदिनी है जब से राजा पृथु ने इस  
पृथ्वी को लेकर साफ और दुरुस्त किया तब  
से इस मेदिनी का नाम पृथ्वी हुआ राजा पृथु  
चौबीस अवतारों में गिने जाते हैं मार्कण्डेय  
पुराण में इस पृथ्वी का हाल विस्तार पूर्वक  
लिखा है और इसी वास्ते



मनुःसब कामों का जानने वाला  
है त्वष्टा प्रलयकाल में सबका  
नाश करने वाला है स्थविष्ठः  
विराटरूप है स्थविरो हठरूप  
पञ्चार्थात् प्राचीन और स्थित  
है ध्रुवः नित्य पञ्चार्थात् सदा  
सर्वदा बना रहता है ॥ २४ ॥

मू. अथाहः शास्त्रतः कृ  
लोलेहिताहः प्रतर्दनः।  
प्रभृतस्त्रिककुड्यामपवि  
त्रं मङ्गलम्परं ॥ २५ ॥

६०. **अथाहः** पकड़ने के योग्य नहीं अर्थात् हाथ में नहीं आसक्ता है और न बुद्धि में समासक्ता है **आस्वतः** तदा सर्वदा हर समय कर्तमान है **कृष्णो** अपने भक्तों को नरक से खींच लेता है और कृष्ण नाम गलसी के कुल के रंग का है जो अति मनोहर होता है तैसा है रंग श्री कृष्णजी का लोहिताक्षः लाल हैं नेत्र जिनके प्रतर्दनः संहारकाल में प्राणियों का हरने वाला प्रभूत बल तेज करके युक्त है त्रिककुट्टाम तीनों दशा

یعنی پیدا کرنے والا برعبار غیر تمام مخلوقات  
 کا ہی مشتمل ہے۔ مابنی والاسب کام کا ہی مشتمل  
 ہے۔ کمال میں سبکدوش کرنا ہی آتشہ جہ  
 براٹ روپ مینی بزرگ تر بزرگ سے ہے۔  
 آتشہ بزرگ روپ بزرگ روپ مینی قدیم وقائم ہے۔  
 دھروہ نٹ مینی ہمیشہ قائم ہے۔  
 اسلوب - اگر آتہجہ شاسوہ کرشنو  
 لوہا کشتہ تر تر و نہ - بر بجزو قستہ  
 کلمہ حام کو ترنگ سنگھان ترنگ  
 مین نہیں آسکتا اور عقل و کلام بھی اسکی  
 قدرت کو نہیں بیان کر سکتا شاسوہ  
 ہمیشہ و ہر وقت موجود ہی کرشنو اپنے  
 بھکتو کو ترک سے بجا لیتا ہے اور چونکہ کرشن  
 نام الہی کے پھول کے رنگ کا ہی جو کہ نہایت  
 طبع و خواہش ہوتا ہے ایسا ہی رنگ سر کرشن  
 ہمارا ج کا تھا لوہتا کشتہ لال میں اکھیر  
 ہسکی تر تر و نہ قیامت کے وقت سبکو  
 لیت و تا بود کر دیتا ہی تر بھوت بل ا  
 ج کر کے جکت ہے نے سلطان عظم  
 رکھتا ہے اس کے رنگ کا حام تر و نہ

जो अपने अपने कामों को कर रहे हैं उनको साधनेवाला धातु: सब कामों की धारण करने वाला उत्तम: अच्छा श्रेष्ठ और सब से बड़ा है ॥२३॥

मू. अप्रमेयो ह्यपीकेशः पद्मनाभो मरप्रभुः । विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टास्य विष्टः स्थविरो भुवः ॥२४॥

ही. अप्रमेयो नहीं है परमाणु जिसका और कीड़े उसका भेद नहीं जान सकता और वह किसी के सदृश और समान नहीं कि उस अपना के बराबर उसको पहिचान सके इसवाले उसको अप्रमेय कहा ह्यपीकेशः इन्द्रियोंका मालिक है अर्थात् सब इन्द्रियों उसी की पैदा की हुई हैं और वह उनको वश कर सकता है पद्मनाभो कमल है नाभ में जिसके मरप्रभुः देवताओं के मालिक है विश्वकर्मा जगत् को रचने वाले हैं-

जो अपने अपने कामों को कर रहे हैं अंगुसदृशने वाला मीन बना देने वाला है उद्धारत सब कामों को दहारन करता है अत्तमे अत्म मीन अच्चा और सब से बड़ा है-

श्लोक

अप्रे यो मे कश्चि किंश्चिदपि न भजो मरप्रभुः - शत्रुक्रमात्सु तौ शत्रुः अश्चि किंश्चिदपि न भजो मरप्रभुः - शत्रुक्रमात्सु तौ शत्रुः

टिका

अप्रे यो मे कश्चि किंश्चिदपि न भजो मरप्रभुः - शत्रुक्रमात्सु तौ शत्रुः अश्चि किंश्चिदपि न भजो मरप्रभुः - शत्रुक्रमात्सु तौ शत्रुः

विधाता धातु रुत्तमः २३

टी. स्वयम्भूः आप से जो हो अर्थात् जो बिना लगाव किसी दूसरे के आप से आप हो प्राम्भुः भक्तों को मुख देना दित्य आदित्य का पुत्र और सूर्य को भी आदित्य कहते हैं कि सूर्य में जो प्रकाश है वह ही ईश्वर का अंश है और यह भी कहते हैं कि सूर्य बारह हैं और हर एक का नाम अलग अलग है और यह बारह नाम सूर्य के इस वास्ते रखे गये हैं कि बारह रासों में आता जाता है उन बारह नामों में से एक नाम बिष्णु भी सूर्य का है इस वास्ते और भी सूर्य की संज्ञा की गई और आदित्य के पुत्र का वर्णन आगे होगा पुष्कराक्षी कमल के ऐसे नेत्र हैं महास्वनः बड़ा है शब्द जिसका अनादि निधनो जन्म मरण से रहित है धाता शेष रूप करके पृथ्वी को धारण कर है विधाता यज्ञ करने वालों को धर्म लोक देने वाला और यह कि शेष नाम आदि

بَدَهَاتَا وَهَاتَا مُرْتَمَةً -

شیکا

۲۳

نصو میگویند آب سے جو ظاہر ہو یعنی از خود ظاہر ہو اور دوسرا کوئی سبب اس کے ظہور کا نہ ہو وہ ہے شمشیر جھکتو ٹکوسکھ دینے والا ہے اور تیرہ آد تیرہ کا پتر اور بھی سورج کو آد تیرہ کہتے ہیں یعنی سورج میں جو روشنی ہے اس کی ہی اور یہ بھی ہے کہ بارہ سورج ہیں اور ایک سورج کے الگ الگ نام ہیں اور یہ بارہ نام سورج کے اس واسطے مقرر ہوئے ہیں کہ بارہ برجوں میں منتقل کرتا ہے منجمل بارہ ناموں کے ایک نام شیش بھی سورج کا ہے اس واسطے سورج پر اطلاق کیا گیا اور آد تیرہ کے پتر کا بیڑا لگے ہوگا ششکرا آکسو مکمل کی ایسی آنکھیں ہیں جس کے تمام سونہ بڑا ہر شب جیسا آناؤ ندرھنو قہم مرن سے رہت یعنی آغاز اور انجام نہیں رکھتا ہے بدھاتا شیش زو پ ہو کہ پر تھوی کو اپنے اوپر اٹھا دے ہے بدھاتا جگ کرنے والا ہے سورج کو دینے والا ہے اور دوسرے یہ کہ شیش ناگ وغیرہ

मू. सर्वः शर्वः शिवः स्या  
 एभूतादिनिधिरव्ययः ।  
 सम्भवो भावनो भर्ता प्रभ  
 वः प्रभुरीश्वरः ॥ २२ ॥  
 टी. सर्वः सर्वस्व शर्वः प्र  
 जा को संहार करने वाला है  
 शिवः शिवशंकर रूप स्या ए  
 क रूप रूके स्थिर है भूतादि  
 णियों का आदिकारण है निधिः प्र  
 जाना प्रलय काल का है व्ययः प्र  
 विनाशी है सम्भवो अच्छा है ज  
 न्म जिसका अर्थात् धर्म की रक्षा के  
 वास्ते प्रकर होता है भावनो जी  
 वों को कर्म का फल भोगवाता है  
 भर्ता सबकी पालना करता है प्र  
 भवः अच्छा जन्म है अर्थात् श्री  
 कृष्ण अवतार आदि और पंचतन  
 का उत्पन्न करने वाला है प्र  
 भुः उत्पत्ति पालन संहार तीनों में  
 समर्थ है ईश्वरः जिसमें कुछ  
 दोष नहीं अर्थात् प्रतिष्ठा तो उसीको  
 है और दुःख हाकिम वही है २२  
 मू. स्वयम्भूः शम्भुरादि  
 त्यः पुष्कराक्षो महास्वनः  
 जनादिनिधनो धाता

اشلوک

۲۲  
 سر به سر به بشوہ استخوان بھوتا و ندم  
 رہیہ یہ سیم بھو و بھوا و بھوہ پر بھوہ پر بھوہ  
 ٹیکا - سر بہ سر بہ روپ مینی پیدا کرنیوالا وجود  
 اور عدم کا اور جاننے والا حقیقت کا ہے شربہ  
 انت کال میں پر جا کو شکھا کر نیوالا ہے بشوہ  
 بشوہ شکر روپ مینی کلیان روپ ہے استخوان  
 ایک روپ پر کر کے استھت مینی قائم ہے  
 بھوتا و پرانیہ کا اود کارن مینی سدا رطل  
 ہے ندم خزانہ وقت قیامت کا ہے ایشیہ  
 آبناشی مینی لازوال ہے سیم بھو و اچھا ہے  
 جنم جبک مینی واسطے محافظت دھرم کے پیدا  
 ہوتا ہے بھوا و نوجیو و کو کرم کا پھل بھو  
 کرد اتا ہے مینی جاندار و نکلوا اعمال کا نتیجہ دیتا ہے  
 بھوہ تا سبکی پالن کرنیوالا ہے سر بھوہ اچھا  
 ہے جنم جبکا اور پیدا کرنیوالا جمیع عناصر کا ہے پر بھوہ  
 پیدا اور پالن اور شکھا میں ستر تھ ہے ایشیہ  
 جسمین کچھ دوش نہیں اور بزرگ اور مالک ہے۔

اشلوک

۲۳  
 سو بھو بھوہ او تیشہ لیشکر اکشوما  
 سوتہ - انا و ندم و دھاتا



सू. योगयोगविदंनेताप्र  
धानपुरुषेश्वरः। नारसिंह  
वपुः श्रीमान्केशवः पुरु-  
षोत्तमः ॥ २१ ॥ \* ॥ \* ॥  
यौ योगी जीव और ईश्वर को एक जानै  
यह वह सभाव है कि इन्दी और मन को  
एक करके उसकी ऐक्यता में निश्चा-  
स को लावे और उसमें लीन हो जा-  
य जो कि यह गुण सिवाय ईश्वर के  
और किसी में नहीं है इस वास्ते इ-  
स सम्बन्ध का होना उसी पर किया  
गया योगविदंनेता योग  
जाननेवालों को प्रेरणा करनेवाला  
अर्थात् अपने में मिलानेवाला  
प्रधानपुरुषेश्वरः माया  
और जीव का ईश्वर है नारसिंह  
वपुः मनुष्य और सिंह रूप जैसे  
कि प्रह्लाद की रक्षा के लिये शरीर  
धारण किया श्रीमान् लक्ष्मीना-  
ला केशवः ब्रह्मा और विष्णु और  
महेश इन तीनों का ईश्वर और  
अच्छे हैं केश जिसके और भी के-  
श्री नाम दैत्य के मारने वाले इस वा-  
स्ते भी केशव कहते हैं पुरुषोत्त-  
मः पुरुषों में उत्तम हैं ॥ २१ ॥

اشلوک  
محو کو جو کہ بد آنکے پیشا بر دھان کر کیشو  
نارسینگہ سے شریکان کیشوہ پر کیشوہ  
یہ  
یہ اور ایشور کو ایک جانے یہ صفت  
یہ اور اس ظاہر و باطن کو ضبط کر  
اسکی ذات واحد میں اعتقاد کو درست کرے  
اور اسی میں محو ہو جائے کہ یہ صفت سوا  
ذات خالق کے اور کسی میں نہیں ہے اس واسطے  
اطلاق اس نام کا اس پر کیا گیا جو کہ بد آنکے  
پیشا جو کہ جانو والا کو پر نہ کر نہی الا یہی اپنے  
دین میں اپنے والا پر دھان پر کیشوہ  
ما یا اور جو کہ ایشور ہی میں جو جان کا مالک ہے  
نارسینگہ سے شریکان اور سنگہ روپ یعنی بصورت  
انسان تو ہے جس کا وقت محافظت پر بلا کر شیر  
دھان کیا شریکان چھری والا یعنی صاحب دولت  
و عطا کنندہ اور کیشوہ بر محاورہ یعنی اور  
نہیں ان تینوں کا ایشور یعنی مالک اور اچھے  
میں کیشوہ یعنی مونس ہر جگہ اور بھی مارے والے  
کیشوہ نام دیتے ہیں اس واسطے بھی کیشوہ کہتے ہیں  
محو کو کہ شریکان میں نام میں سے بزرگ ہے۔

मू- पूतात्मा परमात्मा च  
मुक्तानां परमागतिः ।  
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्र  
ज्ञो ह्यव्ययः ॥ २० ॥

श्री. धृतात्मा पवित्रजान्माह  
 परमात्मा आश्चर्यरूपकार्यका  
 साक्षेमुत्तम है मुक्तानां परमा  
 धातिः मुक्तपुरुषो जी परमगति  
 मुक्तउपजीव इति है जी नयमोह  
 मज्जनसे ब्रह्मबुद्धाहो अर्थात् व  
 ह ऐसा है कि सब मुक्त पुरुष उसमें  
 लीन होकर जन्ममरण से बाहर  
 होजाते हैं ॥ १० ॥  
 नाशी पुरुषः पुरुषरूपः सारा  
 जगत् पूर्ण जिसकारके उसको पुरु  
 ष कहते हैं और जो इसलोक और  
 परलोक में प्राप्त हो उसको वः क  
 र्ति है अर्थात् सबसे पहिले वह  
 पुरुष बुद्धाहै साक्षी अपने क  
 र्मके सबको देखे वह ऐसा है कि  
 जगत् संसार को प्रकट करके जगत्  
 ही उसका तमाशा देखता है-  
 दोनही प्रकारकी जाकता है-  
 करानेनु नाशरहित है ॥ १० ॥

اشلوک  
یوتا تا پرماتما ح کمتا ناک پرم  
گتہ۔ ایتدیہ پرکھ ساکشی چتر  
گیو کشر ایوج۔

ت  
پیکا  
کو تا تا پوثر آتا ہی مینی وہ ذات پاک و  
لطیف ہر پر ماٹھا آتھ پھر چ روپ اور  
کارچ اور کارن ہی مہرت مینی عقل خالصہ  
آزاد مطلق ہے کلکٹا ناٹک پر ماگستہ  
کلکٹ پڑشون کو پر مکت ہر مکت اسکو کہتے  
ہیں کہ جو موہ اور گیان کے بندھ سے بچے گا  
ہوا ہم مینی یہ وہ ذات ہے کہ حسب تہنگا اور  
جا کر مل جاتے ہیں اور پھر دنیا میں پیدا نہیں  
ہوتے ابھی تہنگا مانی ہی مینی زوال و  
نہیں رکھتا ہی مکت کہہ چکر روپ ہی مکت پور  
ہو جاتا اسکو مکت کہتے ہیں اس کے کار پر لوک  
میں پڑا ہوا اسکو کہ مکت مینی ہی سے اول آئے  
ظہور کیا ہی سنا گشتی آپ سکو دیکھتا ہے وہ ذات  
کہ آپ جگت کو پیدا کر کے آپ ہی اسکا تاتا دیکھتا ہے  
چھتر گویا شریک جاتا ہی شریک جمع ہوتا  
ہر ت ہی مکت کہ مکت و فانی نہیں ہوتا

का बिस्तार हुआ और पृथ्वी से आ  
का शतक सब इसी ओं की मूर्ति हैं  
विश्वं कार्य कारण रूप अर्थात्  
त जो अपने कारण में लीन और  
जगत् में प्रवेश हो जाय और यह  
बहु पदार्थ है जो पाताल से स्वर्ग  
तक व्यापक है विष्णु सम्पूर्ण ज  
गत् में व्याप्त है अर्थात् सब संसा  
र में वह है और सब संसार उस में है  
वषट्कारी यज्ञ रूप और मन्त्र  
का नाम है भूत भव्य भवत्प्रभुः  
हो गया और होगा और है इन ती  
नों कालों का मालिक है भूत रुद्र  
प्राणियों का जन्म मरण करने वाला है  
भूत भूद्र प्राणियों का पालने वाला  
भावो पैदा हो अर्थात् सब की जगह  
वह है भूतात्मा प्राणियों की आ  
त्मा अर्थात् मनुष्यों में मन है जिस  
का और सब के मन का भेद जानने  
वाला है भूत भावनः प्राणियों  
को जो पैदा करे पाले बढ़ावे ॥२६॥

का बिस्तार हुआ और عقل कल से ताबक का  
आंगूठ की صورت पर बिस्तार का रज कारन  
रूप पर प्रतीति जो अपने कारन में लीन और  
मन में प्रवेश हो जाय और यह  
जो नर में से तबाला से आسمान محیط ہے۔  
بیشتر سب جگت میں بیانیٹ ہے مینی تمام عالم  
میں وہ ہے اور تمام عالم اُس میں ہے۔  
بیکھٹ کارو جگت کارو پ ہے جگت کے  
منی قربان کرنے کے ہے اور شکر کا نام ہے۔  
بھوت بھتیہ بھوت پر بھم ہو گیا اور  
ہو گا اور ہے ان تینوں زمانوں کا مالک ہے  
مینی صاحب حال و آئندہ و گزشتہ۔  
بھوت کرؤ۔ پرانیوں کا جنم و مرن کرنیوالا  
مینی پیدا اور فانی کرنیوالا ہے۔ بھوت بھرو  
پرانیوں کا پالنے والا ہے مینی پرورش کنندہ خلایق  
کا ہے بھو و پیدا ہو مینی مکان و مکین غرض  
سب کی جگہ وہ ہے بھوت تا تھا پرانیوں کی آتما ہے مینی  
آدمیوں میں من ہے جس کا اور دل سب جانداروں کا  
اور جاننے والا ہے مینی سب کے دلوں کا بھوت بھو  
پرانیوں کو جو پیدا کرے پالے بڑھاوے مینی پیدا کرنیوالا  
اور روز افزون کرنیوالا خلایق کا ہے۔

पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं  
गनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं  
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं  
योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे  
विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकै-  
कनाथं ॥ १८ ॥

टी. शान्त है आकार जिसका शेष  
है शब्दा जिसकी कमल है नाभि जि-  
सकी देवताओं के ईश्वर हैं जगत्  
के आधार हैं आकाश के तुल्य हैं  
बादल के वर्ण अर्थात् रंग हैं आ-  
च्छे हैं अंग जिनके लक्ष्मी के पति  
हैं कमल के ऐसे नेत्र हैं योगियों  
के ध्यान में आने वाले हैं नमस्कार  
करता हूँ ऐसे विष्णु को जो सं-  
सार के भय दूर करने वाले हैं सब  
लोकों के एक नाथ हैं ॥ १८ ॥

मू. ओं विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भू-  
तभव्यभवत्प्रभुः । भूतकृद्भूत-  
भृद्भोगो भूतात्मा भूतमा-  
वबः ॥ १९ ॥

टी. ओं यह वह शब्द अर्थात् आकाशवा-  
ली है कि जिसके होते ही संसार

पद्म नाभं सुरेशं विश्वाधारं  
गनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गं  
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं  
योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे  
विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकै-  
कनाथं -

टीका  
शान्त है आकार जिसका शेष  
है शब्दा जिसकी कमल है नाभि जि-  
सकी देवताओं के ईश्वर हैं जगत्  
के आधार हैं आकाश के तुल्य हैं  
बादल के वर्ण अर्थात् रंग हैं आ-  
च्छे हैं अंग जिनके लक्ष्मी के पति  
हैं कमल के ऐसे नेत्र हैं योगियों  
के ध्यान में आने वाले हैं नमस्कार  
करता हूँ ऐसे विष्णु को जो सं-  
सार के भय दूर करने वाले हैं सब  
लोकों के एक नाथ हैं -

अश्लोक

ॐ नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय  
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय  
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय  
नमः शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय

टीका  
आकाशवाली है कि जिसके होते ही संसार

धन्वागदाधर। इतिकरतल  
करपद्माभ्यांनमः। इतिकर  
न्यासः। अथ खड्गन्यासः।  
ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कार इति  
हृदयाय नमः। अमृतांशूद्  
बोभानुरिति शिरसे स्वाहा।  
ब्रह्मण्यो ब्रह्म क इत्येति शि  
खायै वषट्। मुवर्णा विन्दु रक्षो  
भ्य इति कवचाय हुं। आदि  
त्यो ज्योतिरादित्य इति ने  
त्रत्रयाय वौषट्। शार्ङ्ग ध  
न्वागदाधर इत्यस्त्राय फट्  
श्री कृष्ण प्रीत्यर्थं जपे किं  
योगः। श्री विष्णोर्दिव्य  
सहस्रनाम जप महं करि  
ष्ये। इति संकल्पः॥ श्री  
पुरुषोत्तमाराधने सर्व  
पापक्षयार्थं जपे किं यो  
गः॥

अथ ध्यानं

ॐ शांताकारं भुजग शयनं

دهنو اگدا دهرات کر تال کر پرشتا  
بھانک نمہ - ایت کر نیا سہ -  
آتم کھرن نیا سہ - اوٹک بشوٹنگ  
بشتر بکھٹ کار ایت ہر دیا  
نمہ - اتم تانگ شود بخو و بجان  
رت شر سے سوا -

بر خستو بر تھم کر بر تھیت شکمائی  
بکھٹ - سترن بندر کشو بھئی  
ات کو چاے سچ -

آوٹو جیوت رادھی ایت نیتر  
تر تانے بوکھٹ -

سازنگ دھنو اگدا دهرات اشر  
چٹ - شر کریشن پریش آر تھے  
بچے بن جوگہ -

شری بشوڑ دیتیہ ستر نام جپ  
منگ کر کھیے - ایت سنکھیہ -

شری پرکھو تمارا دھنے ستر  
پاپ چھار تھے بچے بن  
جوگہ -

آتم دھیاننگ

اوٹک شاننا کارنگ بھج شیننگ

षट्कारइति ध्यानं। श्रीविष्णोः  
 प्रीत्यर्थं दिव्यसहस्रनाम जपे वि-  
 नियोगः। ओं शिरसि देव्या स-  
 ऋषये नमः। मुखे अनुष्टुप-  
 छन्दसे नमः। हृदि श्रीकृष्णप-  
 रमात्मादेवताये नमः। गुह्ये  
 अमृतांशुद्वयोभानुरिति  
 बीजाय नमः। पादयोर्देवकी  
 नन्दनः स्वष्टेति शक्तये नमः।  
 सर्वाङ्गेश्वरभृन्नन्दकीचक्री-  
 तिकीलकाय नमः। करसंपुटे म-  
 मश्रीकृष्णप्रीत्यर्थं जपे विनियो-  
 गः। इति ऋष्यादिन्यासः। ओं  
 विश्वं विष्णुर्वषट्कारइत्यङ्गुष्ठा-  
 भ्यां नमः। अमृतांशुद्वयोभा-  
 नुरितितर्जनीभ्यां नमः। ब्रह्म-  
 ण्यो ब्रह्मरुद्रमेति मध्यमा-  
 भ्यां नमः। सुदर्शाविन्दुरक्षोभ्य-  
 इत्यनामिकाभ्यां नमः। आ-  
 दित्योज्योतिरादित्यइति क-  
 निष्ठिकाभ्यां नमः। शार्ङ्ग-

बकट कारात देव्यात्म- श्रीश्री  
 प्रीति अत्मे दैव्ये सप्तसप्त नाम जपे विनियोग-  
 ओं शिरसि देव्या स-  
 ऋषये नमः -  
 मुखे अनुष्टुप छन्दसे नमः -  
 हृदि श्रीकृष्णप-  
 रमात्मादेवताये नमः -  
 गुह्ये अमृतांशुद्वयोभानुरिति  
 बीजाय नमः -  
 पादयोर्देवकी नन्दनः स्वष्टेति शक्तये नमः -  
 सर्वाङ्गेश्वरभृन्नन्दकीचक्री-  
 तिकीलकाय नमः -  
 करसंपुटे म-  
 मश्रीकृष्णप्रीत्यर्थं जपे विनियो-  
 गः -  
 इति ऋष्यादिन्यासः -  
 ओं विश्वं विष्णुर्वषट्कारइत्यङ्गुष्ठा-  
 भ्यां नमः -  
 अमृतांशुद्वयोभा-  
 नुरितितर्जनीभ्यां नमः -  
 ब्रह्म-  
 ण्यो ब्रह्मरुद्रमेति मध्यमा-  
 भ्यां नमः -  
 सुदर्शाविन्दुरक्षोभ्य-  
 इत्यनामिकाभ्यां नमः -  
 आ-  
 दित्योज्योतिरादित्यइति क-  
 निष्ठिकाभ्यां नमः -  
 शार्ङ्ग-

मुनि है और छंद उसकी अनुष्टुप  
है और देव भगवान् कृष्ण है ॥ १६ ॥

मू. ओं विष्णुं जिष्णुं महा  
विष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरं ।  
अनेक रूप दैत्यान्तं नमा-  
मि पुरुषोत्तमं ॥ १७ ॥

री. मैं नमस्कार करता हूँ उनको जो जै  
करने वाले महा विष्णु समर्थ विष्णु  
महा ईश्वर हैं अनेक रूप हैं दैत्यों के  
नाश करने वाले हैं और नमस्कार क-  
रता हूँ उस उत्तम पुरुष को ॥ १७ ॥

श्रीवेदव्यास उवाच

ओं अस्य श्रीविष्णोर्द्विसह  
स्रनामस्तीव्रमालामंत्रस्य श्री  
भगवान् वेदव्यास ऋषिरनुष्टु-  
प छंदः श्रीकृष्णः परमात्मा देव-  
ता देवकी नन्दनः सृष्टेति शक्तिः  
आत्मयोनिः स्वयं जात इति वी-  
जं । उद्भवः शोभाणो देव इति प-  
रमो मन्त्रः । शङ्खचक्रकीर्तकी-  
तकीलकं त्रिशामासामगः सा-  
मेतिकवचं । शार्ङ्गधन्वा गदा-  
धर इत्यस्य । ओं विश्वं विष्णुर्व

मैं हूँ और छंद उसकी अनुष्टुप  
है और देव भगवान् कृष्ण है ॥ १६ ॥

मू. ओं विष्णुं जिष्णुं महा  
विष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरं ।  
अनेक रूप दैत्यान्तं नमा-  
मि पुरुषोत्तमं ॥ १७ ॥

री. मैं नमस्कार करता हूँ उनको जो जै  
करने वाले महा विष्णु समर्थ विष्णु  
महा ईश्वर हैं अनेक रूप हैं दैत्यों के  
नाश करने वाले हैं और नमस्कार क-  
रता हूँ उस उत्तम पुरुष को ॥ १७ ॥

श्रीवेदव्यास उवाच  
ओं अस्य श्रीविष्णोर्द्विसह  
स्रनामस्तीव्रमालामंत्रस्य श्री  
भगवान् वेदव्यास ऋषिरनुष्टु-  
प छंदः श्रीकृष्णः परमात्मा देव-  
ता देवकी नन्दनः सृष्टेति शक्तिः  
आत्मयोनिः स्वयं जात इति वी-  
जं । उद्भवः शोभाणो देव इति प-  
रमो मन्त्रः । शङ्खचक्रकीर्तकी-  
तकीलकं त्रिशामासामगः सा-  
मेतिकवचं । शार्ङ्गधन्वा गदा-  
धर इत्यस्य । ओं विश्वं विष्णुर्व

मू. तस्यलोकप्रधानस्य  
जगन्नाथस्यभूपतेः। वि  
ष्मोर्नामसहस्रं मे शृणुष्व  
पभयापहं ॥ १४ ॥

टी. तिस्रभगवान् के वह कैसा  
है कि मुरख है और जगत् का मा  
लिक है ऐसे जो विष्णु हैं उनके  
हज़ार नाम सुनो जो पाप और  
भय के दूर करने वाले हैं ॥ १४ ॥

मू. यानिनामानिगौणा  
निविख्यातानिमहात्म  
नः। ऋषिभिः परिगी  
तानितानिवक्ष्यामिभू  
पतेः॥ १५ ॥ १५ ॥

टी. जैन से नाम जागे हुवे हैं  
और जैन से विख्यात हैं महा  
त्मा और ऋषियों करके गाये  
हुवे हैं वे नाम मैं कहूँगा हे  
गजा सुनो ॥ १५ ॥

मू. ऋषिर्नाम्नांसहस्रस्य  
वेदव्यासोमहामुनिः। ह  
रेनुष्टुपतया देवो भगवा  
न देवकी सुतः ॥ १६ ॥

टी. ऋषिजन हजार नामों के वेदव्यास

اشلوک

تسیر لوک بردھائسہ جگنا تھسہ  
جھو پتے۔ بشنوز نام سترنگ  
شرن پاپ بھیا پتم  
ٹیکا

ایسے بڑے بھگو ان جو جگت کے مالک اور  
گھمبہ ہیں ان کے ہزار نام سنو جو پاپ اور بھ  
کے دور کرنے والے ہیں۔

اشلوک

یان نامان گواران بکھیا مان مہائے  
رکھ بھیر پرکھیا تان بکشیام بھو پتے  
ٹیکا

جو نام آگے ہوئے ہیں اور جو مشہور ہیں اور  
مہاتما۔ اور پریشون کے گائے ہوئے ہیں  
ہر راجہ ان ناموں کو میں کہوں گا۔

اشلوک

رکھ نامانگ ستر شیمہ بندہ سیاسو  
مہائے۔ چنڈ و نشپت تھا دیو  
بھگو ان دیو کی ستہ  
ٹیکا

رکھ ان ہزار ناموں کے بندہ سیاس



नाच्छा है जो भक्ति करके कम-  
ल नेत्र जो भगवान हैं तिनकी  
स्तुति करके मनुष्य सदा पूजा  
करले ॥ १० ॥

मू. परमंयो मह तेजः परमंयो  
मह तपः । परमंयो मह ब्र-  
ह्म परमंयः परायाणां ॥ ११ ॥

टी. उत्तम महा तेज है उत्तम महा  
तप है उत्तम महा ब्रह्म है और  
परमाश्रय है ॥ ११ ॥

मू. पवित्राणां पवित्रं यो मंग-  
लानां च मंगलं । देवतं देव-  
तानां च भूतानां यो व्ययः पि-  
ता ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥ १२ ॥

टी. सब पवित्रों में पवित्र है सब शुभों में  
शुभ रूप है देवताओं के देवत है प्रा-  
णियों के अविनाशी पिता है ॥ १२ ॥

मू. यतः सर्वाणि भूतानि  
भवन्त्यादियुगागमै । य-  
स्मिंश्च प्रलयं यांति पुनरेव  
युगक्षये ॥ १३ ॥

टी. जिस भगवान से प्राणी पैदा  
होते हैं युग के आदि में और जि-  
स भगवान में फिर लय होजाते  
हैं युग के नाश में ॥ १३ ॥

अच्छा है - जो भक्ति करके कमल  
नेत्र करके آدمी हमेशा पूजा करे -

अश्लोक

॥  
परमं यो मह तेजः परमं यो  
मह तपः - परमं यो मह ब्रह्म  
परमं यो मह तपः -

॥  
मिका - अतः मातृ प्रीति मातृ प्रीति - अतः  
मातृ प्रीति प्रीति मातृ प्रीति -

अश्लोक - यो त्रिनागः यो त्रिनागः  
नागः त्रिनागः - यो त्रिनागः  
नागः त्रिनागः - यो त्रिनागः

॥  
सिक्का - सब प्रीति में प्रीति प्रीति प्रीति  
श्रीरूप प्रीति प्रीति प्रीति प्रीति -

अश्लोक

॥  
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमै  
यस्मिंश्च प्रलयं यांति पुनरेव युगक्षये -

॥  
सिक्का - जिस भगवान से प्राणी पैदा होते हैं  
युग के आदि में - और जिस भगवान में फिर लय  
हो जाते हैं युग के नाश में -

री. आदि और अन्त नहीं है  
जिसका और सब जगह व्याप्त  
है और सारे लोकों का महा ई  
श्वर है और लोकों का मालिक  
है उसकी स्तुति नित्य करता  
हूँ। सब दुःखों को प्राणी उलंघन  
कर जाता है ॥ ८ ॥

मू. ब्रह्माय सर्व धर्म-  
जं लोकानां कीर्तिवर्द्ध-  
नं । लोक नाथं महद्भुतं  
सर्वभूतभवोद्भवं ॥ ९ ॥

टी. ब्रह्म के ज्ञाने वालों के पा-  
वन करने वाले हैं सारे धर्म  
के ज्ञाने वाले हैं लोकों की की-  
र्ति वर्द्धान वाले हैं लोकों के मा-  
लिक हैं बड़े हैं सब प्राणियों में  
सब प्राणियों का जन्म करने  
वाले हैं ॥ ९ ॥

मू. अथ मे सर्व धर्माणां  
धर्मोधिकतमो मतः । य-  
ज्ञतया पुण्डरीकाक्षस्तवै-  
रर्षेन्नरः सदा ॥ १० ॥

टी. ऐसा धर्म जो मुझको सर्व ध-  
र्मों में अधिक धर्म और

श्लोक

नमिनं भू आदौ अन्तं चिका और सब जगह व्याप्त  
है और सारे लोकों का महा ईश्वर है और लोकों का मालिक  
है उसकी स्तुति नित्य करता हूँ। सब दुःखों को प्राणी उलंघन  
कर जाता है ॥ ८ ॥

श्लोक

ब्रह्मैव तेन जन्तुः सर्वः । प्राणिनः सार्वभौमिकः ।  
सर्वत्र हि तदात्मकः । सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।  
सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।

श्लोक

ब्रह्मैव तेन जन्तुः सर्वः । प्राणिनः सार्वभौमिकः ।  
सर्वत्र हि तदात्मकः । सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।  
सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।

श्लोक

ब्रह्मैव तेन जन्तुः सर्वः । प्राणिनः सार्वभौमिकः ।  
सर्वत्र हि तदात्मकः । सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।  
सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।

श्लोक

ब्रह्मैव तेन जन्तुः सर्वः । प्राणिनः सार्वभौमिकः ।  
सर्वत्र हि तदात्मकः । सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।  
सर्वं कुरुष्व धर्मं । सर्वं कुरुष्व धर्मं ।

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं  
पुरुषोत्तमं । स्तुवन्नाम  
सहस्रेण पुरुषः सततो-  
त्थितः ॥ ६ ॥

श्री. भोमपितामह कहते हैं ॥

जगत् के प्रभु हैं देवों के  
देव हैं अनन्त हैं पुरुष हैं उत्त-  
म हैं उनकी स्तुति हजार नाम क-  
रके पुरुष मुख को प्राप्त हो जा-  
य ॥ ६ ॥

मू. तमेव चार्चयन्नित्यं भ-  
क्त्या पुरुषमर्चय । ध्यायं-  
स्तुवन्नामसंख्यजमान-  
स्तमेव च ॥ ७ ॥

श्री. उसी ईश्वर का पूजन भक्ति  
करता हुआ नित्य कि वह पुरुष रू-  
प है और अविनाशी है उसी का  
ध्यान करता हुआ उसकी स्तुति  
करता हुआ नित्य उसी के अ-  
र्च करता हुआ ॥ ७ ॥

मू. अनादिनिधनं विशु-  
सर्वलोकमहेश्वरं । लोका-  
ध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदु-  
ःखाति नो भवेत् ॥ ८ ॥

اشلوک

جگت پرچھنگ دیو دیو متناک  
تینک سترچھو متناک - استقون نام  
سہسریں پر کھمہ ستقوت تھستہ -

سیکا

جیکھ تیاہ کہتے ہیں - جگت کے پرچھو ہیں  
دیوتاؤں کے دیوتا ہیں انتہ ہیں اٹم  
پریش ہیں - انکی استت نیرام کی کرنے  
سے پریش سکھ پاتا ہوں -

اشلوک

تمو چا چھن تینک جھکتا پریش  
تینک - دھیا تیاک استقون تھس  
سینک شچ جھا تھست پیوچ -

سیکا

اسی ایشور کا پرچھ اور جھکت کرے کہ وہ پریش  
رہو تیر اور ایشور ہی - اور اسی کا دھیان  
اور اسی کی ستھت نہ کرے اور اسی کے ارتم -

اشلوک

انادہ چھنگ بھنگ سرب لوک  
چھنگ - لوکا دھیا تیاک استقون  
چھنگ - دھیا تیاک استقون تھس -

श्री- वैशंपायन कहते हैं ॥ सके  
शौर पवित्र करने वाले सब धर्मों  
को सुनकर राजा युधिष्ठिर ने शान्त  
नु के बेटे भीष्मजी से फिर पूछा ३

सू- युधिष्ठिर उवाच ॥ कि  
मेकं दैवतं लोके किं वाप्ये  
कंपरायाणाम् । स्तुवंतः कंक  
सर्वतः प्राप्नुयुर्मानवा  
श्शुभम् ॥ ४ ॥

श्री- युधिष्ठिर कहते हैं ॥ एक  
देव लोकों में है जिसके साथ  
य हो जाय जिसकी स्तुति करने से  
मनुष्य शुभ को प्राप्त हो जाय ॥ ४ ॥

सू- को धर्मः सर्व ध-  
र्माणां भवतः परमो म-  
तः । किं जपन्मुच्यते  
जन्तुर्जन्मसंसारवन्ध-  
नात् ॥ ५ ॥

श्री- कौनसा धर्म सारे धर्मों में  
हमको अच्छा मत है जिसको  
जपता हुआ जीव संसार के ब-  
न्धन से छूट जाय ॥ ५ ॥

भीष्म उवाच ॥

श्री- भीष्मजी कहते हैं - अच्छे और  
पवित्र करने वाले सब धर्मों को सुनकर  
राजा युधिष्ठिर ने शान्तनु के बेटे भीष्मजी  
से फिर पूछा -

सू- भीष्म उवाच - के कंक दिवो  
मंगलं के कंक बापि कंक  
प्राप्यन्तं - अस्तु तं कंक  
मरुतं प्राप्यन्तं मानवाश्च  
शुभम्

श्री- भीष्म कहते हैं कि एक दिवस को  
मन में कि जबकि हम सब हैं - और  
जबकि अस्तु करने से मनुष्य का शुभ होता है -

श्लोक

कुदधर्मो नैव दधर्मानाङ्क  
मोक्षो नैव मोक्षो नैव कंक  
मोक्षो नैव मोक्षो नैव कंक

श्री- कौनसा धर्म सारे धर्मों में  
हमको अच्छा मत है जिसको  
जपता हुआ जीव संसार के ब-  
न्धन से छूट जाय ॥ ५ ॥

भीष्म उवाच ॥

# श्रीगणेशायनमः

विष्णुसहस्रनामटीकासहित

मूल ॥ ओं यस्य स्मरणमा-  
त्रेण जन्म संसार बन्धना-  
त् । विमुच्यते नमस्तस्मै वि-  
ष्णवे प्रभविष्णवे ॥ १ ॥

टीका ॥ जिसके स्मरण मात्र करने  
जन्म संसार के बन्धन से छूट जा-  
य जिसके अर्थ नमस्कार है वे वि-  
ष्णु हैं समर्थ विष्णु हैं ॥ १ ॥

मू. नमः स भक्तभूताना-  
मादिभूताय भूभृते । अ-  
नेकरूप रूपाय विष्णवे  
प्रभविष्णवे ॥ २ ॥ २ ॥

टी. नमस्कार है उनको जो सा-  
रे प्राणियों के अधिकारी हैं और  
पृथ्वी के धारण करने वाले हैं अ-  
नेक रूप हैं जिनके - विष्णु हैं स-  
मर्थ विष्णु हैं ॥ २ ॥

मू. वैशंपायन उवाच ॥ सु-  
त्वा धर्मानशेषेण पावना-  
नि च सर्वशः । युधिष्ठिरः शं-  
तनवंपुनरेवाभ्यभाषता ॥ ३ ॥

# श्रीगणेशायनमः

विष्णुसहस्रनाम टीकासहित  
अश्लोक

अथ गणेशाय नमः ।  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।

जैसे अमर माता के भक्त के भक्त  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।

अथ गणेशाय नमः ।  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।

अथ गणेशाय नमः ।  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।  
सर्वत्र भगवतः ।

ह हा हि ही हु हू हे है हो हौ हं हः  
 ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह ह

क्ष क्षा क्षि क्षी क्षु क्षू क्षे क्षै क्षो क्षौ क्षं क्षः  
 क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष क्ष

त्र चा त्रि त्री चु चू चे चै चो चौ चं चः  
 त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र त्र

ज जा जि जी जु जू जे जै जो जौ जं जः  
 ज ज ज ज ज ज ज ज ज ज ज ज

شناخت کے واسطے اٹلے پلے حروف

पहिचान के वास्ते उलटे पुलटे अक्षर  
 अं उ लृ आ ई अ इ ऊ लृ ऐ न्ह ऐ ओ  
 अः क च ट त प य ष ह क्ष त्र ज  
 ख छ ठ थ फ र स ग ज ड द ब  
 ल व य म ढ ध म ड न ण  
 (संयुक्त अक्षर) (چند حروف مرکب)

कव च्छ ज्ञ थ्य द्य फ्फ व्द म्म ष्य झ ल्द ल्ल  
 अ शृ च्य झ ग्य दृ दृ दृ श्ल प्र क्त त्त्य  
 म्म हृ दृ त्त ल्ल ह्य द्य सत् त्वं ग्र वृ ह्म क  
 क्ष षा क ख व ग च त थ्य न्न ण व  
 भ्भ श्श ष्य स्स क्क च्य ज्व ज्य क्त स्व

व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः  
ب با بی بی بی بی بی بی بی بی بی

म मा मि भी मु मू मे मै मो मौ भं भः  
م م م م م م م م م م م م م م م

म मा मि सी मु मू से मै मो मौ मं मः  
م م م م م م م م م م م م م م م

य या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः  
ي ي ي ي ي ي ي ي ي ي ي ي ي ي ي

र रा रि री रु रू रे रै रो रौ रं रः ।  
ر ر ر ر ر ر ر ر ر ر ر ر ر ر ر

ल ला लि ली लु लू ले लै लो लौ लं लः  
ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل ل

व वा वि वी वु वू वे वै वो वौ वं वः  
و و و و و و و و و و و و و و و

श शा शि शी शु शू शे शै शो शौ शं शः  
ش ش ش ش ش ش ش ش ش ش ش ش ش ش ش

ष या यि यी यु यू ये यै यो यौ यं यः  
ष ष ष ष ष ष ष ष ष ष ष ष ष ष

स सा सि सी सु सू से सै सो सौ सं सः  
س س س س س س س س س س س س س س س

ड डा डि डी ड ड डे डै डो डी डंडुः  
 د ڈا ڈی ڈی ڈ ڈ ڈے ڈے ڈو ڈی ڈو ڈو ڈو

ढ दा दि दी ढ ढ ढे ढै दो दी ढं ढः  
 ڊ ڊا ڊی ڊی ڊ ڊ ڊے ڊے ڊو ڊی ڊو ڊو ڊو

ण णा णि णी णु णू णो णै णो णी णंणः  
 ڻ ڻا ڻی ڻی ڻو ڻو ڻو ڻی ڻی ڻو ڻو ڻو

त ता ति ती तु तू ते तै तो तौ तं तः।  
 ت ٽا ٽی ٽی ٽو ٽو ٽے ٽے ٽو ٽو ٽو ٽو

थ था थि थी थु थू थे थै थो थौ थं थः  
 ٿ ٿا ٿی ٿی ٿو ٿو ٿے ٿے ٿو ٿو ٿو ٿو

द दा दि दी दु दू दे दै दो दौ दं दः  
 د ڊا ڊی ڊی ڊو ڊو ڊے ڊے ڊو ڊی ڊو ڊو

ध धा धि धी धु धू धे धै धो धौ धं धः  
 ڊ ڊا ڊی ڊی ڊو ڊو ڊے ڊے ڊو ڊی ڊو ڊو

न ना नि नी नु नू ने नै नो नौ नं नः  
 ن ڻا ڻی ڻی ڻو ڻو ڻے ڻے ڻو ڻی ڻو ڻو

प पा पि पी पु पू पे पै पो पौ पं पः।  
 پ ڀا ڀی ڀی ڀو ڀو ڀے ڀے ڀو ڀی ڀو ڀو

फ फा फि फी फु फू फे फै फो फौ फं फः  
 ف ڦا ڦی ڦی ڦو ڦو ڦے ڦے ڦو ڦی ڦو ڦو



حروف مع اعراسیب

क का कि की कु कु के के को को कं कः

ख खा खि खी खु खु खे खै खो खौ खं खः

ग गा गि गी गु गु गे गै गो गो गं गः ।

घ घा घि घी घु घु घे घै घो घो घं घः ।

च चा चि ची चु चु चे चै चो चौ चं चः

छ छा छि छी छु छु छे छै छो छो छं छः

ज जा जि जी जु जु जे जै जो जौ जं जः

न ना नि नी नु नु ने नै नो नौ नं नः

ट टा टि टी टु टु टे टे टो टौ टं टः ।

ठ ठा ठि ठी ठु ठु ठे ठै ठो ठौ ठं ठः

۲  
 سر کہلاتے ہیں اور باقی ۳۳ اक्षروں کو بجن  
 کہتے ہیں۔ سوروں کے دو स्वरूप ہیں ایک تو پورا اक्षر  
 دوسرا اक्षروں کا نشان جسکو मात्रا کہتے ہیں  
 اور پانچ جو تین اक्षر لکھے ہیں (क्ष) (च) (ज)  
 सो (क) اور (प) मिलने से (क्ष) اور (त र)  
 मिलने से (च) اور (ज ञ) मिलने से (ज) बनता है ॥

واضح ہو کہ دیوناگری حروف دو قسم پر منقسم ہیں سورا اور بجن  
 چنانچہ اوپر والے سولہ حروف سورا کہلاتے ہیں اور نیچے والے  
 تینتیس حروف بجن کہلاتے ہیں سب حروف انچاس ہیں اور  
 آخر کے تین حروف یعنی (क्ष) (च) (ज) مرکبات میں داخل ہیں  
 क्ष च ज  
 یعنی (क) و (श) ملکر (क्ष) ہوتا ہے اور (त) و (प) ملکر (च) اور  
 (ग) و (य) ملکر (ज) ہوتا ہے۔ سورا کی دو شکلیں ہیں ایک تو پورا  
 حرف جیسے (आ) اور دوسرے صرف نشان کا حرف جیسے (॥)  
 جو بجن کے ہر ایک حرف پر لگایا جاتا ہے جسکو मात्रا یعنی اعراب  
 کہتے ہیں۔

# अथ वर्णमाला का वर्णन

شمسکرت کی الف بے فارسی خوانان کے واسطے

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ  
 अय आइ आऊ आय आउ आः ॥

ओ औ अं अः ॥  
 ओ औ अं अः ॥

इनको सोलह १६ स्वर कहते हैं - अक्षरों में से  
 ह्रस्व वृद्धि

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ  
 क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण त थ द ध न  
 ट ठ ड ढ ण त थ द ध न

प फ ब भ म य र ल व श ष  
 प फ ब भ म य र ल व श ष

स ह ण ञ ण ॥  
 स ह ण ञ ण ॥

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०  
 १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

प्रकट हो कि देवनागरी वर्णमाला में ४६ अक्षर हैं उन  
 में दो प्रकार हैं स्वर और व्यंजन-पहिले के १६ अक्षर

## विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात् मार्च सन् १९८३ ई० पर्यन्त जो पुस्तकें बेचने के लिये तय्यार हैं वह इस फ्रेहरिस्त में लिखी हैं और उनका मूल भी बहुत किफायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होंगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छपेरवाने के बहुत-मिस अथवा सालिक के नाम स्वतः भेजकर कीमत का निराधार कर लें ॥

नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब	नाम किताब
आधा इतिहास	महाभारत पर्व	१- आदि पर्व	सती काण्ड
सहासार्त	हवा भी हैं	२- सभा पर्व	१- बाल काण्ड
१- पहिले हिस्सा में	१- आदि पर्व	३- विराट पर्व	२- अयोध्या काण्ड
आदि पर्व सभा पर्व	२- सभा पर्व	४- उद्योग पर्व	३- आराध काण्ड
२- दूसरे हिस्सा में	३- वन पर्व	५- सीख पर्व	४- किष्किन्ध्या काण्ड
विराट पर्व उद्योग	४- विराट पर्व	६- द्रोणा पर्व	५- सुन्दर काण्ड
पर्व भीष्म पर्व द्रो	५- उद्योग पर्व	७- कर्णा पर्व	६- सीता काण्ड
रा पर्व	६- भीष्म पर्व	८- शल्य पर्व	७- उत्तर काण्ड
३- तीसरे हिस्सा में	७- द्रोणा पर्व	९- राधा पर्व	रामायण आख्यायिका
कर्णा पर्व शल्य पर्व	८- कर्णा पर्व	१०- सीता पर्व	रामायण का इतिहास
महा पर्व सौमिक	९- शल्य पर्व वराह	११- स्वर्गा रोहन पर्व	रामायण मानस दीपिका
पर्व योशिक पर्व	पर्व सौमिक पर्व	रामायण राम विलास	रामायण कवितावली
विशोक पर्व स्त्री	सय योशिक वनि	रामायण तुलसीदास	रामायण गीतावली
पर्व शान्ति पर्व में	शोक वस्त्री पर्व	रामायण सटीक मय	सटीक
राज धर्म आदर्श	१०- शान्ति पर्व राज	रामायण सटीक का को	विनय पत्रिका नाम
धर्म जोश धर्म	धर्म जोश धर्म व	आदि	मोहन दास
४- चौथे हिस्सा में	दान धर्म	रामायण तुलसीदास	विनय पत्रिका नाम
शान्ति पर्व दान	११- अश्वमेध आ	सीका सुखदेव कृत	शिव प्रसाद
धर्म अश्वमेध आ	स वासिक मुशल प	रामायण तुलसीदास	शंकर चरित सुधा
अस वासिक पर्व	वर्ष महानस्थान स्व	सीका मुसलानन्द	मुनेश भूषण
व मोशल पर्व व	गां रोहन	रामायण सटीक	विद्या पुराण भाषा
वारा प्रस्थान स्वर्ण	१२ हरिवंश पर्व	सर्गे की मयत स्त्री स्	लिंग पुराण
रोहन पर्व हरिवंश	महाभारत हवल	रामायण तुलसीदास	महोत्तर खण्ड

# بشن مسرنام شیک

بیاسس جی کا بنایا ہوا  
 جسکے نت پائو کرنے سے اور سنتے سے برہم ہوتا آو سب پاپ سو کر ورجم کے چھوٹ جاتے  
 اور کروگتو دان کا پھل اور کت اور بدیا بل پر اکرم تیج سنجے دھوم دھوم دربار تو سکھ  
 کا سنا جس اہل لکھی ستان کا بیان آو گنا سو بھاروپ سب بید پڑھنے کا پھل سب تون  
 کے اشنان کا پھل سب دیوتاؤں کی پوجن کا پھل پر اپت ہوتا ہو  
 یہ سب پھل اشلوک ۱۱۲۴ لغایت ۱۶۳ میں بیاسس جی اور بشن جگوان میں  
 ایسا مول پدارتھ  
 سنساری جیوؤں کے اچکارا اور ادھار کنت کل جن پر لکھی

## ویسا مسرنام سدیک

ویاس جی کا بتایا ہوا  
 جس کے نیت پاد کرنے اور سونے سے بھسم ہتھا دیسب پاپ سہو کروڑ جنم  
 کے چھوٹ جاتے ہیں اور کروڑ گویا دان کا فल اور سکتی اور ویسا بل پر  
 کس جت جی جی ی دھن دھرم دیو شری سرب کاسنا ی شری اچل لکھی سنا  
 ن کال پراسا آرومیتا شوماسرپ سب دے دے پڑنے کا فल سب تیروں کے  
 کلام کا فल سب دے دے کا فल پڑنا کا فल پڑنا کا فل پڑنا کا فل پڑنا کا فل  
 ۱۲۲ سے ۱۶۳ تک میں ویاس جی اور ویسا مسرنام نے کہے ہیں

## سوسا امول پدارتھ

سنساری جیوں کے اچکارا اور اچکار کے نیت سب کال جن پر لکھی

منشی نول کشور کے چاہیہ خانہ میں تمام لکھو پیا  
 سنہ ۱۳۲۲



بہم ب ش ۲۹۴۵

This book was taken from the Library  
on the date last stamped. A fine of  
1 anna will be charged for each day  
the book is kept over time.

--	--	--	--

